शमूएल की पहली पुस्तक

[illegible]

पुस्तक में लेखक स्पष्ट नहीं है। तथापि शमूएल सम्भावित लेखक है और निश्चय ही वह 1 शमू. 1:1-24:22 की जानकारी देता है जो उसकी मृत्यु तक उसके जीवन एवं कार्यों की गाथा है। अति सम्भव है कि भविष्यद्वक्ता शमूएल ने इस पुस्तक का एक भाग लिखा है। 1 शमूएल के अन्य सम्भावित लेखक हैं इतिहासकार/भविष्यद्वक्ता नातान एवं गाद (1 इति. 29:29)।

[illegible]

लगभग 1050 - 722 ई. पू.

यह पुस्तक विभाजित राज्य के बाद लिखी गई है जो दोनों राज्यों, इस्राएल और यहूदिया, के अलग-अलग उल्लेखों से स्पष्ट होता है (1 शमू. 11:8; 17:52; 18:16; 2 शमू. 5:5; 11:11; 12:8; 19:42-43; 24:1-9)।

[illegible]

इसके मूल पाठक विभाजित राज्य, इस्राएल और यहूदिया की प्रजा थी जिन्हें दाऊद के राजवंश के औचित्य एवं उद्देश्य के निमित्त दिव्य दृष्टिकोण की आवश्यकता थी।

[illegible]

1 शमूएल में कनान देश में न्यायियों से लेकर राजाओं के अधीन एक राष्ट्र होने तक का इतिहास है। शमूएल अन्तिम न्यायी हुआ था और वह प्रथम दो राजाओं शाऊल और दाऊद का अभिषेक करता है।

[illegible]

परिवर्तन काल

रूपरेखा

1. शमूएल का जीवन एवं सेवाकाल — 1:1-8:22
2. इस्राएल के प्रथम राजा शाऊल का जीवन — 9:1-12:25
3. शाऊल का असफल राजा होना — 13:1-15:35
4. दाऊद का जीवन — 16:1-20:42
5. इस्राएल के राजा के रूप में दाऊद का अनुभव — 21:1-31:13

[illegible]

1 एप्रैम के पहाड़ी देश के रामातैम सोपीम नगर का निवासी
एल्काना नामक एक पुरुष था, वह एप्रैमी था, और सूफ के पुत्र
तोहू का परपोता, एलीहू का पोता, और यरोहाम का पुत्र था।
2 और *[illegible]**; एक का नाम हन्ना और
दूसरी का पनिन्ना था। पनिन्ना के तो बालक हुए, परन्तु हन्ना के
कोई बालक न हुआ।
3 वह पुरुष प्रतिवर्ष अपने नगर से *[illegible]*† को
दण्डवत् करने और मेलबलि चढ़ाने के लिये शीलो में जाता था;
और वहाँ होप्नी और पीनहास नामक एली के दोनों पुत्र रहते थे,
जो यहोवा के याजक थे।
4 और जब जब एल्काना मेलबलि चढ़ाता था तब-तब वह
अपनी पत्नी पनिन्ना को और उसके सब बेटे-बेटियों को दान दिया
करता था;
5 परन्तु हन्ना को वह दो गुना दान दिया करता था, क्योंकि वह
हन्ना से प्रीति रखता था; तो भी यहोवा ने उसकी कोख बन्द कर
रखी थी।
6 परन्तु उसकी सौत इस कारण से, कि यहोवा ने उसकी कोख
बन्द कर रखी थी, उसे अत्यन्त चिढ़ाकर कुढ़ाती रहती थी।

---

* **1:2** *[illegible]*: उनके विधान में इसकी अनुमति थी (न्या.21:15) हन्ना: अर्थात् सुन्दरता: या आकर्षण:पनिन्ना: अर्थात् मोती: † **1:3** *[illegible]*: यह परमेश्वर का पदनाम है।

7 वह तो प्रतिवर्ष ऐसा ही करता था; और जब हन्ना यहोवा के
भवन को जाती थी तब पनिन्ना उसको चिढ़ाती थी। इसलिए वह
रोती और खाना न खाती थी।

[illegible]

8 इसलिए उसके पति एल्काना ने उससे कहा, "हे हन्ना, तू क्यों
रोती है? और खाना क्यों नहीं खाती? और तेरा मन क्यों उदास
है? क्या तेरे लिये मैं दस बेटों से भी अच्छा नहीं हूँ?"
9 तब शीलो में खाने और पीने के बाद हन्ना उठी। और यहोवा
के मन्दिर के चौखट के एक बाजू के पास एली याजक कुर्सी पर
बैठा हुआ था।
10 वह मन में व्याकुल होकर यहोवा से प्रार्थना करने और
बिलख-बिलख कर रोने लगी।
11 और उसने यह मन्नत मानी, "हे सेनाओं के यहोवा, यदि तू
अपनी दासी के दुःख पर सचमुच दृष्टि करे, और मेरी सुधि ले,
और अपनी दासी को भूल न जाए, और अपनी दासी को पुत्र दे,
तो मैं उसे उसके जीवन भर के लिये यहोवा को अर्पण करूँगी, और
उसके सिर पर छुरा फिरने न पाएगा।" ***([illegible] 1:48)***
12 जब वह यहोवा के सामने ऐसी प्रार्थना कर रही थी, तब एली
उसके मुँह की ओर ताक रहा था।
13 हन्ना मन ही मन कह रही थी; उसके होंठ तो हिलते थे परन्तु
उसका शब्द न सुन पड़ता था; इसलिए एली ने समझा कि वह नशे
में है।
14 तब एली ने उससे कहा, "तू कब तक नशे में रहेगी? अपना
नशा उतार।"
15 हन्ना ने कहा, "नहीं, हे मेरे प्रभु, मैं तो दुःखिया हूँ; मैंने न तो
दाखमधु पिया है और न मदिरा, मैंने अपने मन की बात खोलकर
यहोवा से कही है।

16 अपनी दासी को ओछी स्त्री न जान, जो कुछ मैंने अब तक
कहा है, वह बहुत ही शोकित होने और चिढ़ाई जाने के कारण कहा
है।”
17 एली ने कहा, “कुशल से चली जा; इस्राएल का परमेश्वर
तुझे मन चाहा वर दे।” ***(□□. 5:34)***
18 उसने कहा, “तेरी दासी तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाए।” तब वह
स्त्री चली गई और खाना खाया, और *□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□*
□ □□□‡।
19 वे सवेरे उठ यहोवा को दण्डवत् करके रामाह में अपने घर
लौट गए। और एल्काना अपनी स्त्री हन्ना के पास गया, और
यहोवा ने उसकी सुधि ली;
20 तब हन्ना गर्भवती हुई और समय पर उसके एक पुत्र हुआ,
और उसका नाम *□□□□□□*§ रखा, क्योंकि वह कहने लगी, “मैंने
यहोवा से माँगकर इसे पाया है।”
21 फिर एल्काना अपने पूरे घराने समेत यहोवा के सामने
प्रतिवर्ष की मेलबलि चढ़ाने और अपनी मन्नत पूरी करने के लिये
गया।
22 परन्तु हन्ना अपने पति से यह कहकर घर में रह गई, “जब
बालक का दूध छूट जाएगा तब मैं उसको ले जाऊँगी, कि वह
यहोवा को मुँह दिखाए, और वहाँ सदा बना रहे।”
23 उसके पति एल्काना ने उससे कहा, “जो तुझे भला लगे वही
कर जब तक तू उसका दूध न छुड़ाए तब तक यहीं ठहरी रह;
केवल इतना हो कि यहोवा अपना वचन पूरा करे।” इसलिए वह
स्त्री वहीं घर पर रह गई और अपने पुत्र के दूध छूटने के समय
तक उसको पिलाती रही।

‡ **1:18** *□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □ □□□:* हन्ना ने अपनी चिन्ता परमेश्वर पर डाल दी थी, अत: उसके दिल पर से बोझ हट गया था। अब वह पारिवारिक भोज में आई और सहर्ष भोजन किया। § **1:20** *□□□□□□:* अर्थात् परमेश्वर ने सुन ली: क्योंकि वह प्रार्थना के उत्तर में उत्पन्न हुआ था।

24 जब उसने उसका दूध छुड़ाया तब वह उसको संग ले गई,
और तीन बछड़े, और एपा भर आटा, और कुप्पी भर दाखमधु भी
ले गई, और उस लड़के को शीलो में यहोवा के भवन में पहुँचा
दिया; उस समय वह लड़का ही था।
25 और उन्होंने बछड़ा बलि करके बालक को एली के पास
पहुँचा दिया।
26 तब हन्ना ने कहा, "हे मेरे प्रभु, तेरे जीवन की शपथ, हे मेरे
प्रभु, मैं वही स्त्री हूँ जो तेरे पास यहीं खड़ी होकर यहोवा से प्रार्थना
करती थी।
27 यह वही बालक है जिसके लिये मैंने प्रार्थना की थी; और
यहोवा ने मुझे मुँह माँगा वर दिया है।
28 इसलिए मैं भी उसे यहोवा को अर्पण कर देती हूँ; कि यह
अपने जीवन भर यहोवा ही का बना रहे।" तब उसने वहीं यहोवा
को दण्डवत् किया।

2

[illegible]

1 तब हन्ना ने प्रार्थना करके कहा,
"मेरा मन यहोवा के कारण मगन है;
मेरा सींग यहोवा के कारण ऊँचा हुआ है।
मेरा मुँह मेरे शत्रुओं के विरुद्ध खुल गया,
क्योंकि मैं तेरे किए हुए उद्धार से आनन्दित हूँ। ***([illegible] 1:46,47)***
2 "यहोवा के तुल्य कोई पवित्र नहीं,
क्योंकि तुझको छोड़ और कोई है ही नहीं;
और हमारे परमेश्वर के समान कोई चट्टान नहीं है।
3 फूलकर अहंकार की ओर बातें मत करो,
और अंधेर की बातें तुम्हारे मुँह से न निकलें;

क्योंकि यहोवा ज्ञानी परमेश्वर है,
और कामों को तौलनेवाला है।
4 शूरवीरों के धनुष टूट गए,
और ठोकर खानेवालों की कमर में बल का फेंटा कसा गया।
5 जो पेट भरते थे उन्हें रोटी के लिये मजदूरी करनी पड़ी,
जो भूखे थे वे फिर ऐसे न रहे।
वरन् जो बाँझ थी उसके सात हुए,
और अनेक बालकों की माता घुलती जाती है। ***(□□□□ 1:53)***
6 यहोवा मारता है और जिलाता भी है;
वही अधोलोक में उतारता और उससे निकालता भी है।
7 यहोवा निर्धन करता है और धनी भी बनाता है,
वही नीचा करता और ऊँचा भी करता है। ***(□□□□ 1:52)***
8 वह कंगाल को धूलि में से उठाता;
और दरिद्र को घूरे में से निकाल खड़ा करता है,
ताकि उनको अधिपतियों के संग बैठाए,
और महिमायुक्त सिंहासन के अधिकारी बनाए।
क्योंकि पृथ्वी के खम्भे यहोवा के हैं,
और उसने उन पर जगत को धरा है।
9 "वह अपने भक्तों के पाँवों को सम्भाले रहेगा,
परन्तु दुष्ट अंधियारे में चुपचाप पड़े रहेंगे;
क्योंकि कोई मनुष्य अपने बल के कारण प्रबल न होगा।
10 जो यहोवा से झगड़ते हैं वे चकनाचूर होंगे;
वह उनके विरुद्ध आकाश में गरजेगा।
यहोवा पृथ्वी की छोर तक न्याय करेगा;
और *□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□**,
और अपने अभिषिक्त के सींग को ऊँचा करेगा।" ***(□□□□ 1:69)***

---

* **2:10** *□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□:* यह एक अत्यधिक असाधारण वाक्य है जिसमें परमेश्वर के मसीह के राज्य और महिमा की स्पष्ट एवं विशिष्ट भविष्यद्वाणी है।

11 तब एल्काना रामाह को अपने घर चला गया। और वह
बालक एली याजक के सामने यहोवा की सेवा टहल करने लगा।

[illegible]

12 *[illegible]*†; उन्होंने यहोवा को
न पहचाना।
13 याजकों की रीति लोगों के साथ यह थी, कि जब कोई मनुष्य
मेलबलि चढ़ाता था तब याजक का सेवक माँस पकाने के समय
एक नोकवाला काँटा हाथ में लिये हुए आकर,
14 उसे कड़ाही, या हाण्डी, या हँडे, या तसले के भीतर डालता
था; और जितना माँस काँटे में लग जाता था उतना याजक आप
ले लेता था। ऐसा ही वे शीलो में सारे इस्राएलियों से किया करते
थे जो वहाँ आते थे।
15 और चर्बी जलाने से पहले भी याजक का सेवक आकर
मेलबलि चढ़ानेवाले से कहता था, "भूनने के लिये याजक को माँस
दे; वह तुझ से पका हुआ नहीं, कच्चा ही माँस लेगा।"
16 और जब कोई उससे कहता, "निश्चय चर्बी अभी जलाई
जाएगी, तब जितना तेरा जी चाहे उतना ले लेना," तब वह कहता
था, "नहीं, अभी दे; नहीं तो मैं छीन लूँगा।"
17 इसलिए उन जवानों का पाप यहोवा की दृष्टि में बहुत भारी
हुआ; क्योंकि वे मनुष्य यहोवा की भेंट का तिरस्कार करते थे।

[illegible]

18 परन्तु शमूएल जो बालक था *[illegible]*‡ पहने हुए
यहोवा के सामने सेवा टहल किया करता था।

---

† **2:12** *[illegible]*: मूसा प्रदत्त विधान में स्पष्ट व्यक्त था कि प्रत्येक मेलबलि में पुरोहित का भाग क्या और कितना है और उसमें चर्बी जलाने के भी स्पष्ट निर्देश थे। अत: विधान में निर्विष्ट अंश से अधिक लेना होप्नी और पीनहास के लिये अवज्ञा और निरंकुश व्यवहार था। ‡ **2:18** *[illegible]*: यह पुरोहितों का साधारण वस्त्र था। यहाँ स्पष्ट नहीं कि लेवी एपोद पहनते थे। सम्भवत: यह शमूएल के लिये परमेश्वर के अधीन विशेष समर्पण का चिन्ह था कि वह एपोद पहनता था।

19 और उसकी माता प्रतिवर्ष उसके लिये एक छोटा सा बागा बनाकर जब अपने पति के संग प्रतिवर्ष की मेलबलि चढ़ाने आती थी तब बागे को उसके पास लाया करती थी।
20 एली ने एल्काना और उसकी पत्नी को आशीर्वाद देकर कहा, “यहोवा इस अर्पण किए हुए बालक के बदले जो उसको अर्पण किया गया है तुझको इस पत्नी से वंश दे;” तब वे अपने यहाँ चले गए।
21 यहोवा ने हन्ना की सुधि ली, और वह गर्भवती हुई और उसके तीन बेटे और दो बेटियाँ उत्पन्न हुईं। और बालक शमूएल यहोवा के संग रहता हुआ बढ़ता गया।

[illegible]

22 एली तो अति बूढ़ा हो गया था, और उसने सुना कि उसके पुत्र सारे इस्राएल से कैसा-कैसा व्यवहार करते हैं, वरन् मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सेवा करनेवाली स्त्रियों के संग कुकर्म भी करते हैं।
23 तब उसने उनसे कहा, “तुम ऐसे-ऐसे काम क्यों करते हो? मैं इन सब लोगों से तुम्हारे कुकर्मों की चर्चा सुना करता हूँ।
24 हे मेरे बेटों, ऐसा न करो, क्योंकि जो समाचार मेरे सुनने में आता है वह अच्छा नहीं; तुम तो यहोवा की प्रजा से अपराध कराते हो।
25 यदि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का अपराध करे, तब तो *[illegible]*§ उसका न्याय करेगा; परन्तु यदि कोई मनुष्य यहोवा के विरुद्ध पाप करे, तो उसके लिये कौन विनती करेगा?” तो भी उन्होंने अपने पिता की बात न मानी; क्योंकि यहोवा की इच्छा उन्हें मार डालने की थी।
26 परन्तु शमूएल बालक बढ़ता गया और यहोवा और मनुष्य दोनों उससे प्रसन्न रहते थे। ***([illegible] 2:52)***

---

§ **2:25** *[illegible]:* दूसरी सम्भावना परमेश्वर

27 परमेश्वर का एक जन एली के पास जाकर उससे कहने लगा,
“यहोवा यह कहता है, कि जब तेरे मूलपुरुष का घराना मिस्र में
फ़िरौन के घराने के वश में था, तब क्या मैं उस पर निश्चय प्रगट
न हुआ था?
28 और क्या मैंने उसे इस्राएल के सब गोत्रों में से इसलिए चुन
नहीं लिया था, कि मेरा याजक होकर मेरी वेदी के ऊपर चढ़ावे
चढ़ाए, और धूप जलाए, और मेरे सामने एपोद पहना करे? और
क्या मैंने तेरे मूलपुरुष के घराने को इस्राएलियों के सारे हव्य न
दिए थे?
29 इसलिए मेरे मेलबलि और अन्नबलि को जिनको मैंने अपने
धाम में चढ़ाने की आज्ञा दी है, उन्हें तुम लोग क्यों पाँव तले रौंदते
हो? और तू क्यों अपने पुत्रों का मुझसे अधिक आदर करता है,
कि तुम लोग मेरी इस्राएली प्रजा की अच्छी से अच्छी भेंट खा
खाके मोटे हो जाओ?
30 इसलिए इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, कि
मैंने कहा तो था, कि तेरा घराना और तेरे मूलपुरुष का घराना मेरे
सामने सदैव चला करेगा; परन्तु अब यहोवा की वाणी यह है, कि
यह बात मुझसे दूर हो; क्योंकि जो मेरा आदर करें मैं उनका आदर
करूँगा, और जो मुझे तुच्छ जानें वे छोटे समझे जाएँगे।
31 सुन, वे दिन आते हैं, कि मैं तेरा भुजबल और तेरे मूलपुरुष
के घराने का भुजबल ऐसा तोड़ डालूँगा, कि तेरे घराने में कोई बूढ़ा
होने न पाएगा।
32 इस्राएल का कितना ही कल्याण क्यों न हो, तो भी तुझे मेरे
धाम का दुःख देख पड़ेगा, और तेरे घराने में कोई कभी बूढ़ा न होने
पाएगा।
33 मैं तेरे कुल के सब किसी से तो अपनी वेदी की सेवा न
छीनूँगा, परन्तु तो भी तेरी आँखें देखती रह जाएँगी, और तेरा
मन शोकित होगा, और तेरे घर की बढ़ती सब अपनी पूरी जवानी

ही में मर मिटेंगे।
34 और मेरी इस बात का चिन्ह वह विपत्ति होगी जो होप्नी
और पीनहास नामक तेरे दोनों पुत्रों पर पड़ेगी; अर्थात् वे दोनों के
दोनों एक ही दिन मर जाएँगे।
35 और मैं अपने लिये एक विश्वासयोग्य याजक ठहराऊँगा,
जो मेरे हृदय और मन की इच्छा के अनुसार किया करेगा, और मैं
उसका घर बसाऊँगा और स्थिर करूँगा, और वह मेरे अभिषिक्त
के आगे-आगे सब दिन चला फिरा करेगा।
36 और ऐसा होगा कि जो कोई तेरे घराने में बचा रहेगा वह
उसी के पास जाकर एक छोटे से टुकड़े चाँदी के या एक रोटी के
लिये दण्डवत् करके कहेगा, याजक के किसी काम में मुझे लगा,
जिससे मुझे एक टुकड़ा रोटी मिले।"

3

[illegible]

1 वह बालक शमूएल एली के सामने यहोवा की सेवा टहल
करता था। उन दिनों में यहोवा का वचन दुर्लभ था; और दर्शन
कम मिलता था।
2 और उस समय ऐसा हुआ कि (एली की आँखें तो धुँधली होने
लगी थीं और उसे न सूझ पड़ता था) जब वह अपने स्थान में लेटा
हुआ था,
3 और परमेश्वर का दीपक अब तक बुझा नहीं था, और शमूएल
यहोवा के मन्दिर में जहाँ परमेश्वर का सन्दूक था, लेटा था;
4 तब यहोवा ने शमूएल को पुकारा; और उसने कहा, "क्या
आज्ञा!"
5 तब उसने एली के पास दौड़कर कहा, "क्या आज्ञा, तूने तो
मुझे पुकारा है।" वह बोला, "मैंने नहीं पुकारा; फिर जा लेटा रह।"
तो वह जाकर लेट गया।

6 तब यहोवा ने फिर पुकारके कहा, “हे शमूएल!” शमूएल
उठकर एली के पास गया, और कहा, “क्या आज्ञा, तूने तो मुझे
पुकारा है।” उसने कहा, “हे मेरे बेटे, मैंने नहीं पुकारा; फिर जा
लेटा रह।”
7 उस समय तक तो शमूएल यहोवा को नहीं पहचानता था,
और न यहोवा का वचन ही उस पर प्रगट हुआ था।
8 फिर तीसरी बार यहोवा ने शमूएल को पुकारा। और वह
उठकर एली के पास गया, और कहा, “क्या आज्ञा, तूने तो मुझे
पुकारा है।” तब एली ने समझ लिया कि इस बालक को यहोवा
ने पुकारा है।
9 इसलिए एली ने शमूएल से कहा, “जा लेटा रह; और यदि
वह तुझे फिर पुकारे, तो तू कहना, ‘हे यहोवा, कह, क्योंकि तेरा
दास सुन रहा है।’ ” तब शमूएल अपने स्थान पर जाकर लेट गया।
10 *[illegible]*[*], और पहले के समान पुकारा,
“शमूएल! शमूएल!” शमूएल ने कहा, “कह, क्योंकि तेरा दास
सुन रहा है।”
11 यहोवा ने शमूएल से कहा, “सुन, मैं इस्राएल में एक ऐसा
काम करने पर हूँ, जिससे सब सुननेवालों पर बड़ा सन्नाटा छा
जाएगा।
12 उस दिन मैं एली के विरुद्ध वह सब कुछ पूरा करूँगा जो
मैंने उसके घराने के विषय में कहा, उसे आरम्भ से अन्त तक पूरा
करूँगा।
13 क्योंकि मैं तो उसको यह कहकर जता चुका हूँ, कि मैं उस
अधर्म का दण्ड जिसे वह जानता है सदा के लिये उसके घर का
न्याय करूँगा, क्योंकि उसके पुत्र आप श्रापित हुए हैं, और उसने
उन्हें नहीं रोका।

* **3:10** *[illegible]*: व्यक्तिगत उपस्थिति मात्र वाणी या शमूएल की कल्पना नहीं थी। यह स्पष्ट व्यक्त है।

14 इस कारण मैंने एली के घराने के विषय यह शपथ खाई,
कि *[illegible]*[†], और न अन्नबलि से।”
15 और शमूएल भोर तक लेटा रहा; तब उसने यहोवा के भवन
के किवाड़ों को खोला। और शमूएल एली को उस दर्शन की बातें
बताने से डरा।
16 तब एली ने शमूएल को पुकारकर कहा, “हे मेरे बेटे,
शमूएल।” वह बोला, “क्या आज्ञा।”
17 तब उसने पूछा, “वह कौन सी बात है जो यहोवा ने तुझ से
कही है? उसे मुझसे न छिपा। जो कुछ उसने तुझ से कहा हो यदि
तू उसमें से कुछ भी मुझसे छिपाए, तो परमेश्वर तुझ से वैसा ही
वरन् उससे भी अधिक करे।”
18 तब शमूएल ने उसको रत्ती-रत्ती बातें कह सुनाईं, और कुछ
भी न छिपा रखा। वह बोला, “वह तो यहोवा है; जो कुछ वह
भला जाने वही करे।”
19 और शमूएल बड़ा होता गया, और यहोवा उसके संग रहा,
और उसने शमूएल की कोई भी बात निष्फल होने नहीं दी।
20 और दान से बेर्शेबा तक के रहनेवाले सारे इस्राएलियों ने
जान लिया कि शमूएल यहोवा का नबी होने के लिये नियुक्त
किया गया है। ***([illegible]. 13:20)***
21 और यहोवा ने शीलो में फिर दर्शन दिया, क्योंकि यहोवा
ने अपने आपको शीलो में शमूएल पर अपने वचन के द्वारा प्रगट
किया।

4

[illegible]

---

† **3:14** *[illegible] ....* *[illegible]:* एली के पुत्रों का पाप से छुटकारा विधान की बलियों से नहीं हो सकता है।

1 और शमूएल का वचन सारे इस्राएल के पास पहुँचा। और
इस्राएली पलिश्तियों से युद्ध करने को निकले; और उन्होंने तो
एबेनेजेर के आस-पास छावनी डाली, और पलिश्तियों ने अपेक
में छावनी डाली।
2 तब पलिश्तियों ने इस्राएल के विरुद्ध पाँति बाँधी, और जब
घमासान युद्ध होने लगा तब इस्राएली पलिश्तियों से हार गए,
और उन्होंने कोई चार हजार इस्राएली सेना के पुरुषों को मैदान
में ही मार डाला।
3 जब वे लोग छावनी में लौट आए, तब इस्राएल के वृद्ध लोग
कहने लगे, "यहोवा ने आज हमें पलिश्तियों से क्यों हरवा दिया
है? *[illegible]*
*[illegible]**, कि वह हमारे बीच में आकर हमें शत्रुओं के हाथ से
बचाए।"
4 तब उन लोगों ने शीलो में भेजकर वहाँ से करूबों के ऊपर
विराजनेवाले सेनाओं के यहोवा की वाचा का सन्दूक मँगवा
लिया; और परमेश्वर की वाचा के सन्दूक के साथ एली के दोनों
पुत्र, होप्नी और पीनहास भी वहाँ थे।
5 जब यहोवा की वाचा का सन्दूक छावनी में पहुँचा, तब सारे
इस्राएली इतने बल से ललकार उठे, कि भूमि गूँज उठी।
6 इस ललकार का शब्द सुनकर पलिश्तियों ने पूछा,
"*[illegible]*† की छावनी में ऐसी बड़ी ललकार का क्या कारण
है?" तब उन्होंने जान लिया, कि यहोवा का सन्दूक छावनी में
आया है।
7 तब पलिश्ती डरकर कहने लगे, "उस छावनी में परमेश्वर आ
गया है।" फिर उन्होंने कहा, "हाय! हम पर ऐसी बात पहले नहीं
हुई थी।

* **4:3** *[illegible]*: उनके विचार में वाचा के सन्दूक के कारण परमेश्वर को उन्हें विजय देना ही होगा। † **4:6** *[illegible]*: विदेशी जातियाँ इस्राएल को इसी नाम से संबोधित करती थीं।

8 हाय! ऐसे महाप्रतापी देवताओं के हाथ से हमको कौन
बचाएगा? ये तो वे ही देवता हैं जिन्होंने मिस्रियों पर जंगल में
सब प्रकार की विपत्तियाँ डाली थीं।
9 हे पलिश्तियों, तुम हियाव बाँधो, और पुरुषार्थ जगाओ, कहीं
ऐसा न हो कि जैसे इब्री तुम्हारे अधीन हो गए वैसे तुम भी उनके
अधीन हो जाओ; पुरुषार्थ करके संग्राम करो।”
10 तब पलिश्ती लड़ाई के मैदान में टूट पड़े, और इस्राएली
हारकर अपने-अपने डेरे को भागने लगे; और ऐसा अत्यन्त संहार
हुआ, कि तीस हजार इस्राएली पैदल खेत आए।
11 और परमेश्वर का सन्दूक छीन लिया गया; और एली के
दोनों पुत्र, होप्नी और पीनहास, भी मारे गए।

[illegible]

12 तब उसी दिन एक बिन्यामीनी मनुष्य सेना में से दौड़कर
अपने वस्त्र फाड़े और सिर पर मिट्टी डाले हुए शीलो पहुँचा।
13 [illegible]‡ जब पहुँचा उस समय एली, जिसका मन परमेश्वर के
सन्दूक की चिन्ता से थरथरा रहा था, वह मार्ग के किनारे कुर्सी
पर बैठा बाट जोह रहा था। और जैसे ही उस मनुष्य ने नगर में
पहुँचकर वह समाचार दिया वैसे ही सारा नगर चिल्ला उठा।
14 चिल्लाने का शब्द सुनकर एली ने पूछा, “ऐसे हुल्लड़ और
हाहाकार मचने का क्या कारण है?” और उस मनुष्य ने झट जाकर
एली को पूरा हाल सुनाया।
15 एली तो अठानवे वर्ष का था, और उसकी आँखें धुंधली पड़
गई थीं, और उसे कुछ सूझता न था।
16 उस मनुष्य ने एली से कहा, “मैं वही हूँ जो सेना में से आया
हूँ; और मैं सेना से आज ही भागकर आया हूँ।” वह बोला, “हे मेरे
बेटे, क्या समाचार है?”

‡ **4:13** [illegible]: अर्थात् यहोवा

17 उस समाचार देनेवाले ने उत्तर दिया, “इस्राएली पलिश्तियों
के सामने से भाग गए हैं, और लोगों का बड़ा भयानक संहार भी
हुआ है, और तेरे दोनों पुत्र होप्नी और पीनहास भी मारे गए, और
परमेश्वर का सन्दूक भी छीन लिया गया है।”
18 जैसे ही उसने परमेश्वर के सन्दूक का नाम लिया वैसे ही
एली फाटक के पास कुर्सी पर से पछाड़ खाकर गिर पड़ा; और
बूढ़ा और भारी होने के कारण उसकी गर्दन टूट गई, और वह मर
गया। उसने तो इस्राएलियों का न्याय चालीस वर्ष तक किया था।

□□□□□□□

19 उसकी बहू पीनहास की स्त्री गर्भवती थी, और उसका समय
समीप था। और जब उसने परमेश्वर के सन्दूक के छीन लिए जाने,
और अपने ससुर और पति के मरने का समाचार सुना, तब उसको
जच्चा का दर्द उठा, और वह दुहर गई, और उसके एक पुत्र उत्पन्न
हुआ।
20 उसके मरते-मरते उन स्त्रियों ने जो उसके आस-पास खड़ी
थीं उससे कहा, “मत डर, क्योंकि तेरे पुत्र उत्पन्न हुआ है।” परन्तु
उसने कुछ उत्तर न दिया, और न कुछ ध्यान दिया।
21 और परमेश्वर के सन्दूक के छीन लिए जाने और अपने ससुर
और पति के कारण उसने यह कहकर उस बालक का नाम ईकाबोद
रखा, “इस्राएल में से महिमा उठ गई!”
22 फिर उसने कहा, “इस्राएल में से महिमा उठ गई है, क्योंकि
परमेश्वर का सन्दूक छीन लिया गया है।”

5

□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□

1 पलिश्तियों ने परमेश्वर का सन्दूक एबेनेजेर से उठाकर
अश्दोद में पहुँचा दिया;

2 फिर *[illegible]*[*]।
3 दूसरे दिन अश्दोदियों ने तड़के उठकर क्या देखा, कि दागोन
यहोवा के सन्दूक के सामने औंधे मुँह भूमि पर गिरा पड़ा है। तब
उन्होंने दागोन को उठाकर उसी के स्थान पर फिर खड़ा किया।
4 फिर अगले दिन जब वे तड़के उठे, तब क्या देखा, कि दागोन
यहोवा के सन्दूक के सामने औंधे मुँह भूमि पर गिरा पड़ा है; और
दागोन का सिर और दोनों हथेलियाँ डेवढ़ी पर कटी हुई पड़ी हैं;
इस प्रकार दागोन का केवल धड़ समूचा रह गया।
5 इस कारण आज के दिन तक भी दागोन के पुजारी और जितने
दागोन के मन्दिर में जाते हैं, वे अश्दोद में दागोन की डेवढ़ी पर
पाँव नहीं रखते।
6 तब यहोवा का हाथ अश्दोदियों के ऊपर भारी पड़ा, और वह
उन्हें नाश करने लगा; और उसने अश्दोद और उसके आस-पास
के लोगों के गिलटियाँ निकालीं।
7 यह हाल देखकर अश्दोद के लोगों ने कहा, "इस्राएल के
देवता का सन्दूक हमारे मध्य रहने नहीं पाएगा; क्योंकि उसका
हाथ हम पर और हमारे देवता दागोन पर कठोरता के साथ पड़ा
है।"
8 तब उन्होंने पलिश्तियों के सब सरदारों को बुलवा भेजा, और
उनसे पूछा, "हम *[illegible]*[†]?" वे बोले, "इस्राएल के देवता का सन्दूक घुमाकर
गत नगर में पहुँचाया जाए।" अत: उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर
के सन्दूक को घुमाकर गत में पहुँचा दिया।

---

[*] **5:2** *[illegible] .... [illegible]:* कि पलिश्तियों के देवताओं द्वारा इस्राएल के परमेश्वर पर विजय को उजागर करें। [†] **5:8** *[illegible]:* अन्यजाति के प्रचलित अंधविश्वास के कारण उन्होंने कल्पना की कि अश्दोद में उनके विरुद्ध स्थानीय बुराई है। परिणामस्वरूप सम्पूर्ण पलिश्ती समुदाय आपदाग्रस्त हो गया।

9 जब वे उसको घुमाकर वहाँ पहुँचे, तो यूँ हुआ कि यहोवा का
हाथ उस नगर के विरुद्ध ऐसा उठा कि उसमें अत्यन्त बड़ी हलचल
मच गई; और उसने छोटे से बड़े तक उस नगर के सब लोगों को
मारा, और उनके गिलटियाँ निकलने लगीं।
10 तब उन्होंने परमेश्वर का सन्दूक एक्रोन को भेजा और जैसे
ही परमेश्वर का सन्दूक एक्रोन में पहुँचा वैसे ही एक्रोनी यह
कहकर चिल्लाने लगे, "इस्राएल के देवता का सन्दूक घुमाकर
हमारे पास इसलिए पहुँचाया गया है, कि हम और हमारे लोगों
को मरवा डालें।"
11 तब उन्होंने पलिश्तियों के सब सरदारों को इकट्ठा किया,
और उनसे कहा, "इस्राएल के देवता के सन्दूक को निकाल दो,
कि वह अपने स्थान पर लौट जाए, और हमको और हमारे लोगों
को मार डालने न पाए।" उस समस्त नगर में तो मृत्यु के भय की
हलचल मच रही थी, और परमेश्वर का हाथ वहाँ बहुत भारी पड़ा
था।
12 और जो मनुष्य न मरे वे भी गिलटियों के मारे पड़े रहे; और
नगर की चिल्लाहट आकाश तक पहुँची।

6

[illegible]

1 यहोवा का सन्दूक पलिश्तियों के देश में सात महीने तक रहा।
2 तब पलिश्तियों ने *[illegible]*[*] को
बुलाकर पूछा, "यहोवा के सन्दूक से हम क्या करें? हमें बताओ
कि क्या प्रायश्चित देकर हम उसे उसके स्थान पर भेजें?"
3 वे बोले, "यदि तुम इस्राएल के देवता का सन्दूक वहाँ भेजो,
तो उसे वैसे ही न भेजना; उसकी हानि भरने के लिये अवश्य ही

---

[*] **6:2** *[illegible]*: यहाँ याजक: शब्द वही है जो इस्राएल सच्चे परमेश्वर के अपने पुरोहितों के लिये काम में लेता था और भावी कहनेवालों के लिये जो शब्द काम में लिया गया है वह मूर्तिपूजकों या अंधविश्वासियों के भावी कहनेवालों के लिये सर्वत्र काम में लिया जाता था।

दोषबलि देना। तब तुम चंगे हो जाओगे, और तुम जान लोगे कि
उसका हाथ तुम पर से क्यों नहीं उठाया गया।”
4 उन्होंने पूछा, “हम उसकी हानि भरने के लिये कौन सा
दोषबलि दें?” वे बोले, “पलिश्ती सरदारों की गिनती के अनुसार
सोने की पाँच गिलटियाँ, और सोने के पाँच चूहे; क्योंकि तुम सब
और तुम्हारे सरदार दोनों एक ही रोग से ग्रसित हो।
5 तो तुम अपनी गिलटियों और अपने देश के नष्ट करनेवाले
चूहों की भी मूरतें बनाकर इस्राएल के देवता की महिमा मानो;
सम्भव है वह अपना हाथ तुम पर से और तुम्हारे देवताओं और
देश पर से उठा ले।
6 तुम अपने मन क्यों ऐसे हठीले करते हो जैसे मिस्रियों और
फ़िरौन ने अपने मन हठीले कर दिए थे? जब उसने उनके मध्य
में अचम्भित काम किए, तब क्या उन्होंने उन लोगों को जाने न
दिया, और क्या वे चले न गए?
7 इसलिए अब तुम एक नई गाड़ी बनाओ, और ऐसी दो दुधार
गायें लो जो जूए तले न आई हों, और उन गायों को उस गाड़ी में
जोतकर उनके बच्चों को उनके पास से लेकर घर को लौटा दो।
8 तब यहोवा का सन्दूक लेकर उस गाड़ी पर रख दो, और सोने
की जो वस्तुएँ तुम उसकी हानि भरने के लिये दोषबलि की रीति
से दोगे उन्हें दूसरे सन्दूक में रख के उसके पास रख दो। फिर उसे
रवाना कर दो कि चली जाए।
9 और देखते रहना; यदि वह अपने देश के मार्ग से होकर
बेतशेमेश को चले, तो जानो कि हमारी यह बड़ी हानि उसी की
ओर से हुई और यदि नहीं, तो हमको निश्चय होगा कि यह मार
हम पर उसकी ओर से नहीं, परन्तु संयोग ही से हुई।”

10 उन मनुष्यों ने वैसा ही किया; अर्थात् दो दुधार गायें लेकर
उस गाड़ी में जोतीं, और उनके बच्चों को घर में बन्द कर दिया।
11 और यहोवा का सन्दूक, और दूसरा सन्दूक, और सोने के

चूहों और अपनी गिलटियों की मूरतों को गाड़ी पर रख दिया।
12 तब गायों ने बेतशेमेश का सीधा मार्ग लिया; वे सड़क ही
सड़क रम्भाती हुई चली गईं, और न दाहिने मुड़ीं और न बायें;
और पलिश्तियों के सरदार उनके पीछे-पीछे बेतशेमेश की सीमा
तक गए।
13 और बेतशेमेश के लोग तराई में गेहूँ काट रहे थे; और
जब उन्होंने आँखें उठाकर सन्दूक को देखा, तब उसके देखने से
आनन्दित हुए।
14 गाड़ी यहोशू नामक एक बेतशेमेशी के खेत में जाकर वहाँ
ठहर गई, जहाँ *[illegible]*[†]। तब उन्होंने गाड़ी की
लकड़ी को चीरा और गायों को होमबलि करके यहोवा के लिये
चढ़ाया।
15 और लेवियों ने यहोवा के सन्दूक को उस सन्दूक के समेत
जो साथ था, जिसमें सोने की वस्तुएँ थी, उतार के उस बड़े पत्थर
पर रख दिया; और बेतशेमेश के लोगों ने उसी दिन यहोवा के लिये
होमबलि और मेलबलि चढ़ाए।
16 यह देखकर पलिश्तियों के पाँचों सरदार उसी दिन एक्रोन
को लौट गए।
17 सोने की गिलटियाँ जो पलिश्तियों ने यहोवा की हानि भरने
के लिये दोषबलि करके दे दी थीं उनमें से एक तो अश्दोद की ओर
से, एक गाज़ा, एक अश्कलोन, एक गत, और एक एक्रोन की ओर
से दी गई थी।
18 और वह सोने के चूहे, क्या शहरपनाह वाले नगर, क्या बिना
शहरपनाह के गाँव, वरन् जिस बड़े पत्थर पर यहोवा का सन्दूक
रखा गया था वहाँ पलिश्तियों के पाँचों सरदारों के अधिकार तक

[†] **6:14** *[illegible]*: यह बड़ा पत्थर उस समय सम्भवत: वेदी के रूप में काम में लिया गया और बैल गाड़ी का वहाँ आकर स्वयं ही रुक जाना बेतशेमेश के निवासियों के लिये सन्देश या कि वे उस पत्थर पर इस्राएल के प्रभु परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाए।

की सब बस्तियों की गिनती के अनुसार दिए गए। वह पत्थर आज
तक बेतशेमेशी यहोशू के खेत में है।
19 फिर इस कारण से कि बेतशेमेश के लोगों ने यहोवा के सन्दूक
के भीतर झाँका था उसने उनमें से सत्तर मनुष्य, और फिर पचास
हजार मनुष्य मार डाले; और वहाँ के लोगों ने इसलिए विलाप
किया कि यहोवा ने लोगों का बड़ा ही संहार किया था।

[illegible]

20 तब बेतशेमेश के लोग कहने लगे, “इस पवित्र परमेश्वर
यहोवा के सामने कौन खड़ा रह सकता है? और वह हमारे पास
से किसके पास चला जाए?”
21 तब उन्होंने किर्यत्यारीम के निवासियों के पास यह कहने
को दूत भेजे, “पलिश्तियों ने यहोवा का सन्दूक लौटा दिया है;
इसलिए तुम आकर उसे अपने यहाँ ले जाओ।”

7

1 तब किर्यत्यारीम के लोगों ने जाकर यहोवा के सन्दूक को
उठाया, और अबीनादाब के घर में जो टीले पर बना था रखा,
और यहोवा के सन्दूक की रक्षा करने के लिये अबीनादाब के पुत्र
एलीआजर को पवित्र किया।

[illegible]

2 किर्यत्यारीम में सन्दूक को रखे हुए बहुत दिन हुए, अर्थात्
बीस वर्ष बीत गए, और इस्राएल का सारा घराना विलाप करता
हुआ यहोवा के पीछे चलने लगा।
3 तब शमूएल ने इस्राएल के सारे घराने से कहा, “यदि तुम
अपने पूर्ण मन से यहोवा की ओर फिरे हो, तो पराए देवताओं
और अश्तोरेत देवियों को अपने बीच में से दूर करो, और यहोवा
की ओर अपना मन लगाकर केवल उसी की उपासना करो, तब
वह तुम्हें पलिश्तियों के हाथ से छुड़ाएगा।”

4 तब इस्राएलियों ने बाल देवताओं और अश्तोरेत देवियों को
दूर किया, और केवल यहोवा ही की उपासना करने लगे।
5 फिर शमूएल ने कहा, “सब इस्राएलियों को मिस्पा में इकट्ठा
करो, और मैं तुम्हारे लिये यहोवा से प्रार्थना करूँगा।”
6 तब वे मिस्पा में इकट्ठे हुए, और [illegible]
[illegible]*, और उस दिन उपवास किया, और
वहाँ कहने लगे, “हमने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।” और
शमूएल ने मिस्पा में इस्राएलियों का न्याय किया।
7 जब पलिश्तियों ने सुना कि इस्राएली मिस्पा में इकट्ठे हुए
हैं, तब उनके सरदारों ने इस्राएलियों पर चढ़ाई की। यह सुनकर
इस्राएली पलिश्तियों से भयभीत हुए।
8 और इस्राएलियों ने शमूएल से कहा, “हमारे लिये हमारे
परमेश्वर यहोवा की दुहाई देना न छोड़, जिससे वह हमको
पलिश्तियों के हाथ से बचाए।”
9 तब शमूएल ने एक दूध पीता मेम्ना ले सर्वांग होमबलि करके
यहोवा को चढ़ाया; और शमूएल ने इस्राएलियों के लिये यहोवा
की दुहाई दी, और [illegible]†।
10 और जिस समय शमूएल होमबलि को चढ़ा रहा था उस
समय पलिश्ती इस्राएलियों के संग युद्ध करने के लिये निकट आ
गए, तब उसी दिन यहोवा ने पलिश्तियों के ऊपर बादल को बड़े
कड़क के साथ गरजाकर उन्हें घबरा दिया; और वे इस्राएलियों से
हार गए।
11 तब इस्राएली पुरुषों ने मिस्पा से निकलकर पलिश्तियों को
खदेड़ा, और उन्हें बेतकर के नीचे तक मारते चले गए।

* **7:6** [illegible]: पानी उण्डेलना था या वह एक प्रतीकात्मक कृत्य था जो उनके विनाश और असदाय अवस्था को दर्शाता था।

† **7:9** [illegible]: याचना की गई मुक्ति मात्र देना ही सुनना नहीं था परन्तु बादल का बड़ी कड़क के साथ गरजना परमेश्वर की वाणी या जैसी मूसा को उत्तर देने में परमेश्वर गरजा था।

12 तब शमूएल ने एक पत्थर लेकर मिस्पा और शेन के बीच
में खड़ा किया, और यह कहकर उसका नाम एबेनेजेर रखा, “यहाँ
तक यहोवा ने हमारी सहायता की है।”
13 तब पलिश्ती दब गए, और इस्राएलियों के देश में फिर न
आए, और शमूएल के जीवन भर यहोवा का हाथ पलिश्तियों के
विरुद्ध बना रहा।
14 और एक्रोन और गत तक जितने नगर पलिश्तियों ने
इस्राएलियों के हाथ से छीन लिए थे, वे फिर इस्राएलियों के वश
में आ गए; और उनका देश भी इस्राएलियों ने पलिश्तियों के हाथ
से छुड़ाया। और इस्राएलियों और एमोरियों के बीच भी संधि हो
गई।
15 और शमूएल जीवन भर इस्राएलियों का न्याय करता रहा।
16 वह प्रतिवर्ष बेतेल और गिलगाल और मिस्पा में घूम-घूमकर
उन सब स्थानों में इस्राएलियों का न्याय करता था।
17 तब वह रामाह में जहाँ उसका घर था लौट आया, और वहाँ
भी इस्राएलियों का न्याय करता था, और वहाँ उसने यहोवा के
लिये एक वेदी बनाई।

8

[illegible]

1 जब शमूएल बूढ़ा हुआ, तब उसने अपने पुत्रों को इस्राएलियों
पर न्यायी ठहराया।
2 उसके जेठे पुत्र का नाम योएल, और दूसरे का नाम अबिय्याह
था; ये बेर्शेबा में न्याय करते थे।
3 परन्तु उसके पुत्र उसकी राह पर न चले, अर्थात् लालच में
आकर घूस लेते और न्याय बिगाड़ते थे।
4 तब सब इस्राएली वृद्ध लोग इकट्ठे होकर रामाह में शमूएल
के पास जाकर

5 उससे कहने लगे, “सुन, तू तो अब बूढ़ा हो गया, और तेरे पुत्र
तेरी राह पर नहीं चलते; अब हम पर न्याय करने के लिये सब
जातियों की रीति के अनुसार हमारे लिये एक राजा नियुक्त कर
दे।” (*□□□□□□□. 13:21)*
6 परन्तु जो बात उन्होंने कही, ‘हम पर न्याय करने के लिये
हमारे ऊपर राजा नियुक्त कर दे,’ यह बात शमूएल को बुरी लगी।
और शमूएल ने यहोवा से प्रार्थना की।
7 और यहोवा ने शमूएल से कहा, “वे लोग जो कुछ तुझ से
कहें उसे मान ले; क्योंकि उन्होंने *□□□□□□ □□□□□** परन्तु मुझी
को निकम्मा जाना है, कि मैं उनका राजा न रहूँ।
8 जैसे-जैसे काम वे उस दिन से, जब से मैं उन्हें मिस्र से निकाल
लाया, आज के दिन तक करते आए हैं, कि मुझ को त्याग कर
पराए, देवताओं की उपासना करते आए हैं, वैसे ही वे तुझ से भी
करते हैं।
9 इसलिए अब तू उनकी बात मान; तो भी तू गम्भीरता से
उनको भली भाँति समझा दे, और उनको बता भी दे कि जो राजा
उन पर राज्य करेगा उसका व्यवहार किस प्रकार होगा।”
10 शमूएल ने उन लोगों को जो उससे राजा चाहते थे यहोवा
की सब बातें कह सुनाईं।
11 उसने कहा, “जो राजा तुम पर राज्य करेगा उसकी यह चाल
होगी, अर्थात् वह तुम्हारे पुत्रों को लेकर अपने रथों और घोड़ों
के काम पर नौकर रखेगा, और वे उसके रथों के आगे-आगे दौड़ा
करेंगे;
12 फिर वह उनको हजार-हजार और पचास-पचास के ऊपर
प्रधान बनाएगा, और कितनों से वह अपने हल जुतवाएगा, और
अपने खेत कटवाएगा, और अपने लिये युद्ध के हथियार और रथों
के साज बनवाएगा।

---

* **8:7** *□□□□□□ □□□□□:* परमेश्वर का उत्तर (1 शमू.8:6) दर्शाता है कि शमूएल का दिल टूट गया था।

13 फिर वह तुम्हारी बेटियों को लेकर उनसे सुगन्ध-द्रव्य और
रसोई और रोटियाँ बनवाएगा।
14 फिर वह तुम्हारे खेतों और दाख और जैतून की बारियों में से
जो अच्छी से अच्छी होंगी उन्हें ले लेकर अपने कर्मचारियों को
देगा।
15 फिर वह तुम्हारे बीज और दाख की बारियों का दसवाँ अंश
ले लेकर अपने हाकिमों और कर्मचारियों को देगा।
16 फिर वह तुम्हारे दास दासियों को, और तुम्हारे अच्छे से
अच्छे जवानों को, और तुम्हारे गदहों को भी लेकर अपने काम में
लगाएगा।
17 वह तुम्हारी भेड़-बकरियों का भी दसवाँ अंश लेगा; इस
प्रकार तुम लोग उसके दास बन जाओगे।
18 और उस दिन तुम अपने उस चुने हुए राजा के कारण दुहाई
दोगे, परन्तु यहोवा उस समय तुम्हारी न सुनेगा।"

19 तो भी उन लोगों ने शमूएल की बात न सुनी; और कहने
लगे, "नहीं! हम निश्चय अपने लिये राजा चाहते हैं, ***(??????.
13:21)***
20 जिससे हम भी और सब जातियों के समान हो जाएँ, और
हमारा राजा हमारा न्याय करे, और हमारे आगे-आगे चलकर
हमारी ओर से युद्ध किया करे।"
21 लोगों की ये सब बातें सुनकर शमूएल ने यहोवा के कानों
तक पहुँचाया।
22 यहोवा ने शमूएल से कहा, "*????? ??? ??????*† उनके
लिये राजा ठहरा दे।" तब शमूएल ने इस्राएली मनुष्यों से कहा,
"तुम अब अपने-अपने नगर को चले जाओ।"

† **8:22** *????? ??? ??????:* यह तीसरी बार कहा गया है (1 शमू.8:7,1 शमू.8:9) यह परमेश्वर की इच्छा की अभिव्यक्ति है। प्रजा के निवेदन के साथ शमूएल की घोर असहमति यहाँ प्रगट है।

9

[illegible]

1 बिन्यामीन के गोत्र में कीश नाम का एक पुरुष था, जो अपीह के पुत्र बकोरत का परपोता, और सरोर का पोता, और अबीएल का पुत्र था; वह एक बिन्यामीनी पुरुष का पुत्र और बड़ा शक्तिशाली सूरमा था।

2 उसके शाऊल नामक एक जवान पुत्र था, जो सुन्दर था, और इस्राएलियों में कोई उससे बढ़कर सुन्दर न था; वह इतना लम्बा था कि दूसरे लोग उसके कंधे ही तक आते थे।

3 जब शाऊल के पिता कीश की गदहियाँ खो गईं, तब कीश ने अपने पुत्र शाऊल से कहा, “एक सेवक को अपने साथ ले जा और गदहियों को ढूँढ ला।”

4 तब वह एप्रैम के पहाड़ी देश और शलीशा देश होते हुए गया, परन्तु उन्हें न पाया। तब वे शालीम नामक देश भी होकर गए, और वहाँ भी न पाया। फिर बिन्यामीन के देश में गए, परन्तु गदहियाँ न मिलीं।

5 जब वे सूफ नामक देश में आए, तब शाऊल ने अपने साथ के सेवक से कहा, “आ, हम लौट चलें, ऐसा न हो कि मेरा पिता गदहियों की चिन्ता छोड़कर हमारी चिन्ता करने लगे।”

6 उसने उससे कहा, “सुन, इस नगर में परमेश्वर का एक जन है जिसका बड़ा आदरमान होता है; और जो कुछ वह कहता है वह बिना पूरा हुए नहीं रहता। अब हम उधर चलें, सम्भव है वह हमको हमारा मार्ग बताए कि किधर जाएँ।”

7 शाऊल ने अपने सेवक से कहा, “सुन, यदि हम उस पुरुष के पास चलें तो उसके लिये क्या ले चलें? देख, हमारी थैलियों में की रोटी चुक गई है और भेंट के योग्य कोई वस्तु है ही नहीं, जो हम परमेश्वर के उस जन को दें। हमारे पास क्या है?”

8 सेवक ने फिर शाऊल से कहा, "मेरे पास तो एक शेकेल चाँदी
की चौथाई है, वही मैं परमेश्वर के जन को दूँगा, कि वह हमको
बताए कि किधर जाएँ।"
9 (पूर्वकाल में तो इस्राएल में जब कोई परमेश्वर से प्रश्न करने
जाता तब ऐसा कहता था, "चलो, हम दर्शी के पास चलें;" क्योंकि
जो आजकल नबी कहलाता है वह पूर्वकाल में दर्शी कहलाता
था।)
10 तब शाऊल ने अपने सेवक से कहा, "तूने भला कहा है; हम
चलें।" अत: वे उस नगर को चले जहाँ परमेश्वर का जन था।
11 उस नगर की चढ़ाई पर चढ़ते समय उन्हें कई एक लड़कियाँ
मिलीं जो पानी भरने को निकली थीं; उन्होंने उनसे पूछा, "क्या
दर्शी यहाँ है?"
12 उन्होंने उत्तर दिया, "है; देखो, वह तुम्हारे आगे है। अब फुर्ती
करो; आज ऊँचे स्थान पर लोगों का यज्ञ है, इसलिए वह आज
नगर में आया हुआ है।
13 जैसे ही तुम नगर में पहुँचो वैसे ही वह तुम को *[illegible]*
[illegible] [illegible][*] खाना खाने को जाने से पहले मिलेगा; क्योंकि जब
तक वह न पहुँचे तब तक लोग भोजन न करेंगे, इसलिए कि यज्ञ
के विषय में वही धन्यवाद करता; तब उसके बाद ही आमन्त्रित
लोग भोजन करते हैं। इसलिए तुम अभी चढ़ जाओ, इसी समय
वह तुम्हें मिलेगा।"
14 वे नगर में चढ़ गए और जैसे ही नगर के भीतर पहुँचे वैसे ही
शमूएल ऊँचे स्थान पर चढ़ने के विचार से उनके सामने आ रहा
था।
15 शाऊल के आने से एक दिन पहले यहोवा ने शमूएल को यह
चिता रखा था,

---

[*] **9:13** *[illegible] [illegible] [illegible]:* वाक्यांश से विदित होता है कि वह ऊँचा स्थान नगर का सबसे ऊँचा स्थान था, सम्भवत: रामाह नगर का गढ़।

16 “कल इसी समय मैं तेरे पास बिन्यामीन के क्षेत्र से एक पुरुष
को भेजूँगा, उसी को तू मेरी इस्राएली प्रजा के ऊपर प्रधान होने
के लिये अभिषेक करना। और वह मेरी प्रजा को पलिश्तियों के
हाथ से छुड़ाएगा; क्योंकि मैंने अपनी प्रजा पर कृपादृष्टि की है,
इसलिए कि उनकी चिल्लाहट मेरे पास पहुँची है।”
17 फिर जब शमूएल को शाऊल दिखाई पड़ा, तब यहोवा ने
उससे कहा, “जिस पुरुष की चर्चा मैंने तुझ से की थी वह यही है;
मेरी प्रजा पर यही अधिकार करेगा।”
18 तब शाऊल फाटक में शमूएल के निकट जाकर कहने लगा,
“मुझे बता कि दर्शी का घर कहाँ है?”
19 उसने कहा, “दर्शी तो मैं हूँ; मेरे आगे-आगे ऊँचे स्थान पर
चढ़ जा, क्योंकि आज के दिन तुम मेरे साथ भोजन खाओगे, और
सवेरे को जो कुछ तेरे मन में हो सब कुछ मैं तुझे बताकर विदा
करूँगा।
20 और तेरी गदहियाँ जो तीन दिन हुए खो गई थीं उनकी कुछ
भी चिन्ता न कर, क्योंकि वे मिल गई हैं। और इस्राएल में जो कुछ
मनभाऊ है वह किसका है? क्या वह तेरा और तेरे पिता के सारे
घराने का नहीं है?”
21 शाऊल ने उत्तर देकर कहा, “*[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*†? और क्या मेरा कुल बिन्यामीन के
गोत्र के सारे कुलों में से छोटा नहीं है? इसलिए तू मुझसे ऐसी
बातें क्यों कहता है?”
22 तब शमूएल ने शाऊल और उसके सेवक को *[illegible]*‡ में
पहुँचाकर आमन्त्रित लोग, जो लगभग तीस जन थे, उनके साथ

† **9:21** *[illegible] [illegible] [illegible], ... [illegible] [illegible]:* बिन्यामीन का गोत्र सबसे छोटा था। इससे अधिक और क्या सम्भावना है कि, मानवीय विचारों के आधार पर इस दुर्बल गोत्र यूसुफ यहूदा के सामर्थी गोत्रों को राजा दे। ‡ **9:22** *[illegible]:* उस ऊँचे स्थान में आराधनालय से संलग्न जहाँ बलि के भोज के आयोजन का था।

मुख्य स्थान पर बैठा दिया।
23 फिर शमूएल ने रसोइये से कहा, "जो टुकड़ा मैंने तुझे देकर,
अपने पास रख छोड़ने को कहा था, उसे ले आ।"
24 तो रसोइये ने जाँघ को माँस समेत उठाकर शाऊल के आगे
धर दिया; तब शमूएल ने कहा, "जो रखा गया था उसे देख, और
अपने सामने रख के खा; क्योंकि वह तेरे लिये इसी नियत समय
तक, जिसकी चर्चा करके मैंने लोगों को न्योता दिया, रखा हुआ
है।"
शाऊल ने उस दिन शमूएल के साथ भोजन किया।
25 तब वे ऊँचे स्थान से उतरकर नगर में आए, और उसने घर
की छत पर शाऊल से बातें की।

□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□

26 सवेरे वे तड़के उठे, और पौ फटते शमूएल ने शाऊल को छत
पर बुलाकर कहा, "उठ, मैं तुझको विदा करूँगा।" तब शाऊल
उठा, और वह और शमूएल दोनों बाहर निकल गए।
27 और नगर के सिरे की उतराई पर चलते-चलते शमूएल ने
शाऊल से कहा, "अपने सेवक को हम से आगे बढ़ने की आज्ञा दे,
(वह आगे बढ़ गया,) परन्तु तू अभी खड़ा रह कि मैं तुझे परमेश्वर
का वचन सुनाऊँ।"

10

1 तब शमूएल ने एक कुप्पी तेल लेकर उसके सिर पर उण्डेला,
और उसे चूमकर कहा, "क्या इसका कारण यह नहीं कि यहोवा ने
अपने निज भाग के ऊपर प्रधान होने को तेरा अभिषेक किया है?
2 आज जब तू मेरे पास से चला जाएगा, तब राहेल की कब्र के
पास जो बिन्यामीन के देश की सीमा पर सेलसह में है, दो जन
तुझे मिलेंगे, और कहेंगे, 'जिन गदहियों को तू ढूँढ़ने गया था वे
मिली हैं; और सुन, तेरा पिता गदहियों की चिन्ता छोड़कर तुम्हारे
कारण कुढ़ता हुआ कहता है, कि मैं अपने पुत्र के लिये क्या करूँ?'

3 फिर वहाँ से आगे बढ़कर जब तू ताबोर के बांज वृक्ष के पास
पहुँचेगा, तब वहाँ तीन जन परमेश्वर के पास बेतेल को जाते हुए
तुझे मिलेंगे, जिनमें से एक तो बकरी के तीन बच्चे, और दूसरा
तीन रोटी, और तीसरा एक कुप्पी दाखमधु लिए हुए होगा।
4 वे तेरा कुशल पूछेंगे, और तुझे दो रोटी देंगे, और तू उन्हें
उनके हाथ से ले लेना।
5 तब तू परमेश्वर के पहाड़ पर पहुँचेगा जहाँ पलिश्तियों की
चौकी है; और जब तू वहाँ नगर में प्रवेश करे, तब नबियों का एक
दल ऊँचे स्थान से उतरता हुआ तुझे मिलेगा; और उनके आगे
सितार, डफ, बाँसुरी, और वीणा होंगे; और वे नबूवत करते होंगे।
6 तब *[illegible]**, और
तू उनके साथ होकर नबूवत करने लगेगा, और तू परिवर्तित होकर
और ही मनुष्य हो जाएगा।
7 और जब ये चिन्ह तुझे दिखाई पड़ेंगे, तब जो काम करने का
अवसर तुझे मिले उसमें लग जाना; क्योंकि परमेश्वर तेरे संग
रहेगा।
8 और तू मुझसे पहले गिलगाल को जाना; और मैं होमबलि
और मेलबलि चढ़ाने के लिये तेरे पास आऊँगा। तू सात दिन तक
मेरी बाट जोहते रहना, तब मैं तेरे पास पहुँचकर तुझे बताऊँगा
कि तुझको क्या-क्या करना है।”
9 जैसे ही उसने शमूएल के पास से जाने को पीठ फेरी वैसे ही
परमेश्वर ने उसके मन को परिवर्तित किया; और वे सब चिन्ह उसी
दिन प्रगट हुए।
10 जब वे उधर उस पहाड़ के पास आए, तब नबियों का एक
दल उसको मिला; और परमेश्वर का आत्मा उस पर बल से उतरा,

---

* **10:6** *[illegible]*: उस पर परमेश्वर का आत्मा वैसे ही उतरा जैसे उससे पूर्व न्यायियों पर उतरता था। अलोकिक शक्ति एवं क्षमता का आत्मा।

और वह उनके बीच में नबूवत करने लगा।
11 जब उन सभी ने जो उसे पहले से जानते थे यह देखा कि वह
नबियों के बीच में नबूवत कर रहा है, तब आपस में कहने लगे,
“कीश के पुत्र को यह क्या हुआ? क्या शाऊल भी नबियों में का
है?”
12 वहाँ के एक मनुष्य ने उत्तर दिया, “भला, *[illegible]*
[illegible]†?” इस पर यह कहावत चलने लगी, “क्या शाऊल भी नबियों
में का है?”
13 जब वह नबूवत कर चुका, तब ऊँचे स्थान पर चढ़ गया।
14 तब शाऊल के चाचा ने उससे और उसके सेवक से पूछा,
“तुम कहाँ गए थे?” उसने कहा, “हम तो गदहियों को ढूँढ़ने गए
थे; और जब हमने देखा कि वे कहीं नहीं मिलतीं, तब शमूएल के
पास गए।”
15 शाऊल के चाचा ने कहा, “मुझे बता कि शमूएल ने तुम से
क्या कहा।”
16 शाऊल ने अपने चाचा से कहा, “उसने हमें निश्चय करके
बताया कि गदहियाँ मिल गईं।” परन्तु जो बात शमूएल ने राज्य
के विषय में कही थी वह उसने उसको न बताई।

[illegible]

17 तब शमूएल ने प्रजा के लोगों को मिस्पा में यहोवा के पास
बुलवाया;
18 तब उसने इस्राएलियों से कहा, “इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा यह कहता है, ‘मैं तो इस्राएल को मिस्र देश से निकाल
लाया, और तुम को मिस्रियों के हाथ से, और उन सब राज्यों के
हाथ से जो तुम पर अंधेर करते थे छुड़ाया है।’

† **10:12** *[illegible]*: यह एक अत्यधिक अस्पष्ट वाक्य है। यदि बाप: का अर्थ भविष्यद्वक्ताओं का मुखिया है तो इस प्रश्न का अर्थ है, उनकी सहभागिता में शाऊल जैसे व्यक्ति को स्थान देनेवाला अगुआ कैसा है?

19 परन्तु तुम ने आज अपने परमेश्वर को जो सब विपत्तियों
और कष्टों से तुम्हारा छुड़ानेवाला है तुच्छ जाना; और उससे
कहा है, 'हम पर राजा नियुक्त कर दे।' इसलिए अब तुम गोत्र-
गोत्र और हजार-हजार करके यहोवा के सामने खड़े हो जाओ।"
20 तब शमूएल सारे इस्राएली गोत्रों को समीप लाया, और
चिट्ठी बिन्यामीन के नाम पर निकली।
21 तब वह बिन्यामीन के गोत्र को कुल-कुल करके समीप लाया,
और चिट्ठी मत्री के कुल के नाम पर निकली; फिर चिट्ठी कीश के
पुत्र शाऊल के नाम पर निकली। और जब वह ढूँढ़ा गया, तब न
मिला।
22 तब उन्होंने फिर यहोवा से पूछा, "क्या यहाँ कोई और
आनेवाला है?" यहोवा ने कहा, "सुनो, वह *[illegible]*‡ छिपा हुआ है।"
23 तब वे दौड़कर उसे वहाँ से लाए; और वह लोगों के बीच में
खड़ा हुआ, और वह कंधे से सिर तक सब लोगों से लम्बा था।
24 शमूएल ने सब लोगों से कहा, "क्या तुम ने यहोवा के चुने
हुए को देखा है कि सारे लोगों में कोई उसके बराबर नहीं?" तब सब
लोग ललकार के बोल उठे, "राजा चिरंजीव रहे।" (प्रेरि. 13:21)
25 तब शमूएल ने लोगों से राजनीति का वर्णन किया, और उसे
पुस्तक में लिखकर यहोवा के आगे रख दिया। और शमूएल ने सब
लोगों को अपने-अपने घर जाने को विदा किया।
26 और शाऊल गिबा को अपने घर चला गया, और उसके साथ
एक दल भी गया जिनके मन को परमेश्वर ने उभारा था।
27 परन्तु कई लुच्चे लोगों ने कहा, "यह जन हमारा क्या उद्धार
करेगा?" और उन्होंने उसको तुच्छ जाना, और उसके पास भेंट न
लाए। तो भी वह सुनी अनसुनी करके चुप रहा।

‡ **10:22** *[illegible]:* वह सभा एक शिविर के समान एक थी और सम्भवत: उस सभा का सारा सामान एक स्थान में रखा जहाँ सुरक्षा के लिये वाहनों का प्रबन्ध किया गया था।

11

[illegible]

1 तब अम्मोनी नाहाश ने चढ़ाई करके गिलाद के याबेश के
विरुद्ध छावनी डाली; और याबेश के सब पुरुषों ने नाहाश से
कहा, "हम से वाचा बाँध, और हम तेरी अधीनता मान लेंगे।"
2 अम्मोनी नाहाश ने उनसे कहा, "मैं तुम से वाचा इस शर्त
पर बाँधूँगा, कि मैं तुम सभी की दाहिनी आँखें फोड़कर इसे सारे
इस्राएल की नामधराई का कारण कर दूँ।"
3 याबेश के वृद्ध लोगों ने उससे कहा, "हमें सात दिन का अवसर
दे तब तक हम इस्राएल के सारे देश में दूत भेजेंगे। और यदि हमको
कोई बचानेवाला न मिलेगा, तो हम तेरे ही पास निकल आएँगे।"
4 दूतों ने शाऊलवाले गिबा में आकर लोगों को यह सन्देश
सुनाया, और सब लोग चिल्ला चिल्लाकर रोने लगे।
5 शाऊल बैलों के पीछे-पीछे मैदान से चला आता था; और
शाऊल ने पूछा, "लोगों को क्या हुआ कि वे रोते हैं?" उन्होंने
याबेश के लोगों का सन्देश उसे सुनाया।
6 यह सन्देश सुनते ही *[illegible]*
*[illegible]**, और उसका कोप बहुत भड़क उठा।
7 और उसने एक जोड़ी बैल लेकर उसके टुकड़े-टुकड़े काटे, और
यह कहकर दूतों के हाथ से इस्राएल के सारे देश में कहला भेजा,
"जो कोई आकर शाऊल और शमूएल के पीछे न हो लेगा उसके
बैलों से ऐसा ही किया जाएगा।" तब यहोवा का भय लोगों में
ऐसा समाया कि वे एक मन होकर निकल आए।
8 तब उसने उन्हें बेजेक में गिन लिया, और इस्राएलियों के तीन
लाख, और यहूदियों के तीस हजार ठहरे।

* **11:6** *[illegible]*: उस पर परमेश्वर का आत्मा वैसे ही उतरा जैसे उससे पूर्व न्यायियों पर उतरता था। अलौकिक शक्ति एवं क्षमता का आत्मा।

9 और उन्होंने उन दूतों से जो आए थे कहा, “तुम गिलाद में
के याबेश के लोगों से यह कहो, कल धूप तेज होने की घड़ी तक
तुम छुटकारा पाओगे।” तब दूतों ने जाकर याबेश के लोगों को
सन्देश दिया, और वे आनन्दित हुए।
10 तब याबेश के लोगों ने नाहाश से कहा, “कल हम तुम्हारे
पास निकल आएँगे, और जो कुछ तुम को अच्छा लगे वही हम
से करना।”
11 दूसरे दिन शाऊल ने लोगों के तीन दल किए; और उन्होंने
रात के अन्तिम पहर में छावनी के बीच में आकर अम्मोनियों को
मारा; और धूप के कड़े होने के समय तक ऐसे मारते रहे कि जो
बच निकले वे यहाँ तक तितर-बितर हुए कि दो जन भी एक संग
कहीं न रहे।
12 तब लोग शमूएल से कहने लगे, “जिन मनुष्यों ने कहा था,
‘क्या शाऊल हम पर राज्य करेगा?’ उनको लाओ कि हम उन्हें
मार डालें।”
13 शाऊल ने कहा, “आज के दिन कोई मार डाला न जाएगा;
क्योंकि आज यहोवा ने इस्राएलियों को छुटकारा दिया है।”
14 तब शमूएल ने इस्राएलियों से कहा, “आओ, हम गिलगाल
को चलें, और वहाँ राज्य को नये सिरे से स्थापित करें।”
15 तब सब लोग गिलगाल को चले, और वहाँ उन्होंने
गिलगाल में यहोवा के सामने *[illegible]*[†]; और
वहीं उन्होंने यहोवा को मेलबलि चढ़ाए; और वहीं शाऊल और
सब इस्राएली लोगों ने अत्यन्त आनन्द मनाया।

12

[illegible]

† **11:15** *[illegible]*: शाऊल को दो बार राजा बनाया गया। एक बार रामाह में और दूसरी बार मिस्पा में।

1 तब शमूएल ने सारे इस्राएलियों से कहा, “सुनो, जो कुछ
तुम ने मुझसे कहा था उसे मानकर मैंने एक राजा तुम्हारे ऊपर
ठहराया है।
2 और अब देखो, वह राजा तुम्हारे आगे-आगे चलता है; और
अब मैं बूढ़ा हूँ, और मेरे बाल सफेद हो गए हैं, और मेरे पुत्र तुम्हारे
पास हैं; और मैं लड़कपन से लेकर आज तक तुम्हारे सामने काम
करता रहा हूँ।
3 मैं उपस्थित हूँ; इसलिए तुम यहोवा के सामने, और उसके
अभिषिक्त के सामने मुझ पर साक्षी दो, कि मैंने किसका बैल ले
लिया? या किसका गदहा ले लिया? या किस पर अंधेर किया?
या किसको पीसा? या किसके हाथ से अपनी आँखें बन्द करने
के लिये घूस लिया? बताओ, और मैं वह तुम को फेर दूँगा?”
([illegible]. 20:33)
4 वे बोले, “तूने न तो हम पर अंधेर किया, न हमें पीसा, और न
किसी के हाथ से कुछ लिया है।”
5 उसने उनसे कहा, “आज के दिन यहोवा तुम्हारा साक्षी, और
उसका अभिषिक्त इस बात का साक्षी है, कि मेरे यहाँ कुछ नहीं
निकला।” वे बोले, “हाँ, वह साक्षी है।”
6 फिर शमूएल लोगों से कहने लगा, “जो मूसा और हारून
को ठहराकर तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र देश से निकाल लाया *[illegible]*
*[illegible]**।
7 इसलिए अब तुम खड़े रहो, और मैं यहोवा के सामने उसके
सब धार्मिकता के कामों के विषय में, जिन्हें उसने तुम्हारे साथ
और तुम्हारे पूर्वजों के साथ किया है, तुम्हारे साथ विचार करूँगा।
8 याकूब मिस्र में गया, और तुम्हारे पूर्वजों ने यहोवा की दुहाई

---

* **12:6** *[illegible]:* यहोवा को परमेश्वर वरन् पूर्वजों का परमेश्वर कहने में शाऊल का उद्देश्य था कि वह लोगों पर प्रभाव डालें, कि उनका राष्ट्रीय अस्तित्व और उनकी सब राष्ट्रीय आशीषें परमेश्वर की ही देन है।

दी; तब यहोवा ने मूसा और हारून को भेजा, और उन्होंने तुम्हारे
पूर्वजों को मिस्र से निकाला, और इस स्थान में बसाया।
9 फिर जब वे अपने परमेश्वर यहोवा को भूल गए, तब उसने
उन्हें हासोर के सेनापति सीसरा, और पलिश्तियों और मोआब के
राजा के अधीन कर दिया; और वे उनसे लड़े।
10 तब उन्होंने यहोवा की दुहाई देकर कहा, 'हमने यहोवा को
त्याग कर और बाल देवताओं और अश्तोरेत देवियों की उपासना
करके महापाप किया है; परन्तु अब तू हमको हमारे शत्रुओं के हाथ
से छुड़ा तो हम तेरी उपासना करेंगे।'
11 इसलिए यहोवा ने यरूब्बाल, बदान, यिप्तह, और शमूएल
को भेजकर तुम को तुम्हारे चारों ओर के शत्रुओं के हाथ से
छुड़ाया; और तुम निडर रहने लगे।
12 और जब तुम ने देखा कि अम्मोनियों का राजा नाहाश हम
पर चढ़ाई करता है, तब यद्यपि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारा
राजा था तो भी तुम ने मुझसे कहा, 'नहीं, हम पर एक राजा राज्य
करेगा।'
13 अब उस राजा को देखो जिसे तुम ने चुन लिया, और जिसके
लिये तुम ने प्रार्थना की थी; देखो, यहोवा ने एक राजा तुम्हारे
ऊपर नियुक्त कर दिया है।
14 यदि तुम यहोवा का भय मानते, उसकी उपासना करते, और
उसकी बात सुनते रहो, और यहोवा की आज्ञा को टालकर उससे
बलवा न करो, और तुम और वह जो तुम पर राजा हुआ है दोनों
अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे-पीछे चलनेवाले बने रहो, तब तो
भला होगा;
15 परन्तु यदि तुम यहोवा की बात न मानो, और यहोवा की
आज्ञा को टालकर उससे बलवा करो, तो यहोवा का हाथ जैसे
तुम्हारे पुरखाओं के विरुद्ध हुआ वैसे ही तुम्हारे भी विरुद्ध उठेगा।
16 इसलिए अब तुम खड़े रहो, और इस बड़े काम को देखो जिसे

यहोवा तुम्हारी आँखों के सामने करने पर है।
17 आज क्या गेहूँ की कटनी नहीं हो रही? मैं यहोवा को
पुकारूँगा, और वह मेघ गरजाएगा और मेंह बरसाएगा; तब तुम
जान लोगे, और देख भी लोगे, कि तुम ने राजा माँगकर यहोवा
की दृष्टि में बहुत बड़ी बुराई की है।”
18 तब शमूएल ने यहोवा को पुकारा, और यहोवा ने उसी दिन
मेघ गरजाया और मेंह बरसाया; और सब लोग यहोवा से और
शमूएल से अत्यन्त डर गए।
19 और सब लोगों ने शमूएल से कहा, “अपने दासों के निमित्त
अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर, कि हम मर न जाएँ; क्योंकि
हमने अपने सारे पापों से बढ़कर यह बुराई की है कि राजा माँगा
है।”
20 शमूएल ने लोगों से कहा, “डरो मत; तुम ने यह सब बुराई
तो की है, परन्तु अब यहोवा के पीछे चलने से फिर मत मुड़ना;
परन्तु अपने सम्पूर्ण मन से उसकी उपासना करना;
21 और मत मुड़ना; नहीं तो ऐसी व्यर्थ वस्तुओं के पीछे चलने
लगोगे जिनसे न कुछ लाभ पहुँचेगा, और न कुछ छुटकारा हो
सकता है, क्योंकि वे सब व्यर्थ ही हैं।
22 यहोवा तो अपने बड़े नाम के कारण अपनी प्रजा को न
तजेगा, क्योंकि यहोवा ने तुम्हें अपनी ही इच्छा से अपनी प्रजा
बनाया है। ***(???. 11:1)***
23 फिर यह मुझसे दूर हो कि मैं तुम्हारे लिये प्रार्थना करना
छोड़कर यहोवा के विरुद्ध पापी ठहरूँ; मैं तो तुम्हें अच्छा और
सीधा मार्ग दिखाता रहूँगा।
24 केवल इतना हो कि तुम लोग यहोवा का भय मानो, और
सच्चाई से अपने सम्पूर्ण मन के साथ उसकी उपासना करो;
क्योंकि यह तो सोचो कि उसने तुम्हारे लिये कैसे बड़े-बड़े काम
किए हैं।

25 परन्तु यदि तुम बुराई करते ही रहोगे, तो तुम और तुम्हारा
राजा दोनों के दोनों मिट जाओगे।”

13

[illegible]

1 शाऊल तीस वर्ष का होकर राज्य करने लगा, और उसने
इस्राएलियों पर दो वर्ष तक राज्य किया।

2 फिर शाऊल ने इस्राएलियों में से तीन हजार पुरुषों को अपने
लिये चुन लिया; और उनमें से दो हजार शाऊल के साथ मिकमाश
में और बेतेल के पहाड़ पर रहे, और एक हजार योनातान के साथ
बिन्यामीन के गिबा में रहे; और दूसरे सब लोगों को उसने अपने-
अपने डेरे में जाने को विदा किया।
3 तब योनातान ने पलिश्तियों की उस चौकी को जो गेबा में थी
मार लिया; और इसका समाचार पलिश्तियों के कानों में पड़ा। तब
शाऊल ने सारे देश में नरसिंगा फुँकवाकर यह कहला भेजा, “इब्री
लोग सुनें।”
4 और सब इस्राएलियों ने यह समाचार सुना कि शाऊल ने
पलिश्तियों की चौकी को मारा है, और यह भी कि पलिश्ती
इस्राएल से घृणा करने लगे हैं। तब लोग शाऊल के पीछे चलकर
गिलगाल में इकट्ठे हो गए।

5 पलिश्ती इस्राएल से युद्ध करने के लिये इकट्ठे हो गए, अर्थात्
तीस हजार रथ, और छः हजार सवार, और समुद्र तट के रेतकणों
के समान बहुत से लोग इकट्ठे हुए; और बेतावेन के पूर्व की ओर
जाकर मिकमाश में छावनी डाली।
6 जब इस्राएली पुरुषों ने देखा कि हम सकेती में पड़े हैं (और
सचमुच लोग संकट में पड़े थे), तब वे लोग गुफाओं, झाड़ियों,
चट्टानों, गढ़ियों, और गड्ढों में जा छिपे।

7 और कितने इब्री यरदन पार होकर गाद और गिलाद के देशों
में चले गए; परन्तु शाऊल गिलगाल ही में रहा, और सब लोग
थरथराते हुए उसके पीछे हो लिए।

8 वह *[illegible]*[*], अर्थात् सात दिन तक
बाट जोहता रहा; परन्तु शमूएल गिलगाल में न आया, और लोग
उसके पास से इधर-उधर होने लगे।
9 तब शाऊल ने कहा, “होमबलि और मेलबलि मेरे पास
लाओ।” तब उसने होमबलि को चढ़ाया।
10 जैसे ही वह होमबलि को चढ़ा चुका, तो क्या देखता है कि
शमूएल आ पहुँचा; और शाऊल उससे मिलने और नमस्कार करने
को निकला।
11 शमूएल ने पूछा, “तूने क्या किया?” शाऊल ने कहा, “जब
मैंने देखा कि लोग मेरे पास से इधर-उधर हो चले हैं, और तू
ठहराए हुए दिनों के भीतर नहीं आया, और पलिश्ती मिकमाश
में इकट्ठे हुए हैं,
12 तब मैंने सोचा कि पलिश्ती गिलगाल में मुझ पर अभी आ
पड़ेंगे, और मैंने यहोवा से विनती भी नहीं की है; अतः मैंने अपनी
इच्छा न रहते भी होमबलि चढ़ाया।”
13 शमूएल ने शाऊल से कहा, “*[illegible]*[†]; तूने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को नहीं
माना; नहीं तो यहोवा तेरा राज्य इस्राएलियों के ऊपर सदा स्थिर
रखता।
14 परन्तु अब तेरा राज्य बना न रहेगा; यहोवा ने अपने लिये

---

[*] **13:8** *[illegible]:* शमूएल ने सात दिनों के बाद में का समय नियुक्त किया था। यह विश्वास और आज्ञाकारिता की परीक्षा का समय था जिसमें इस समय शाऊल चूक गया। [†] **13:13** *[illegible]:* शाऊल जितनी भी परिस्थितियों और संकटों से अवगत था वे सब परमेश्वर की दृष्टि में थे और परमेश्वर ने उसे शमूएल के आने तक प्रतिक्षा करने की आज्ञा दी थी। यह भी स्वेच्छा की अवज्ञा का पाप था जो पुनः उभरा और उसका दण्ड कठोर था

एक ऐसे पुरुष को ढूँढ़ लिया है जो उसके मन के अनुसार है; और यहोवा ने उसी को अपनी प्रजा पर प्रधान होने को ठहराया है, क्योंकि तूने यहोवा की आज्ञा को नहीं माना।” *([illegible]. 13:22)*

15 तब शमूएल चल निकला, और गिलगाल से बिन्यामीन के गिबा को गया। और शाऊल ने अपने साथ के लोगों को गिनकर कोई छः सौ पाए।

[illegible]

16 और शाऊल और उसका पुत्र योनातान और जो लोग उनके साथ थे वे बिन्यामीन के गेबा में रहे; और पलिश्ती मिकमाश में डेरे डाले पड़े रहे।

17 और पलिश्तियों की छावनी से आक्रमण करनेवाले तीन दल बाँधकर निकले; एक दल ने शूआल नामक देश की ओर फिरके ओप्रा का मार्ग लिया,

18 एक और दल ने मुड़कर बेथोरोन का मार्ग लिया, और एक और दल ने मुड़कर उस देश का मार्ग लिया जो सबोईम नामक तराई की ओर जंगल की तरफ है।

19 इस्राएल के पूरे देश में *[illegible]*[‡], क्योंकि पलिश्तियों ने कहा था, “इब्री तलवार या भाला बनाने न पाएँ;”

20 इसलिए सब इस्राएली अपने-अपने हल की फाल, और भाले, और कुल्हाड़ी, और हँसुआ तेज करने के लिये पलिश्तियों के पास जाते थे;

21 परन्तु उनके हँसुओं, फालों, खेती के त्रिशूलों, और कुल्हाड़ियों की धारें, और पैनों की नोकें ठीक करने के लिये वे रेती रखते थे।

---

‡ **13:19** *[illegible]:* यह भयानक अन्तमार्गों का परिणाम था जिनकी चर्चा पिछले पद में की गई है। ऐसा पलिश्तियों ने इसलिए किया था कि उनकी विजय अटल रहे।

22 इसलिए युद्ध के दिन शाऊल और योनातान के साथियों में
से किसी के पास न तो तलवार थी और न भाला, वे केवल शाऊल
और उसके पुत्र योनातान के पास थे।
23 और पलिश्तियों की चौकी के सिपाही निकलकर मिकमाश
की घाटी को गए।

14

[illegible]

1 एक दिन शाऊल के पुत्र योनातान ने अपने पिता से बिना
कुछ कहे अपने हथियार ढोनेवाले जवान से कहा, "आ, हम उधर
पलिश्तियों की चौकी के पास चलें।"
2 शाऊल तो गिबा की सीमा पर मिग्रोन में अनार के पेड़ के
तले टिका हुआ था, और उसके संग के लोग कोई छः सौ थे;
3 और एली जो शीलो में यहोवा का याजक था, उसके पुत्र
पीनहास का पोता, और ईकाबोद के भाई, अहीतूब का पुत्र
अहिय्याह भी एपोद पहने हुए संग था। परन्तु उन लोगों को
मालूम न था कि योनातान चला गया है।
4 उन घाटियों के बीच में, जिनसे होकर योनातान पलिश्तियों
की चौकी को जाना चाहता था, दोनों ओर एक-एक नोकीली
चट्टान थी; एक चट्टान का नाम बोसेस, और दूसरी का नाम सेने
था।
5 एक चट्टान तो उत्तर की ओर मिकमाश के सामने, और दूसरी
दक्षिण की ओर गेबा के सामने खड़ी थी।
6 तब योनातान ने अपने हथियार ढोनेवाले जवान से कहा,
"आ, हम *[illegible]** की चौकी के पास जाएँ;
क्या जाने यहोवा हमारी सहायता करे; क्योंकि यहोवा को कोई

---

* **14:6** *[illegible]*: यह एक निन्दा का शब्द था जो विशेष करके पलिश्तियों के लिये काम में लिया जाता था। यह सम्भवत: पलिश्तियों द्वारा इस्राएलियों पर दीर्घकालीन अत्याचार और उनके द्वारा बार बार युद्ध करने का संकेतक था।

रुकावट नहीं, कि चाहे तो बहुत लोगों के द्वारा, चाहे थोड़े लोगों
के द्वारा छुटकारा दे।”
7 उसके हथियार ढोनेवाले ने उससे कहा, “जो कुछ तेरे मन में
हो वही कर; उधर चल, मैं तेरी इच्छा के अनुसार तेरे संग रहूँगा।”
8 योनातान ने कहा, “सुन, हम उन मनुष्यों के पास जाकर अपने
को उन्हें दिखाएँ।
9 यदि वे हम से यह कहें, ‘हमारे आने तक ठहरे रहो,’ तब तो
हम उसी स्थान पर खड़े रहें, और उनके पास न चढ़ें।
10 परन्तु यदि वे यह कहें, ‘हमारे पास चढ़ आओ,’ तो हम यह
जानकर चढ़ें, कि यहोवा उन्हें हमारे हाथ में कर देगा। हमारे लिये
यही चिन्ह हो।”
11 तब उन दोनों ने अपने को पलिश्तियों की चौकी पर प्रगट
किया, तब पलिश्ती कहने लगे, “देखो, इब्री लोग उन बिलों में से
जहाँ वे छिपे थे निकले आते हैं।”
12 फिर चौकी के लोगों ने योनातान और उसके हथियार
ढोनेवाले से पुकारके कहा, “हमारे पास चढ़ आओ, तब हम तुम
को कुछ सिखाएँगे।” तब योनातान ने अपने हथियार ढोनेवाले से
कहा, “मेरे पीछे-पीछे चढ़ आ; क्योंकि यहोवा उन्हें इस्राएलियों
के हाथ में कर देगा।”
13 और योनातान अपने हाथों और पाँवों के बल चढ़ गया,
और उसका हथियार ढोनेवाला भी उसके पीछे-पीछे चढ़ गया।
पलिश्ती योनातान के सामने गिरते गए, और उसका हथियार
ढोनेवाला उसके पीछे-पीछे उन्हें मारता गया।
14 यह पहला संहार जो योनातान और उसके हथियार ढोनेवाले
से हुआ, उसमें आधे बीघे भूमि में बीस एक पुरुष मारे गए।
15 और छावनी में, और मैदान पर, और उन सब लोगों
में थरथराहट हुई; और चौकीवाले और आक्रमण करनेवाले
भी थरथराने लगे; और भूकम्प भी हुआ; और अत्यन्त बड़ी
थरथराहट हुई।

16 बिन्यामीन के गिबा में शाऊल के पहरुओं ने दृष्टि करके
देखा कि वह भीड़ घटती जा रही है, और वे लोग इधर-उधर चले
जा रहे हैं।
17 तब शाऊल ने अपने साथ के लोगों से कहा, “अपनी गिनती
करके देखो कि हमारे पास से कौन चला गया है।” उन्होंने गिनकर
देखा, कि योनातान और उसका हथियार ढोनेवाला यहाँ नहीं हैं।
18 तब शाऊल ने अहिय्याह से कहा, “परमेश्वर का सन्दूक
इधर ला।” उस समय तो परमेश्वर का सन्दूक इस्राएलियों के साथ
था।
19 शाऊल याजक से बातें कर रहा था, कि पलिश्तियों की
छावनी में हुल्लड़ अधिक बढ़ गया; तब शाऊल ने याजक से
कहा, “*[illegible]*† ।”
20 तब शाऊल और उसके संग के सब लोग इकट्ठे होकर लड़ाई
में गए; वहाँ उन्होंने क्या देखा, कि एक-एक पुरुष की तलवार
अपने-अपने साथी पर चल रही है, और बहुत बड़ा कोलाहल मच
रहा है।
21 जो इब्री पहले पलिश्तियों की ओर थे, और उनके साथ चारों
ओर से छावनी में गए थे, वे भी शाऊल और योनातान के संग के
इस्राएलियों में मिल गए।
22 इसी प्रकार जितने इस्राएली पुरुष एप्रैम के पहाड़ी देश में
छिप गए थे, वे भी यह सुनकर कि पलिश्ती भागे जाते हैं, लड़ाई
में आकर उनका पीछा करने में लग गए।
23 तब यहोवा ने उस दिन इस्राएलियों को छुटकारा दिया; और
लड़नेवाले बेतावेन की परली ओर तक चले गए।
24 परन्तु इस्राएली पुरुष उस दिन तंग हुए, क्योंकि शाऊल ने
उन लोगों को शपथ धराकर कहा, “श्रापित हो वह, जो साँझ से

† **14:19** *[illegible]*: शाऊल युद्ध के लिये अधीर परमेश्वर के निर्देश की प्रतिक्षा नहीं कर पा रहा था। उसने अहिय्याह से निवेदन किया था कि वह परमेश्वर की इच्छा ज्ञात करें।

पहले कुछ खाए; इसी रीति मैं अपने शत्रुओं से बदला ले सकूँगा।”
अत: उन लोगों में से किसी ने कुछ भी भोजन न किया।
25 और सब लोग किसी वन में पहुँचे, जहाँ भूमि पर मधु पड़ा
हुआ था।
26 जब लोग वन में आए तब क्या देखा, कि मधु टपक रहा है,
तो भी शपथ के डर के मारे कोई अपना हाथ अपने मुँह तक न ले
गया।
27 परन्तु योनातान ने अपने पिता को लोगों को शपथ धराते
न सुना था, इसलिए उसने अपने हाथ की छड़ी की नोक बढ़ाकर
मधु के छत्ते में डुबाया, और अपना हाथ अपने मुँह तक ले गया;
तब *[illegible]*‡।
28 तब लोगों में से एक मनुष्य ने कहा, “तेरे पिता ने लोगों
को कड़ी शपथ धरा के कहा है, ‘श्रापित हो वह, जो आज कुछ
खाए।’ ” और लोग थके-माँदे थे।
29 योनातान ने कहा, “मेरे पिता ने लोगों को कष्ट दिया है;
देखो, मैंने इस मधु को थोड़ा सा चखा, और मेरी आँखें कैसी चमक
उठी हैं।
30 यदि आज लोग अपने शत्रुओं की लूट से जिसे उन्होंने पाया
मनमाना खाते, तो कितना अच्छा होता; अभी तो बहुत अधिक
पलिश्ती मारे नहीं गए।”
31 उस दिन वे मिकमाश से लेकर अय्यालोन तक पलिश्तियों
को मारते गए; और लोग बहुत ही थक गए।
32 इसलिए वे लूट पर टूटे, और भेड़-बकरी, और गाय-बैल,
और बछड़े लेकर भूमि पर मारकर उनका माँस लहू समेत खाने
लगे।
33 जब इसका समाचार शाऊल को मिला, कि लोग लहू समेत
माँस खाकर यहोवा के विरुद्ध पाप करते हैं। तब उसने उनसे कहा,

‡ **14:27** *[illegible]*: उसको अपनी सामर्थ्य वापस मिल गई

“तुम ने तो विश्वासघात किया है; अभी एक बड़ा पत्थर मेरे पास
लुढ़का दो।”
34 फिर शाऊल ने कहा, “लोगों के बीच में इधर-उधर फिरके
उनसे कहो, ‘अपना-अपना बैल और भेड़ शाऊल के पास ले
जाओ, और वहीं बलि करके खाओ; और लहू समेत खाकर यहोवा
के विरुद्ध पाप न करो।’ ” तब सब लोगों ने उसी रात अपना-अपना
बैल ले जाकर वहीं बलि किया।
35 तब [illegible]§;
वह तो पहली वेदी है जो उसने यहोवा के लिये बनवाई।
36 फिर शाऊल ने कहा, “हम इसी रात को ही पलिश्तियों का
पीछा करके उन्हें भोर तक लूटते रहें; और उनमें से एक मनुष्य को
भी जीवित न छोड़ें।” उन्होंने कहा, “जो कुछ तुझे अच्छा लगे
वही कर।” परन्तु याजक ने कहा, “हम यहीं परमेश्वर के समीप
आएँ।”
37 [illegible]*, “क्या मैं
पलिश्तियों का पीछा करूँ? क्या तू उन्हें इस्राएल के हाथ में कर
देगा?” परन्तु उसे उस दिन कुछ उत्तर न मिला।
38 तब शाऊल ने कहा, “हे प्रजा के मुख्य लोगों, इधर आकर
जानो; और देखो कि आज पाप किस प्रकार से हुआ है।
39 क्योंकि इस्राएल के छुड़ानेवाले यहोवा के जीवन की शपथ,
यदि वह पाप मेरे पुत्र योनातान से हुआ हो, तो भी निश्चय वह
मार डाला जाएगा।” परन्तु लोगों में से किसी ने उसे उत्तर न
दिया।
40 तब उसने सारे इस्राएलियों से कहा, “तुम एक ओर रहो, और
मैं और मेरा पुत्र योनातान दूसरी ओर रहेंगे।” लोगों ने शाऊल से

§ **14:35** [illegible]: शाऊल ने यहोवा के लिये एक वेदी बनवाना आरम्भ किया परन्तु उस रात पलिश्तियों का पीछा करने की शीघ्रता में वह उसका निर्माण पूरा नहीं करवा पाया।
* **14:37** [illegible]: यह परमेश्वर से पूछने की व्यवहारिक शब्दावली है।

कहा, “जो कुछ तुझे अच्छा लगे वही कर।”
41 तब शाऊल ने यहोवा से कहा, “हे इस्राएल के परमेश्वर,
सत्य बात बता।” तब चिट्ठी योनातान और शाऊल के नाम पर
निकली, और प्रजा बच गई।
42 फिर शाऊल ने कहा, “मेरे और मेरे पुत्र योनातान के नाम
पर चिट्ठी डालो।” तब चिट्ठी योनातान के नाम पर निकली।
43 तब शाऊल ने योनातान से कहा, “मुझे बता, कि तूने क्या
किया है।” योनातान ने बताया, और उससे कहा, “मैंने अपने हाथ
की छड़ी की नोक से थोड़ा सा मधु चख तो लिया था; और देख,
मुझे मरना है।”
44 शाऊल ने कहा, “परमेश्वर ऐसा ही करे, वरन् इससे भी
अधिक करे; हे योनातान, तू निश्चय मारा जाएगा।”
45 परन्तु लोगों ने शाऊल से कहा, “क्या योनातान मारा जाए,
जिसने इस्राएलियों का ऐसा बड़ा छुटकारा किया है? ऐसा न
होगा! यहोवा के जीवन की शपथ, उसके सिर का एक बाल भी
भूमि पर गिरने न पाएगा; क्योंकि आज के दिन उसने परमेश्वर
के साथ होकर काम किया है।” तब प्रजा के लोगों ने योनातान
को बचा लिया, और वह मारा न गया। ***([illegible] 10:30, [illegible] 21:18, [illegible]. 27:34)***
46 तब शाऊल पलिश्तियों का पीछा छोड़कर लौट गया; और
पलिश्ती भी अपने स्थान को चले गए।
47 जब शाऊल इस्राएलियों के राज्य में स्थिर हो गया, तब
वह मोआबी, अम्मोनी, एदोमी, और पलिश्ती, अपने चारों ओर
के सब शत्रुओं से, और सोबा के राजाओं से लड़ा; और जहाँ-जहाँ
वह जाता वहाँ जय पाता था।
48 फिर उसने वीरता करके अमालेकियों को जीता, और
इस्राएलियों को लूटनेवालों के हाथ से छुड़ाया।
49 शाऊल के पुत्र योनातान, यिश्वी, और मल्कीशूअ थे; और
उसकी दो बेटियों के नाम ये थे, बड़ी का नाम तो मेरब और छोटी

का नाम मीकल था।
50 और शाऊल की स्त्री का नाम अहीनोअम था जो अहीमास
की बेटी थी। उसके प्रधान सेनापति का नाम अब्नेर था जो
शाऊल के चाचा नेर का पुत्र था।
51 शाऊल का पिता कीश था, और अब्नेर का पिता नेर
अबीएल का पुत्र था।
52 शाऊल जीवन भर पलिश्तियों से संग्राम करता रहा; जब
जब शाऊल को कोई वीर या अच्छा योद्धा दिखाई पड़ा तब-तब
उसने उसे अपने पास रख लिया।

15

[illegible]

1 शमूएल ने शाऊल से कहा, "यहोवा ने अपनी प्रजा इस्राएल
पर राज्य करने के लिये तेरा अभिषेक करने को मुझे भेजा था;
इसलिए अब यहोवा की बातें सुन ले।
2 सेनाओं का यहोवा यह कहता है, 'मुझे स्मरण आता है कि
अमालेकियों ने इस्राएलियों से क्या किया; जब इस्राएली मिस्र
से आ रहे थे, तब उन्होंने मार्ग में उनका सामना किया।
3 इसलिए अब तू जाकर अमालेकियों को मार, और जो कुछ
उनका है उसे *[illegible]**; क्या
पुरुष, क्या स्त्री, क्या बच्चा, क्या दूध पीता, क्या गाय-बैल, क्या
भेड़-बकरी, क्या ऊँट, क्या गदहा, सब को मार डाल।' "
4 तब शाऊल ने लोगों को बुलाकर इकट्ठा किया, और उन्हें
तलाईम में गिना, और वे दो लाख प्यादे, और दस हजार यहूदी
पुरुष थे।
5 तब शाऊल ने अमालेक नगर के पास जाकर एक घाटी में
घातकों को बैठाया।

---

* **15:3** *[illegible]:* जब कोई नगर नष्ट किया जाता था तब हर एक प्राणी घात किया जाता था और इस प्रकार विजेता के हाथ लूट का माल नहीं लगता था।

6 और शाऊल ने केनियों से कहा, “वहाँ से हटो, अमालेकियों के
मध्य में से निकल जाओ कहीं ऐसा न हो कि मैं उनके साथ तुम्हारा
भी अन्त कर डालूँ; क्योंकि तुम ने सब इस्राएलियों पर उनके मिस्र
से आते समय प्रीति दिखाई थी।” और केनी अमालेकियों के मध्य
में से निकल गए।
7 तब शाऊल ने हवीला से लेकर शूर तक जो मिस्र के पूर्व में है
अमालेकियों को मारा।
8 और [illegible]†, और उसकी
सब प्रजा को तलवार से नष्ट कर डाला।
9 परन्तु अगाग पर, और अच्छी से अच्छी भेड़-बकरियों, गाय-
बैलों, मोटे पशुओं, और मेम्नों, और जो कुछ अच्छा था, उन पर
शाऊल और उसकी प्रजा ने कोमलता की, और उन्हें नष्ट करना
न चाहा; परन्तु जो कुछ तुच्छ और निकम्मा था उसका उन्होंने
सत्यानाश किया।

[illegible]

10 तब यहोवा का यह वचन शमूएल के पास पहुँचा,
11 “मैं शाऊल को राजा बना के [illegible]‡; क्योंकि उसने
मेरे पीछे चलना छोड़ दिया, और मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं
किया।” तब शमूएल का क्रोध भड़का; और वह रात भर यहोवा
की दुहाई देता रहा।
12 जब शमूएल शाऊल से भेंट करने के लिये सवेरे उठा; तब
शमूएल को यह बताया गया, “शाऊल कर्मेल को आया था, और
अपने लिये एक स्मारक खड़ा किया, और घूमकर गिलगाल को
चला गया है।”

---

† **15:8** [illegible]: अगाग को जीवित पकड़ना सर्वनाश का स्पष्ट उल्लंघन था। ‡ **15:11** [illegible]: शमूएल क्रोधित था या अप्रसन्न था कि जिस राजा का उसने अभिषेक किया वह पद से खारिज किया जाए।

13 तब शमूएल शाऊल के पास गया, और शाऊल ने उससे
कहा, “तुझे यहोवा की ओर से आशीष मिले; मैंने यहोवा की आज्ञा
पूरी की है।”
14 शमूएल ने कहा, “फिर भेड़-बकरियों का यह मिमियाना, और
गाय-बैलों का यह रम्भाना जो मुझे सुनाई देता है, यह क्यों हो
रहा है?”
15 शाऊल ने कहा, “वे तो अमालेकियों के यहाँ से आए हैं;
अर्थात् प्रजा के लोगों ने अच्छी से अच्छी भेड़-बकरियों और
गाय-बैलों को तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये बलि करने को छोड़
दिया है; और बाकी सब का तो हमने सत्यानाश कर दिया है।”
16 तब शमूएल ने शाऊल से कहा, “ठहर जा! और जो बात
यहोवा ने आज रात को मुझसे कही है वह मैं तुझको बताता हूँ।”
उसने कहा, “कह दे।”
17 शमूएल ने कहा, “जब तू अपनी दृष्टि में छोटा था, तब
क्या तू इस्राएली गोत्रों का प्रधान न हो गया?, और क्या यहोवा
ने इस्राएल पर राज्य करने को तेरा अभिषेक नहीं किया?
18 और यहोवा ने तुझे एक विशेष कार्य करने को भेजा, और
कहा, ‘जाकर उन पापी अमालेकियों का सत्यानाश कर, और जब
तक वे मिट न जाएँ, तब तक उनसे लड़ता रह।’
19 फिर तूने किस लिये यहोवा की यह बात टालकर लूट पर
टूट के वह काम किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है?”
20 शाऊल ने शमूएल से कहा, “निःसन्देह मैंने यहोवा की बात
मानकर जिधर यहोवा ने मुझे भेजा उधर चला, और अमालेकियों
के राजा को ले आया हूँ, और अमालेकियों का सत्यानाश किया
है।
21 परन्तु प्रजा के लोग लूट में से भेड़-बकरियों, और गाय-बैलों,
अर्थात् नष्ट होने की उत्तम-उत्तम वस्तुओं को गिलगाल में तेरे
परमेश्वर यहोवा के लिये बलि चढ़ाने को ले आए हैं।”

22 शमूएल ने कहा,
“क्या यहोवा होमबलियों, और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है,
जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है?
सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है। ***(??. 12:32,33)***
23 देख, बलवा करना और भावी कहनेवालों से पूछना एक ही समान पाप है,
और हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है।
तूने जो यहोवा की बात को तुच्छ जाना,
इसलिए उसने तुझे राजा होने के लिये तुच्छ जाना है।”
24 शाऊल ने शमूएल से कहा, “मैंने पाप किया है; मैंने तो
अपनी प्रजा के लोगों का भय मानकर और उनकी बात सुनकर
यहोवा की आज्ञा और तेरी बातों का उल्लंघन किया है।
25 परन्तु अब मेरे पाप को क्षमा कर, और मेरे साथ लौट आ,
कि मैं यहोवा को दण्डवत् करूँ।”
26 शमूएल ने शाऊल से कहा, “मैं तेरे साथ न लौटूँगा; क्योंकि
तूने यहोवा की बात को तुच्छ जाना है, और यहोवा ने तुझे
इस्राएल का राजा होने के लिये तुच्छ जाना है।”
27 तब शमूएल जाने के लिये घूमा, और शाऊल ने उसके बागे
की छोर को पकड़ा, और वह फट गया।
28 तब शमूएल ने उससे कहा, “आज यहोवा ने इस्राएल के
राज्य को फाड़कर तुझ से छीन लिया, और तेरे एक पड़ोसी को
जो तुझ से अच्छा है दे दिया है।
29 और जो इस्राएल का बलमूल है वह न तो झूठ बोलता और न
पछताता है; क्योंकि वह मनुष्य नहीं है, कि पछताए।” ***(??????. 6:18)***

30 उसने कहा, “मैंने पाप तो किया है; तो भी मेरी प्रजा के
पुरनियों और इस्राएल के सामने मेरा आदर कर, और मेरे साथ
लौट, कि मैं तेरे परमेश्वर यहोवा को दण्डवत् करूँ।”
31 तब शमूएल लौटकर शाऊल के पीछे गया; और शाऊल ने
यहोवा को दण्डवत् की।
32 तब शमूएल ने कहा, “अमालेकियों के राजा अगाग को मेरे
पास ले आओ।” तब अगाग आनन्द के साथ यह कहता हुआ
उसके पास गया, “निश्चय मृत्यु का दुःख जाता रहा।”
33 शमूएल ने कहा, “जैसे स्त्रियाँ तेरी तलवार से निर्वंश हुई
हैं, वैसे ही तेरी माता स्त्रियों में निर्वंश होगी।” तब शमूएल ने
अगाग को गिलगाल में यहोवा के सामने टुकड़े-टुकड़े किया।
34 तब शमूएल रामाह को चला गया; और शाऊल अपने नगर
गिबा को अपने घर गया।
35 और शमूएल ने अपने जीवन भर शाऊल से फिर भेंट न की,
क्योंकि शमूएल शाऊल के लिये विलाप करता रहा। और यहोवा
शाऊल को इस्राएल का राजा बनाकर पछताता था।

16

[illegible]

1 यहोवा ने शमूएल से कहा, “मैंने शाऊल को इस्राएल पर
राज्य करने के लिये तुच्छ जाना है, तू कब तक उसके विषय
विलाप करता रहेगा? अपने सींग में तेल भरकर चल; मैं
तुझको बैतलहमवासी यिशै के पास भेजता हूँ, क्योंकि मैंने *[illegible]*
[illegible]
[illegible][*]।” ***([illegible] 3:31,32)***

---

* **16:1** *[illegible]*:
परमेश्वर का उद्देश्य था कि शाऊल का उत्तराधिकारी होने के लिये दाऊद का अभिषेक
किया जाए। परमेश्वर का उद्देश्य यह नहीं था कि शमूएल दाऊद को शाऊल का विरोधी
बनाकर युद्ध करे।

2 शमूएल बोला, “मैं कैसे जा सकता हूँ? यदि शाऊल सुन
लेगा, तो मुझे घात करेगा।” यहोवा ने कहा, “एक बछिया साथ
ले जाकर कहना, ‘मैं यहोवा के लिये यज्ञ करने को आया हूँ।’
3 और यज्ञ पर यिशै को न्योता देना, तब मैं तुझे बता दूँगा कि
तुझको क्या करना है; और जिसको मैं तुझे बताऊँ उसी का मेरी
ओर से अभिषेक करना।”
4 तब शमूएल ने यहोवा के कहने के अनुसार किया, और
बैतलहम को गया। उस नगर के पुरनिये *[illegible] [illegible]*† उससे
मिलने को गए, और कहने लगे, “क्या तू मित्रभाव से आया है कि
नहीं?”
5 उसने कहा, “हाँ, मित्रभाव से आया हूँ; मैं यहोवा के लिये यज्ञ
करने को आया हूँ; तुम अपने-अपने को पवित्र करके मेरे साथ यज्ञ
में आओ।” तब उसने यिशै और उसके पुत्रों को पवित्र करके यज्ञ
में आने का न्योता दिया।
6 जब वे आए, तब उसने एलीआब पर दृष्टि करके सोचा,
“निश्चय यह जो यहोवा के सामने है वही उसका अभिषिक्त
होगा।”
7 परन्तु यहोवा ने शमूएल से कहा, “न तो उसके रूप पर दृष्टि
कर, और न उसके कद की ऊँचाई पर, क्योंकि मैंने उसे अयोग्य
जाना है; क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य
तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती
है।” ***([illegible] 22:18, [illegible]. 2:8, [illegible]. 2:25)***
8 तब यिशै ने अबीनादाब को बुलाकर शमूएल के सामने भेजा।
और उससे कहा, “यहोवा ने इसको भी नहीं चुना।”
9 फिर यिशै ने शम्मा को सामने भेजा। और उसने कहा, “यहोवा
ने इसको भी नहीं चुना।”

---

† **16:4** *[illegible] [illegible]:* शमूएल का बैतलहम आगमन स्पष्टत: एक असाधारण बात थी और अगुए जानते थे कि शमूएल शाऊल के साथ मित्रता के सम्बंध में नहीं है, किसी बुराई की शंका में थे।

10 इस प्रकार यिशै ने अपने सात पुत्रों को शमूएल के सामने भेजा। और शमूएल यिशै से कहता गया, “यहोवा ने इन्हें नहीं चुना।”

11 तब शमूएल ने यिशै से कहा, “क्या सब लड़के आ गए?” वह बोला, “नहीं, छोटा तो रह गया, और वह भेड़-बकरियों को चरा रहा है।” शमूएल ने यिशै से कहा, “उसे बुलवा भेज; क्योंकि जब तक वह यहाँ न आए तब तक हम खाने को न बैठेंगे।”

12 तब वह उसे बुलाकर भीतर ले आया। उसके तो लाली झलकती थी, और उसकी आँखें सुन्दर, और उसका रूप सुडौल था। तब यहोवा ने कहा, “उठकर इसका अभिषेक कर: यही है।”

13 तब शमूएल ने अपना तेल का सींग लेकर उसके भाइयों के मध्य में उसका अभिषेक किया; और उस दिन से लेकर भविष्य को यहोवा का आत्मा दाऊद पर बल से उतरता रहा। तब शमूएल उठकर रामाह को चला गया। ***(▯▯▯▯▯▯▯. 13:22)***

14 यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया, और यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे घबराने लगा।

15 और शाऊल के कर्मचारियों ने उससे कहा, “सुन, परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट आत्मा तुझे घबराता है।

16 हमारा प्रभु अपने कर्मचारियों को जो उपस्थित हैं आज्ञा दे, कि वे किसी अच्छे वीणा बजानेवाले को ढूँढ़ ले आएँ; और जब जब परमेश्वर की ओर से दुष्ट आत्मा तुझ पर चढ़े, तब-तब वह अपने हाथ से बजाए, और तू अच्छा हो जाए।”

17 शाऊल ने अपने कर्मचारियों से कहा, “अच्छा, एक उत्तम वीणा-वादक देखो, और उसे मेरे पास लाओ।”

18 तब एक जवान ने उत्तर देके कहा, “सुन, मैंने बैतलहमवासी यिशै के एक पुत्र को देखा जो वीणा बजाना जानता है, और वह वीर योद्धा भी है, और बात करने में बुद्धिमान और रूपवान भी है;

और *[illegible]*‡।”
19 तब शाऊल ने दूतों के हाथ यिशै के पास कहला भेजा,
“अपने पुत्र दाऊद को जो भेड़-बकरियों के साथ रहता है मेरे पास
भेज दे।”
20 तब यिशै ने रोटी से लदा हुआ एक गदहा, और कुप्पा भर
दाखमधु, और बकरी का एक बच्चा लेकर अपने पुत्र दाऊद के
हाथ से शाऊल के पास भेज दिया।
21 और दाऊद शाऊल के पास जाकर उसके सामने उपस्थित
रहने लगा। और शाऊल उससे बहुत प्रीति करने लगा, और वह
उसका हथियार ढोनेवाला हो गया।
22 तब शाऊल ने यिशै के पास कहला भेजा, “दाऊद को मेरे
सामने उपस्थित रहने दे, क्योंकि मैं उससे बहुत प्रसन्न हूँ।”
23 और जब जब परमेश्वर की ओर से वह आत्मा शाऊल पर
चढ़ता था, तब-तब दाऊद वीणा लेकर बजाता; और शाऊल चैन
पाकर अच्छा हो जाता था, और वह दुष्ट आत्मा उसमें से हट
जाता था।

17

[illegible]

1 अब पलिश्तियों ने युद्ध के लिये अपनी सेनाओं को इकट्ठा
किया; और यहूदा देश के सोको में एक साथ होकर सोको और
अजेका के बीच एपेसदम्मीम में डेरे डाले।
2 शाऊल और इस्राएली पुरुषों ने भी इकट्ठे होकर एला नामक
तराई में डेरे डाले, और युद्ध के लिये पलिश्तियों के विरुद्ध पाँति
बाँधी।
3 पलिश्ती तो एक ओर के पहाड़ पर और इस्राएली दूसरी ओर
के पहाड़ पर खड़े रहे; और दोनों के बीच तराई थी।

‡ **16:18** *[illegible]*: दाऊद की वीरता बुद्धिमानी और कोशल्य तथा रूप की ख्याति सर्वत्र व्याप्त थी। जब परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरता था तब उसके प्राकृतिक गुण और क्षमता में असीम वृद्धि हो जाती थी।

4 तब पलिश्तियों की छावनी में से गोलियत नामक एक वीर
निकला, जो गत नगर का था, और उसकी लम्बाई छः हाथ एक
बित्ता थी।
5 उसके सिर पर पीतल का टोप था; और वह एक पत्तर का
झिलम पहने हुए था, जिसका तौल पाँच हजार शेकेल पीतल का
था।
6 उसकी टाँगों पर पीतल के कवच थे, और उसके कंधों के बीच
बरछी बंधी थी।
7 उसके भाले की छड़ जुलाहे के डोंगी के समान थी, और उस
भाले का फल छः सौ शेकेल लोहे का था, और बड़ी ढाल लिए
हुए एक जन उसके आगे-आगे चलता था
8 वह खड़ा होकर इस्राएली पाँतियों को ललकार के बोला,
"तुम ने यहाँ आकर लड़ाई के लिये क्यों पाँति बाँधी है? क्या
मैं पलिश्ती नहीं हूँ, और तुम शाऊल के अधीन नहीं हो? अपने
में से एक पुरुष चुनो, कि वह मेरे पास उतर आए।
9 यदि वह मुझसे लड़कर मुझे मार सके, तब तो हम तुम्हारे
अधीन हो जाएँगे; परन्तु यदि मैं उस पर प्रबल होकर मारूँ, तो
तुम को हमारे अधीन होकर हमारी सेवा करनी पड़ेगी।"
10 फिर वह पलिश्ती बोला, "मैं आज के दिन इस्राएली पाँतियों
को ललकारता हूँ, किसी पुरुष को मेरे पास भेजो, कि हम एक दूसरे
से लड़ें।"
11 उस पलिश्ती की इन बातों को सुनकर शाऊल और समस्त
इस्राएलियों का मन कच्चा हो गया, और वे अत्यन्त डर गए।
12 दाऊद यहूदा के बैतलहम के उस एप्राती पुरुष का पुत्र था,
जिसका नाम यिशै था, और उसके आठ पुत्र थे और वह पुरुष
शाऊल के दिनों में बूढ़ा और निर्बल हो गया था।
13 यिशै के तीन बड़े पुत्र शाऊल के पीछे होकर लड़ने को गए थे;
और उसके तीन पुत्रों के नाम जो लड़ने को गए थे, ये थे, अर्थात्
ज्येष्ठ का नाम एलीआब, दूसरे का अबीनादाब, और तीसरे का

शम्मा था।
14 सबसे छोटा दाऊद था; और तीनों बड़े पुत्र शाऊल के पीछे
होकर गए थे,
15 और दाऊद बैतलहम में अपने पिता की भेड़ बकरियाँ चराने
को शाऊल के पास से आया-जाया करता था।
16 वह पलिश्ती तो चालीस दिन तक सवेरे और साँझ को निकट
जाकर खड़ा हुआ करता था।
17 यिशै ने अपने पुत्र दाऊद से कहा, "यह एपा भर भुना हुआ
अनाज, और ये दस रोटियाँ लेकर छावनी में अपने भाइयों के
पास दौड़ जा;
18 और पनीर की ये दस टिकियाँ उनके सहस्त्रपति के लिये ले
जा। और अपने भाइयों का कुशल देखकर उनकी कोई निशानी ले
आना।
19 शाऊल, और तेरे भाई, और समस्त इस्राएली पुरुष एला
नामक तराई में पलिश्तियों से लड़ रहे है।"
20 अत: दाऊद सवेरे उठ, भेड़ बकरियों को किसी रखवाले के
हाथ में छोड़कर, यिशै की आज्ञा के अनुसार उन वस्तुओं को लेकर
चला; और जब सेना रणभूमि को जा रही, और संग्राम के लिये
ललकार रही थी, उसी समय वह गाड़ियों के पड़ाव पर पहुँचा।
21 तब इस्राएलियों और पलिश्तियों ने अपनी-अपनी सेना
आमने-सामने करके पाँति बाँधी।
22 दाऊद अपनी सामग्री सामान के रखवाले के हाथ में
छोड़कर रणभूमि को दौड़ा, और अपने भाइयों के पास जाकर
उनका कुशल क्षेम पूछा।
23 वह उनके साथ बातें कर ही रहा था, कि पलिश्तियों की
पाँतियों में से वह वीर, अर्थात् गतवासी गोलियत नामक वह
पलिश्ती योद्धा चढ़ आया, और पहले की सी बातें कहने लगा।
और दाऊद ने उन्हें सुना।
24 उस पुरुष को देखकर सब इस्राएली अत्यन्त भय खाकर
उसके सामने से भागे।

25 फिर इस्राएली पुरुष कहने लगे, “क्या तुम ने उस पुरुष
को देखा है जो चढ़ा आ रहा है? निश्चय वह इस्राएलियों को
ललकारने को चढ़ा आता है; और जो कोई उसे मार डालेगा उसको
राजा बहुत धन देगा, और अपनी बेटी का विवाह उससे कर देगा,
और उसके पिता के घराने को इस्राएल में स्वतंत्र कर देगा।”
26 तब दाऊद ने उन पुरुषों से जो उसके आस-पास खड़े थे पूछा,
“जो उस पलिश्ती को मारकर इस्राएलियों की नामधराई दूर
करेगा उसके लिये क्या किया जाएगा? वह खतनारहित पलिश्ती
क्या है कि जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारे?”
27 तब लोगों ने उससे वही बातें कहीं, अर्थात् यह, कि जो कोई
उसे मारेगा उससे ऐसा-ऐसा किया जाएगा।

28 जब दाऊद उन मनुष्यों से बातें कर रहा था, तब उसका
बड़ा भाई एलीआब सुन रहा था; और एलीआब दाऊद से बहुत
क्रोधित होकर कहने लगा, “तू यहाँ क्यों आया है? और जंगल
में उन थोड़ी सी भेड़ बकरियों को तू किसके पास छोड़ आया है?
तेरा अभिमान और तेरे मन की बुराई मुझे मालूम है; तू तो लड़ाई
देखने के लिये यहाँ आया है।”
29 दाऊद ने कहा, “अब मैंने क्या किया है? वह तो निरी बात
थी।”
30 तब उसने उसके पास से मुँह फेर के दूसरे के सम्मुख होकर
वैसी ही बात कही; और लोगों ने उसे पहले के समान उत्तर दिया।
31 जब दाऊद की बातों की चर्चा हुई, तब शाऊल को भी सुनाई
गई; और उसने उसे बुलवा भेजा।
32 तब दाऊद ने शाऊल से कहा, “किसी मनुष्य का मन उसके
कारण कच्चा न हो; तेरा दास जाकर उस पलिश्ती से लड़ेगा।”
33 शाऊल ने दाऊद से कहा, “तू जाकर उस पलिश्ती के
विरुद्ध युद्ध नहीं कर सकता; क्योंकि तू तो लड़का ही है, और वह
लड़कपन ही से योद्धा है।” ***(□□□□□. 11:33)***

34 दाऊद ने शाऊल से कहा, “तेरा दास अपने पिता की भेड़-
बकरियाँ चराता था; और जब कोई सिंह या भालू झुण्ड में से मेम्ना
उठा ले जाता,
35 तब मैं उसका पीछा करके उसे मारता, और मेम्ने को उसके
मुँह से छुड़ा लेता; और जब वह मुझ पर हमला करता, तब मैं
उसके केश को पकड़कर उसे मार डालता।
36 तेरे दास ने सिंह और भालू दोनों को मारा है। और वह
खतनारहित पलिश्ती उनके समान हो जाएगा, क्योंकि उसने
जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारा है।”
37 फिर दाऊद ने कहा, “यहोवा जिसने मुझे सिंह और भालू
दोनों के पंजे से बचाया है, वह मुझे उस पलिश्ती के हाथ से
भी बचाएगा।” शाऊल ने दाऊद से कहा, “जा, यहोवा तेरे साथ
रहे।”
38 तब शाऊल ने अपने वस्त्र दाऊद को पहनाए, और पीतल
का टोप उसके सिर पर रख दिया, और झिलम उसको पहनाया।
39 तब दाऊद ने उसकी तलवार वस्त्र के ऊपर कसी, और चलने
का यत्न किया; उसने तो उनको न परखा था। इसलिए दाऊद ने
शाऊल से कहा, “इन्हें पहने हुए मुझसे चला नहीं जाता, क्योंकि
मैंने इन्हें नहीं परखा है।” और दाऊद ने उन्हें उतार दिया।
40 तब उसने अपनी लाठी हाथ में ली और नदी में से पाँच
चिकने पत्थर छाँटकर अपनी चरवाही की थैली, अर्थात् अपने
झोले में रखे; और अपना गोफन हाथ में लेकर पलिश्ती के निकट
गया।
41 और पलिश्ती चलते-चलते दाऊद के निकट पहुँचने लगा,
और जो जन उसकी बड़ी ढाल लिए था वह उसके आगे-आगे
चला।
42 जब पलिश्ती ने दृष्टि करके दाऊद को देखा, तब उसे तुच्छ
जाना; क्योंकि वह लड़का ही था, और उसके मुख पर लाली
झलकती थी, और वह सुन्दर था।

43 तब पलिश्ती ने दाऊद से कहा, "क्या मैं कुत्ता हूँ, कि तू लाठी
लेकर मेरे पास आता है?" तब पलिश्ती अपने देवताओं के नाम
लेकर दाऊद को कोसने लगा।
44 फिर पलिश्ती ने दाऊद से कहा, "मेरे पास आ, मैं तेरा माँस
आकाश के पक्षियों और वन-पशुओं को दे दूँगा।"
45 दाऊद ने पलिश्ती से कहा, "तू तो तलवार और भाला और
सांग लिए हुए मेरे पास आता है; परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के
नाम से तेरे पास आता हूँ, जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है, और
उसी को तूने ललकारा है।
46 आज के दिन यहोवा तुझको मेरे हाथ में कर देगा, और मैं
तुझको मारूँगा, और तेरा सिर तेरे धड़ से अलग करूँगा; और मैं
आज के दिन पलिश्ती सेना के शव आकाश के पक्षियों को दे दूँगा;
तब समस्त पृथ्वी के लोग जान लेंगे कि इस्राएल में एक परमेश्वर
है।
47 और यह समस्त मण्डली जान लेगी कि यहोवा तलवार या
भाले के द्वारा जयवन्त नहीं करता, इसलिए कि संग्राम तो यहोवा
का है, और वही तुम्हें हमारे हाथ में कर देगा।"
48 जब पलिश्ती उठकर दाऊद का सामना करने के लिये निकट
आया, तब दाऊद सेना की ओर पलिश्ती का सामना करने के लिये
फुर्ती से दौड़ा। ***(??. 27:3)***
49 फिर दाऊद ने अपनी थैली में हाथ डालकर उसमें से एक
पत्थर निकाला, और उसे गोफन में रखकर पलिश्ती के माथे पर
ऐसा मारा कि पत्थर उसके माथे के भीतर घुस गया, और वह भूमि
पर मुँह के बल गिर पड़ा।
50 अतः दाऊद ने पलिश्ती पर गोफन और एक ही पत्थर के
द्वारा प्रबल होकर उसे मार डाला; परन्तु दाऊद के हाथ में तलवार
न थी।
51 तब दाऊद दौड़कर पलिश्ती के ऊपर खड़ा हो गया, और
उसकी तलवार पकड़कर म्यान से खींची, और उसको घात किया,

और उसका सिर उसी तलवार से काट डाला। यह देखकर कि
हमारा वीर मर गया पलिश्ती भाग गए।
52 इस पर इस्राएली और यहूदी पुरुष ललकार उठे, और गत
और एक्रोन से फाटकों तक पलिश्तियों का पीछा करते गए, और
घायल पलिश्ती *▯▯▯▯▯▯▯*[*] के मार्ग में और गत और एक्रोन तक
गिरते गए। ***(▯▯▯. 15:36)***
53 तब इस्राएली पलिश्तियों का पीछा छोड़कर लौट आए,
और उनके डेरों को लूट लिया।
54 और दाऊद पलिश्ती का सिर यरूशलेम में ले गया; और
उसके हथियार अपने डेरे में रख लिए।
55 जब शाऊल ने दाऊद को उस पलिश्ती का सामना करने के
लिये जाते देखा, तब उसने अपने सेनापति अब्नेर से पूछा, "हे
अब्नेर, वह जवान किसका पुत्र है?" अब्नेर ने कहा, "हे राजा,
तेरे जीवन की शपथ, मैं नहीं जानता।"
56 राजा ने कहा, "तू पूछ ले कि वह जवान किसका पुत्र है।"
57 जब दाऊद पलिश्ती को मारकर लौटा, तब अब्नेर ने उसे
पलिश्ती का सिर हाथ में लिए हुए शाऊल के सामने पहुँचाया।
58 शाऊल ने उससे पूछा, "हे जवान, तू किसका पुत्र है?"
दाऊद ने कहा, "मैं तो तेरे दास बैतलहमवासी यिशै का पुत्र हूँ।"

18

▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯

1 जब वह शाऊल से बातें कर चुका, तब योनातान का मन
दाऊद पर ऐसा लग गया, कि योनातान उसे अपने प्राण के समान
प्यार करने लगा।
2 और उस दिन शाऊल ने उसे अपने पास रखा, और पिता के
घर लौटने न दिया।

---

[*] **17:52** *▯▯▯▯▯▯▯:* यहूदा के शपेला का एक नगर जो इस समय पलिश्तियों के अधीन था।

3 तब योनातान ने दाऊद से वाचा बाँधी, क्योंकि वह उसको
अपने प्राण के समान प्यार करता था।
4 योनातान ने अपना बागा जो वह स्वयं पहने था उतारकर
अपने वस्त्र समेत दाऊद को दे दिया, वरन् अपनी तलवार और
धनुष और कमरबन्ध भी उसको दे दिए।
5 और जहाँ कहीं शाऊल दाऊद को भेजता था वहाँ वह जाकर
बुद्धिमानी के साथ काम करता था; अतः शाऊल ने उसे योद्धाओं
का प्रधान नियुक्त किया। और समस्त प्रजा के लोग और शाऊल
के कर्मचारी उससे प्रसन्न थे।

[illegible]

6 जब दाऊद उस पलिश्ती को मारकर लौट रहा था, और वे
सब लोग भी आ रहे थे, तब सब इस्राएली नगरों से स्त्रियों ने
निकलकर डफ और तिकोने बाजे लिए हुए, आनन्द के साथ गाती
और नाचती हुई, शाऊल राजा के स्वागत में निकलीं।
7 और वे स्त्रियाँ नाचती हुई एक दूसरे के साथ यह गाती गईं,

“शाऊल ने तो हजारों को, परन्तु दाऊद ने लाखों को मारा है।”

8 तब शाऊल अति क्रोधित हुआ, और यह बात उसको बुरी
लगी; और वह कहने लगा, “उन्होंने दाऊद के लिये तो लाखों
और मेरे लिये हजारों ही ठहराया; इसलिए अब राज्य को छोड़
उसको अब क्या मिलना बाकी है?”
9 उस दिन से शाऊल दाऊद की ताक में लगा रहा।
10 दूसरे दिन परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट आत्मा शाऊल
पर बल से उतरा, और वह अपने घर के भीतर नबूवत करने लगा;
दाऊद प्रतिदिन के समान अपने हाथ से बजा रहा था और शाऊल
अपने हाथ में अपना भाला लिए हुए था;
11 तब शाऊल ने यह सोचकर कि “मैं ऐसा मारूँगा कि भाला
दाऊद को बेधकर दीवार में धँस जाए,” भाले को चलाया, परन्तु
दाऊद उसके सामने से दोनों बार हट गया।

12 शाऊल दाऊद से डरा करता था, क्योंकि यहोवा दाऊद के
साथ था और शाऊल के पास से अलग हो गया था।
13 शाऊल ने उसको अपने पास से अलग करके सहस्त्रपति
किया, और वह प्रजा के सामने आया-जाया करता था।
14 और दाऊद अपनी समस्त चाल में बुद्धिमानी दिखाता था;
और यहोवा उसके साथ-साथ था।
15 जब शाऊल ने देखा कि वह बहुत बुद्धिमान है, तब वह उससे
डर गया।
16 परन्तु इस्राएल और यहूदा के समस्त लोग दाऊद से प्रेम
रखते थे; क्योंकि वह उनके आगे-आगे आया-जाया करता था।

[illegible]

17 शाऊल ने यह सोचकर कि "मेरा हाथ नहीं, वरन् पलिश्तियों
ही का हाथ दाऊद पर पड़े," उससे कहा, "सुन, मैं अपनी बड़ी बेटी
मेरब से तेरा विवाह कर दूँगा; इतना कर, कि तू मेरे लिये वीरता
के साथ यहोवा की ओर से युद्ध कर।"
18 दाऊद ने शाऊल से कहा, "मैं क्या हूँ, और मेरा जीवन क्या
है, और इस्राएल में मेरे पिता का कुल क्या है, कि मैं राजा का
दामाद हो जाऊँ?"
19 जब समय आ गया कि शाऊल की बेटी मेरब का दाऊद से
विवाह किया जाए, तब वह महोलाई अद्रीएल से ब्याह दी गई।
20 और शाऊल की बेटी मीकल दाऊद से प्रीति रखने लगी;
और जब इस बात का समाचार शाऊल को मिला, तब *[illegible]*
*[illegible]**।
21 शाऊल तो सोचता था, कि वह उसके लिये फंदा हो, और
पलिश्तियों का हाथ उस पर पड़े। और शाऊल ने दाऊद से कहा,
"अब की बार तो तू अवश्य ही मेरा दामाद हो जाएगा।"
22 फिर शाऊल ने अपने कर्मचारियों को आज्ञा दी, "दाऊद से
छिपकर ऐसी बातें करो, 'सुन, राजा तुझ से प्रसन्न है, और उसके

* **18:20** *[illegible]*: इससे उसे विश्वास से टल जाने के आरोप से कुछ सीमा तक राहत मिली।

सब कर्मचारी भी तुझ से प्रेम रखते हैं; इसलिए अब तू राजा का
दामाद हो जा।' "
23 तब शाऊल के कर्मचारियों ने दाऊद से ऐसी ही बातें कहीं।
परन्तु दाऊद ने कहा, "मैं तो निर्धन और तुच्छ मनुष्य हूँ, फिर
क्या तुम्हारी दृष्टि में राजा का दामाद होना छोटी बात है?"
24 जब शाऊल के कर्मचारियों ने उसे बताया, कि दाऊद ने
ऐसी-ऐसी बातें कहीं।
25 तब शाऊल ने कहा, "तुम दाऊद से यह कहो, 'राजा कन्या
का मोल तो कुछ नहीं चाहता, केवल पलिश्तियों की एक सौ
खलड़ियाँ चाहता है, कि वह अपने शत्रुओं से बदला ले।' " शाऊल
की योजना यह थी, कि पलिश्तियों से दाऊद को मरवा डाले।
26 जब उसके कर्मचारियों ने दाऊद को ये बातें बताईं, तब वह
राजा का दामाद होने को प्रसन्न हुआ। जब *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]*†,
27 तब दाऊद अपने जनों को संग लेकर चला, और पलिश्तियों
के दो सौ पुरुषों को मारा; तब दाऊद उनकी खलड़ियों को ले
आया, और वे राजा को गिन-गिनकर दी गईं, इसलिए कि वह
राजा का दामाद हो जाए। अतः शाऊल ने अपनी बेटी मीकल
का उससे विवाह कर दिया।
28 जब शाऊल ने देखा, और निश्चय किया कि यहोवा दाऊद
के साथ है, और मेरी बेटी मीकल उससे प्रेम रखती है,
29 तब शाऊल दाऊद से और भी डर गया। इसलिए शाऊल
सदा के लिये दाऊद का बैरी बन गया।
30 फिर पलिश्तियों के प्रधान निकल आए, और जब जब वे
निकल आए तब-तब दाऊद ने शाऊल के सब कर्मचारियों से
अधिक बुद्धिमानी दिखाई; इससे उसका नाम बहुत बड़ा हो गया।

---

† **18:26** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* दाऊद पलिश्तियों पर आक्रमण करने में ऐसा तीव्र था कि समय समाप्त होने से पूर्व वह दहेज ले आया और अपनी पत्नी मीकल को प्राप्त किया।

19

[illegible]

1 शाऊल ने अपने पुत्र योनातान और अपने सब कर्मचारियों
से दाऊद को मार डालने की चर्चा की। परन्तु शाऊल का पुत्र
योनातान दाऊद से बहुत प्रसन्न था।
2 योनातान ने दाऊद को बताया, “मेरा पिता तुझे मरवा
डालना चाहता है; इसलिए तू सवेरे सावधान रहना, और किसी
गुप्त स्थान में बैठा हुआ छिपा रहना;
3 और मैं मैदान में जहाँ तू होगा वहाँ जाकर अपने पिता के पास
खड़ा होकर उससे तेरी चर्चा करूँगा; और यदि मुझे कुछ मालूम
हो तो तुझे बताऊँगा।”
4 योनातान ने अपने पिता शाऊल से दाऊद की प्रशंसा करके
उससे कहा, “हे राजा, अपने दास दाऊद का अपराधी न हो;
क्योंकि उसने तेरे विरुद्ध कोई अपराध नहीं किया, वरन् उसके सब
काम तेरे बहुत हित के हैं;
5 उसने अपने प्राण पर खेलकर उस पलिश्ती को मार डाला,
और यहोवा ने समस्त इस्राएलियों की बड़ी जय कराई। इसे
देखकर तू आनन्दित हुआ था; और तू दाऊद को अकारण मारकर
निर्दोष के खून का पापी क्यों बने?”
6 तब शाऊल ने योनातान की बात मानकर यह शपथ खाई,
“यहोवा के जीवन की शपथ, दाऊद मार डाला न जाएगा।”
7 तब योनातान ने दाऊद को बुलाकर ये समस्त बातें उसको
बताईं। फिर योनातान दाऊद को शाऊल के पास ले गया, और
वह पहले की समान उसके सामने रहने लगा।

8 तब लड़ाई फिर होने लगी; और दाऊद जाकर पलिश्तियों से
लड़ा, और उन्हें बड़ी मार से मारा, और वे उसके सामने से भाग
गए।

9 जब शाऊल हाथ में भाला लिए हुए घर में बैठा था; और
दाऊद हाथ से वीणा बजा रहा था, तब यहोवा की ओर से एक
दुष्ट आत्मा शाऊल पर चढ़ा।
10 शाऊल ने चाहा, कि दाऊद को ऐसा मारे कि भाला उसे
बेधते हुए दीवार में धँस जाए; परन्तु *[illegible]*
*[illegible]** कि भाला जाकर दीवार ही में धँस गया। और
दाऊद भागा, और उस रात को बच गया।
11 तब शाऊल ने दाऊद के घर पर दूत इसलिए भेजे कि वे
उसकी घात में रहें, और सवेरे उसे मार डालें, तब दाऊद की स्त्री
मीकल ने उसे यह कहकर जताया, “यदि तू इस रात को अपना
प्राण न बचाए, तो सवेरे मारा जाएगा।”
12 तब मीकल ने दाऊद को खिड़की से उतार दिया; और वह
भागकर बच निकला।
13 तब मीकल ने गृहदेवताओं को ले चारपाई पर लिटाया, और
बकरियों के रोए की तकिया उसके सिरहाने पर रखकर उनको वस्त्र
ओढ़ा दिए।
14 जब शाऊल ने दाऊद को पकड़ लाने के लिये दूत भेजे, तब
वह बोली, “वह तो बीमार है।”
15 तब शाऊल ने दूतों को दाऊद के देखने के लिये भेजा, और
कहा, “उसे चारपाई समेत मेरे पास लाओ कि मैं उसे मार डालूँ।”
16 जब दूत भीतर गए, तब क्या देखते हैं कि चारपाई पर
गृहदेवता पड़े हैं, और सिरहाने पर बकरियों के रोए की तकिया
है।
17 अतः शाऊल ने मीकल से कहा, “तूने मुझे ऐसा धोखा क्यों
दिया? तूने मेरे शत्रु को ऐसे क्यों जाने दिया कि वह बच निकला
है?” मीकल ने शाऊल से कहा, “उसने मुझसे कहा, ‘मुझे जाने दे;

---

* **19:10** *[illegible]*: अब दाऊद का भगोड़ा और बहिष्कृत जीवन आरम्भ होता है जबकि वह निर्दोष एवं निरपराध था:

[illegible]† ।”

18 दाऊद भागकर बच निकला, और रामाह में शमूएल के पास पहुँचकर जो कुछ शाऊल ने उससे किया था सब उसे कह सुनाया। तब वह और शमूएल जाकर नबायोत में रहने लगे।

19 जब शाऊल को इसका समाचार मिला कि दाऊद रामाह में के नबायोत में है,

20 तब शाऊल ने दाऊद को पकड़ लाने के लिये दूत भेजे; और जब शाऊल के दूतों ने नबियों के दल को नबूवत करते हुए, और शमूएल को उनकी प्रधानता करते हुए देखा, तब परमेश्वर का आत्मा उन पर चढ़ा, और वे भी नबूवत करने लगे।

21 इसका समाचार पाकर शाऊल ने और दूत भेजे, और वे भी नबूवत करने लगे। फिर शाऊल ने तीसरी बार दूत भेजे, और वे भी नबूवत करने लगे।

22 तब वह आप ही रामाह को चला, और उस बड़े गड्ढे पर जो सेकू में है पहुँचकर पूछने लगा, “शमूएल और दाऊद कहाँ है?” किसी ने कहा, “वे तो रामाह के नबायोत में हैं।”

23 तब वह उधर, अर्थात् रामाह के नबायोत को चला; और परमेश्वर का आत्मा उस पर भी चढ़ा, और वह रामाह के नबायोत को पहुँचने तक नबूवत करता हुआ चला गया।

24 और उसने भी अपने वस्त्र उतारे, और शमूएल के सामने नबूवत करने लगा, और भूमि पर गिरकर दिन और रात नंगा पड़ा रहा। इस कारण से यह कहावत चली, “क्या शाऊल भी नबियों में से है?”

20

[illegible]

† **19:17** *[illegible]*: अपने आपको शाऊल के क्रोध से बचाने के लिये उसने कहा कि यदि वह मानने में दाऊद की सहायता नहीं करती तो वह उसे जान से मारने की धमकी दे रहा था।

1 फिर दाऊद रामाह के नबायोत से भागा, और योनातान के
पास जाकर कहने लगा, "मैंने क्या किया है? मुझसे क्या पाप
हुआ? मैंने तेरे पिता की दृष्टि में ऐसा कौन सा अपराध किया है,
कि वह मेरे प्राण की खोज में रहता है?"
2 उसने उससे कहा, "ऐसी बात नहीं है; तू मारा न जाएगा।
सुन, मेरा पिता मुझ को बिना बताए न तो कोई बड़ा काम करता है
और न कोई छोटा; फिर वह ऐसी बात को मुझसे क्यों छिपाएगा?
ऐसी कोई बात नहीं है।"
3 फिर दाऊद ने शपथ खाकर कहा, "तेरा पिता निश्चय जानता
है कि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर है; और वह सोचता होगा, कि
योनातान इस बात को न जानने पाए, ऐसा न हो कि वह खेदित
हो जाए। परन्तु यहोवा के जीवन की शपथ और तेरे जीवन की
शपथ, निःसन्देह, मेरे और मृत्यु के बीच डग ही भर का अन्तर
है।"
4 योनातान ने दाऊद से कहा, "जो कुछ तेरा जी चाहे वही मैं
तेरे लिये करूँगा।"
5 दाऊद ने योनातान से कहा, "सुन कल नया चाँद होगा, और
मुझे उचित है कि राजा के साथ बैठकर भोजन करूँ; परन्तु तू मुझे
विदा कर, और मैं परसों साँझ तक मैदान में छिपा रहूँगा।
6 यदि तेरा पिता मेरी कुछ चिन्ता करे, तो कहना, 'दाऊद ने
अपने नगर बैतलहम को शीघ्र जाने के लिये मुझसे विनती करके
छुट्टी माँगी है; क्योंकि वहाँ उसके समस्त कुल के लिये वार्षिक
यज्ञ है।'
7 यदि वह यह कहे, 'अच्छा!' तब तो तेरे दास के लिये कुशल
होगा; परन्तु यदि उसका क्रोध बहुत भड़क उठे, तो जान लेना कि
उसने बुराई ठानी है।
8 और तू अपने दास से कृपा का व्यवहार करना, क्योंकि तूने
यहोवा की शपथ खिलाकर अपने दास को अपने साथ वाचा बँधाई

है। परन्तु यदि मुझसे कुछ अपराध हुआ हो, तो तू आप मुझे मार
डाल; तू मुझे अपने पिता के पास क्यों पहुँचाए?”
9 योनातान ने कहा, “ऐसी बात कभी न होगी! यदि मैं निश्चय
जानता कि मेरे पिता ने तुझ से बुराई करनी ठानी है, तो क्या मैं
तुझको न बताता?”
10 दाऊद ने योनातान से कहा, “यदि तेरा पिता तुझको कठोर
उत्तर दे, तो कौन मुझे बताएगा?”
11 योनातान ने दाऊद से कहा, “चल हम मैदान को निकल
जाएँ।” और वे दोनों मैदान की ओर चले गए।
12 तब योनातान दाऊद से कहने लगा, “इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा की शपथ, जब मैं कल या परसों इसी समय अपने पिता
का भेद पाऊँ, तब यदि दाऊद की भलाई देखूँ, तो क्या मैं उसी
समय तेरे पास दूत भेजकर तुझे न बताऊँगा?
13 यदि मेरे पिता का मन तेरी बुराई करने का हो, और मैं तुझ
पर यह प्रगट करके तुझे विदा न करूँ कि तू कुशल के साथ चला
जाए, तो यहोवा योनातान से ऐसा ही वरन् इससे भी अधिक करे।
यहोवा तेरे साथ वैसा ही रहे जैसा वह मेरे पिता के साथ रहा।
14 और न केवल जब तक मैं जीवित रहूँ, तब तक मुझ पर
यहोवा की सी कृपा ऐसे करना, *?? ??? ? ????**;
15 परन्तु मेरे घराने पर से भी अपनी कृपादृष्टि कभी न हटाना!
वरन् जब यहोवा दाऊद के हर एक शत्रु को पृथ्वी पर से नष्ट कर
चुकेगा, तब भी ऐसा न करना।”
16 इस प्रकार योनातान ने दाऊद के घराने से यह कहकर वाचा
बँधाई, “यहोवा दाऊद के शत्रुओं से बदला ले।”
17 और योनातान दाऊद से प्रेम रखता था, और उसने उसको

* **20:14** *?? ??? ? ????:* योनातान की पूर्व भावना में था कि दाऊद सिंहासन पर बैठे। यह परमेश्वर की ओर से था। परमेश्वर की कृपा से उसे यह जानकर सांत्वना प्राप्त थी कि उसकी सन्तान को दाऊद दया दिखाएगा।

फिर शपथ खिलाई; क्योंकि वह उससे अपने प्राण के बराबर प्रेम
रखता था।

18 तब योनातान ने उससे कहा, “कल नया चाँद होगा; और
तेरी चिन्ता की जाएगी, क्योंकि तेरी कुर्सी खाली रहेगी।
19 और तू तीन दिन के बीतने पर तुरन्त आना, और उस स्थान
पर जाकर जहाँ तू उस काम के दिन छिपा था, अर्थात् एजेल
नामक पत्थर के पास रहना।
20 तब मैं उसकी ओर, मानो अपने किसी ठहराए हुए चिन्ह पर
तीन तीर चलाऊँगा।
21 फिर मैं अपने टहलुए लड़के को यह कहकर भेजूँगा, कि
जाकर तीरों को ढूँढ ले आ। यदि मैं उस लड़के से साफ-साफ कहूँ,
‘देख, तीर इधर तेरे इस ओर हैं,’ तू उसे ले आ, तो तू आ जाना
क्योंकि यहोवा के जीवन की शपथ, तेरे लिये कुशल को छोड़
और कुछ न होगा।
22 परन्तु यदि मैं लड़के से यह कहूँ, ‘सुन, तीर उधर तेरे उस
ओर हैं,’ तो तू चले जाना, क्योंकि यहोवा ने तुझे विदा किया है।
23 और उस बात के विषय जिसकी चर्चा मैंने और तूने आपस
में की है, यहोवा मेरे और तेरे मध्य में सदा रहे।”

24 इसलिए दाऊद मैदान में जा छिपा; और जब नया चाँद
हुआ, तब राजा भोजन करने को बैठा।
25 राजा तो पहले के समान अपने उस आसन पर बैठा जो
दीवार के पास था; और योनातान खड़ा हुआ, और अब्नेर शाऊल
के निकट बैठा, परन्तु दाऊद का स्थान खाली रहा।

26 उस दिन तो शाऊल यह सोचकर चुप रहा, कि इसका कोई
न कोई कारण होगा; वह अशुद्ध होगा, निःसन्देह शुद्ध न होगा।
27 फिर नये चाँद के दूसरे दिन को दाऊद का स्थान खाली रहा।
अतः शाऊल ने अपने पुत्र योनातान से पूछा, “क्या कारण है कि

यिशै का पुत्र न तो कल भोजन पर आया था, और न आज ही
आया है?”
28 योनातान ने शाऊल से कहा, “दाऊद ने बैतलहम जाने के
लिये मुझसे विनती करके छुट्टी माँगी;
29 और कहा, ‘मुझे जाने दे; क्योंकि उस नगर में हमारे कुल का
यज्ञ है, और मेरे भाई ने मुझ को वहाँ उपस्थित होने की आज्ञा दी
है। और अब यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो, तो मुझे जाने
दे कि मैं अपने भाइयों से भेंट कर आऊँ।’ इसी कारण वह राजा
की मेज पर नहीं आया।”
30 तब शाऊल का कोप योनातान पर भड़क उठा, और उसने
उससे कहा, “*[illegible]*†, क्या मैं
नहीं जानता कि तेरा मन तो यिशै के पुत्र पर लगा है? इसी से
तेरी आशा का टूटना और तेरी माता का अनादर ही होगा।
31 क्योंकि जब तक यिशै का पुत्र भूमि पर जीवित रहेगा,
तब तक न तो तू और न तेरा राज्य स्थिर रहेगा। इसलिए
अभी भेजकर उसे मेरे पास ला, क्योंकि निश्चय वह मार डाला
जाएगा।”
32 योनातान ने अपने पिता शाऊल को उत्तर देकर उससे कहा,
“वह क्यों मारा जाए? उसने क्या किया है?”
33 तब शाऊल ने उसको मारने के लिये उस पर भाला चलाया;
इससे योनातान ने जान लिया, कि मेरे पिता ने दाऊद को मार
डालना ठान लिया है।
34 तब योनातान क्रोध से जलता हुआ मेज पर से उठ गया,
और महीने के दूसरे दिन को भोजन न किया, क्योंकि वह बहुत
खेदित था, इसलिए कि उसके पिता ने दाऊद का अनादर किया
था।

---

† **20:30** *[illegible]*: किसी का घोर अपमान और अति कटु निन्दा उसके माता-पिता या पूर्वजों की निन्दा करना है। शाऊल के कहने का अर्थ था कि योनातान अपनी माता के गर्भ ही से हठीला है।

35 सवेरे को योनातान एक छोटा लड़का संग लिए हुए मैदान
में दाऊद के साथ ठहराए हुए स्थान को गया।
36 तब उसने अपने लड़के से कहा, "दौड़कर जो-जो तीर मैं
चलाऊँ उन्हें ढूँढ ले आ।" लड़का दौड़ ही रहा था, कि उसने एक
तीर उसके परे चलाया।
37 जब लड़का योनातान के चलाए तीर के स्थान पर पहुँचा,
तब योनातान ने उसके पीछे से पुकारके कहा, "तीर तो तेरी उस
ओर है।"
38 फिर योनातान ने लड़के के पीछे से पुकारकर कहा, "फुर्ती
कर, ठहर मत।" और योनातान का लड़का तीरों को बटोरके अपने
स्वामी के पास ले आया।
39 इसका भेद लड़का तो कुछ न जानता था; केवल योनातान
और दाऊद इस बात को जानते थे।
40 योनातान ने अपने हथियार उस लड़के को देकर कहा, "जा,
इन्हें नगर को पहुँचा।"
41 जैसे ही लड़का गया, वैसे ही दाऊद दक्षिण दिशा की ओर से
निकला, और भूमि पर औंधे मुँह गिरकर *[illegible]*
[illegible]‡; तब उन्होंने एक दूसरे को चूमा, और एक दूसरे के साथ रोए,
परन्तु दाऊद का रोना अधिक था।
42 तब योनातान ने दाऊद से कहा, "कुशल से चला जा; क्योंकि
हम दोनों ने एक दूसरे से यह कहकर यहोवा के नाम की शपथ खाई
है, कि यहोवा मेरे और तेरे मध्य, और मेरे और तेरे वंश के मध्य
में सदा रहे।" तब वह उठकर चला गया; और योनातान नगर में
गया।

21

[illegible]

‡ **20:41** *[illegible]*: निश्चय ही योनातान के प्रति उसकी अटल सभी भक्ति का संकेत है उसके राजा का पुत्र होने के कारण और योनातान द्वारा उसे मार डालने के अधिकार तथा उसकी भिन्नता को स्वीकार करने में।

1 तब दाऊद [illegible]* को गया और अहीमेलेक याजक के पास
आया; और अहीमेलेक दाऊद से भेंट करने को थरथराता हुआ
निकला, और उससे पूछा, "क्या कारण है कि तू अकेला है, और
तेरे साथ कोई नहीं?"
2 दाऊद ने अहीमेलेक याजक से कहा, "राजा ने मुझे एक काम
करने की आज्ञा देकर मुझसे कहा, 'जिस काम को मैं तुझे भेजता
हूँ, और जो आज्ञा मैं तुझे देता हूँ, वह किसी पर प्रगट न होने पाए;'
और मैंने जवानों को फलाने स्थान पर जाने को समझाया है।
3 अब तेरे हाथ में क्या है? पाँच रोटी, या जो कुछ मिले उसे
मेरे हाथ में दे।"
4 याजक ने दाऊद से कहा, "मेरे पास साधारण रोटी तो नहीं
है, केवल पवित्र रोटी है; इतना हो कि वे जवान स्त्रियों से अलग
रहे हों।"
5 दाऊद ने याजक को उत्तर देकर उससे कहा, "सच है कि हम
तीन दिन से स्त्रियों से अलग हैं; फिर जब मैं निकल आता हूँ,
तब [illegible]†; यद्यपि यात्रा
साधारण होती है, तो आज उनके बर्तन अवश्य ही पवित्र होंगे।"
6 तब याजक ने उसको पवित्र रोटी दी; क्योंकि दूसरी रोटी वहाँ
न थी, केवल भेंट की रोटी थी जो यहोवा के सम्मुख से उठाई गई
थी, कि उसके उठा लेने के दिन गरम रोटी रखी जाए। ***([illegible]
12:4, [illegible] 6:4)***
7 उसी दिन वहाँ दोएग नामक शाऊल का एक कर्मचारी यहोवा
के आगे रुका हुआ था; वह एदोमी और शाऊल के चरवाहों का
मुखिया था।

---

* **21:1** *[illegible]:* नोब पुरोहितों का नगर था। प्रधान पुरोहित वहाँ रहता था और मिलापवाला तम्बू वहाँ था। † **21:5** *[illegible]:* उनके वस्त्र या झोले (व्यव. 22:5) या अन्य सामान जो नियमानुसार अशुद्ध हो सकते थे और उन्हें तथा उस व्यक्ति को भी शोधन की आवश्यकता होती थी। (लैव्य. 13:58; निर्ग. 19:10)

8 फिर दाऊद ने अहीमेलेक से पूछा, “क्या यहाँ तेरे पास कोई
भाला या तलवार नहीं है? क्योंकि मुझे राजा के काम की ऐसी
जल्दी थी कि मैं न तो तलवार साथ लाया हूँ, और न अपना कोई
हथियार ही लाया।”
9 याजक ने कहा, “हाँ, पलिश्ती गोलियत जिसे तूने एला तराई
में घात किया, उसकी तलवार कपड़े में लपेटी हुई एपोद के पीछे
रखी है; यदि तू उसे लेना चाहे, तो ले ले, उसे छोड़ और कोई यहाँ
नहीं है।” दाऊद बोला, “उसके तुल्य कोई नहीं; वही मुझे दे।”

[illegible]

10 तब दाऊद चला, और उसी दिन शाऊल के डर के मारे
भागकर गत के राजा आकीश के पास गया।
11 और आकीश के कर्मचारियों ने आकीश से कहा, “क्या वह
उस देश का राजा दाऊद नहीं है? क्या लोगों ने उसी के विषय
नाचते-नाचते एक दूसरे के साथ यह गाना न गया था,
‘शाऊल ने हजारों को,
और दाऊद ने लाखों को मारा है?’ ”
12 दाऊद ने ये बातें अपने मन में रखीं, और गत के राजा
आकीश से अत्यन्त डर गया।
13 तब उसने उनके सामने दूसरी चाल चली, और उनके हाथ
में पड़कर पागल सा, बन गया; और फाटक के किवाड़ों पर लकीरें
खींचने, और अपनी लार अपनी दाढ़ी पर बहाने लगा।
14 तब आकीश ने अपने कर्मचारियों से कहा, “देखो, वह जन
तो बावला है; तुम उसे मेरे पास क्यों लाए हो?
15 क्या मेरे पास बावलों की कुछ घटी है, कि तुम उसको मेरे
सामने बावलापन करने के लिये लाए हो? क्या ऐसा जन मेरे
भवन में आने पाएगा?”

22

[illegible]

1 दाऊद वहाँ से चला, और बचकर [illegible]* में
पहुँच गया; यह सुनकर उसके भाई, वरन् उसके पिता का समस्त
घराना वहाँ उसके पास गया।
2 और जितने संकट में पड़े थे, और जितने ऋणी थे, और जितने
उदास थे, वे सब उसके पास इकट्ठे हुए; और वह उनका प्रधान
हुआ। और कोई चार सौ पुरुष उसके साथ हो गए।
3 वहाँ से दाऊद ने मोआब के मिस्पे को जाकर मोआब के राजा
से कहा, “मेरे पिता को अपने पास तब तक आकर रहने दो, जब
तक कि मैं न जानूं कि परमेश्वर मेरे लिये क्या करेगा।”
4 और वह उनको मोआब के राजा के सम्मुख ले गया, और जब
तक दाऊद उस गढ़ में रहा, तब तक वे उसके पास रहे।
5 फिर गाद नामक एक नबी ने दाऊद से कहा, “इस गढ़ में
मत रह; चल, यहूदा के देश में जा।” और दाऊद चलकर हेरेत के
जंगल में गया।
6 तब शाऊल ने सुना कि दाऊद और उसके संगियों का पता
लग गया हैं उस समय शाऊल गिबा के ऊँचे स्थान पर, एक झाऊ
के पेड़ के नीचे, हाथ में अपना भाला लिए हुए बैठा था, और उसके
सब कर्मचारी उसके आस-पास खड़े थे।
7 तब शाऊल अपने कर्मचारियों से जो उसके आस-पास खड़े
थे कहने लगा, “हे बिन्यामीनियों, सुनो; क्या यिशै का पुत्र तुम
सभी को खेत और दाख की बारियाँ देगा? क्या वह तुम सभी को
सहस्त्रपति और शतपति करेगा?
8 तुम सभी ने मेरे विरुद्ध क्यों राजद्रोह की गोष्ठी की है? और
जब मेरे पुत्र ने यिशै के पुत्र से वाचा बाँधी, तब किसी ने मुझ पर
प्रगट नहीं किया; और तुम में से किसी ने मेरे लिये शोकित होकर
मुझ पर प्रगट नहीं किया, कि मेरे पुत्र ने मेरे कर्मचारी को मेरे
विरुद्ध ऐसा घात लगाने को उभारा है, जैसा आज के दिन है।”

* **22:1** [illegible]: अदूल्लाम शपेला में यहूदिया का एक नगर था जो बैतलहम से दूर नहीं था।

9 तब एदोमी दोएग ने, जो शाऊल के सेवकों के ऊपर ठहराया
गया था, उत्तर देकर कहा, “मैंने तो यिशै के पुत्र को नोब में
अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक के पास आते देखा,
10 और उसने उसके लिये यहोवा से पूछा, और उसे भोजनवस्तु
दी, और पलिश्ती गोलियत की तलवार भी दी।”

11 और राजा ने अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक याजक को और
उसके पिता के समस्त घराने को, अर्थात् नोब में रहनेवाले याजकों
को बुलवा भेजा; और जब वे सब के सब शाऊल राजा के पास
आए,
12 तब शाऊल ने कहा, “हे अहीतूब के पुत्र, सुन,” वह बोला,
“हे प्रभु, क्या आज्ञा?”
13 शाऊल ने उससे पूछा, “क्या कारण है कि तू और यिशै के
पुत्र दोनों ने मेरे विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी की है? तूने उसे रोटी
और तलवार दी, और उसके लिये परमेश्वर से पूछा भी, जिससे
वह मेरे विरुद्ध उठे, और ऐसा घात लगाए जैसा आज के दिन है?”
14 अहीमेलेक ने राजा को उत्तर देकर कहा, तेरे समस्त
कर्मचारियों में दाऊद के तुल्य विश्वासयोग्य कौन है? वह तो
राजा का दामाद है, और तेरी राजसभा में उपस्थित हुआ करता,
और तेरे परिवार में प्रतिष्ठित है।
15 क्या मैंने आज ही उसके लिये परमेश्वर से पूछना आरम्भ
किया है? वह मुझसे दूर रहे! राजा न तो अपने दास पर ऐसा
कोई दोष लगाए, न मेरे पिता के समस्त घराने पर, क्योंकि तेरा
दास इन सब बातों के विषय कुछ भी नहीं जानता।”
16 राजा ने कहा, “हे अहीमेलेक, तू और तेरे पिता का समस्त
घराना निश्चय मार डाला जाएगा।”
17 फिर राजा ने उन पहरुओं से जो उसके आस-पास खड़े थे
आज्ञा दी, “मुड़ो और यहोवा के याजकों को मार डालो; क्योंकि
उन्होंने भी दाऊद की सहायता की है, और उसका भागना जानने

पर भी मुझ पर प्रगट नहीं किया।” परन्तु राजा के सेवक यहोवा
के याजकों को मारने के लिये हाथ बढ़ाना न चाहते थे।
18 तब राजा ने दोएग से कहा, “तू मुड़कर याजकों को मार
डाल।” तब एदोमी दोएग ने मुड़कर याजकों को मारा, और उस
दिन सनीवाला एपोद पहने हुए पचासी पुरुषों को घात किया।
19 और याजकों के नगर नोब को उसने स्त्रियों-पुरुषों, और
बाल-बच्चों, और दूधपीतों, और बैलों, गदहों, और भेड़-बकरियों
समेत तलवार से मारा।
20 परन्तु अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक का [illegible]† नामक
एक पुत्र बच निकला, और दाऊद के पास भाग गया।
21 तब एब्यातार ने दाऊद को बताया, कि शाऊल ने यहोवा के
याजकों का वध किया है।
22 और दाऊद ने एब्यातार से कहा, “जिस दिन एदोमी दोएग
वहाँ था, उसी दिन मैंने जान लिया था, कि वह निश्चय शाऊल
को बताएगा। तेरे पिता के समस्त घराने के मारे जाने का कारण
मैं ही हुआ।
23 इसलिए तू मेरे साथ निडर रह; जो मेरे प्राण का ग्राहक है
वही तेरे प्राण का भी ग्राहक है; परन्तु मेरे साथ रहने से तेरी रक्षा
होगी।”

23

[illegible]

1 दाऊद को यह समाचार मिला कि पलिश्ती लोग कीला नगर
से युद्ध कर रहे हैं, और खलिहानों को लूट रहे हैं।

---

† **22:20** *[illegible]:* वह पवित्रस्थान की देख-रेख के लिये नोब में रह गया था जब अन्य पुरोहित शाऊल के पास गए थे और इस प्रकार वह बच गया। वह दाऊद के सम्पूर्ण राज्यकाल में उसका विश्वासयोग्य मित्र बना रहा।

2 तब दाऊद ने यहोवा से पूछा, “क्या मैं जाकर पलिश्तियों को
मारूँ?” यहोवा ने दाऊद से कहा, “जा, और पलिश्तियों को मार
के कीला को बचा।”
3 परन्तु दाऊद के जनों ने उससे कहा, “हम तो इस यहूदा देश
में भी डरते रहते हैं, यदि हम कीला जाकर पलिश्तियों की सेना
का सामना करें, तो क्या बहुत अधिक डर में न पड़ेंगे?”
4 तब दाऊद ने यहोवा से फिर पूछा, और यहोवा ने उसे उत्तर
देकर कहा, “कमर बाँधकर कीला को जा; क्योंकि मैं पलिश्तियों
को तेरे हाथ में कर दूँगा।”
5 इसलिए दाऊद अपने जनों को संग लेकर कीला को गया,
और पलिश्तियों से लड़कर उनके पशुओं को हाँक लाया, और
उन्हें बड़ी मार से मारा। अतः दाऊद ने कीला के निवासियों को
बचाया।
6 जब अहीमेलेक का पुत्र एब्यातार दाऊद के पास कीला को
भाग गया था, तब हाथ में एपोद लिए हुए गया था।
7 तब शाऊल को यह समाचार मिला कि दाऊद कीला को गया
है। और शाऊल ने कहा, “परमेश्वर ने उसे मेरे हाथ में कर दिया
है; वह तो फाटक और बेंड़ेवाले नगर में घुसकर बन्द हो गया है।”
8 तब शाऊल ने अपनी सारी सेना को लड़ाई के लिये बुलवाया,
कि कीला को जाकर दाऊद और उसके जनों को घेर ले।
9 तब दाऊद ने जान लिया कि शाऊल मेरी हानि कि युक्ति
कर रहा है; इसलिए उसने एब्यातार याजक से कहा, “एपोद को
निकट ले आ।”
10 तब दाऊद ने कहा, “हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा, तेरे
दास ने निश्चय सुना है कि शाऊल मेरे कारण कीला नगर नष्ट
करने को आना चाहता है।
11 क्या कीला के लोग मुझे उसके वश में कर देंगे? क्या जैसे
तेरे दास ने सुना है, वैसे ही शाऊल आएगा? हे इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा, अपने दास को यह बता।” यहोवा ने कहा, “हाँ,

वह आएगा।”
12 फिर दाऊद ने पूछा, “क्या कीला के लोग मुझे और मेरे जनों
को शाऊल के वश में कर देंगे?” यहोवा ने कहा, “हाँ, वे कर देंगे।”
13 तब दाऊद और उसके जन जो कोई छः सौ थे, कीला से
निकल गए, और इधर-उधर जहाँ कहीं जा सके वहाँ गए। और जब शाऊल को यह बताया गया कि दाऊद कीला से निकल भागा है, तब उसने वहाँ जाने का विचार छोड़ दिया।

[illegible]

14 तब दाऊद जंगल के गढ़ों में रहने लगा, और पहाड़ी देश
के *[illegible]** नामक जंगल में रहा। और शाऊल उसे प्रतिदिन ढूँढ़ता रहा, परन्तु परमेश्वर ने उसे उसके हाथ में न पड़ने दिया।
15 और दाऊद ने जान लिया कि शाऊल मेरे प्राण की खोज में
निकला है। और दाऊद जीप नामक जंगल के होरेश नामक स्थान में था;
16 कि शाऊल का पुत्र *[illegible]*
[illegible]†, और परमेश्वर की चर्चा करके उसको ढाढ़स दिलाया।
17 उसने उससे कहा, “मत डर; क्योंकि तू मेरे पिता शाऊल के
हाथ में न पड़ेगा; और तू ही इस्राएल का राजा होगा, और मैं तेरे नीचे होऊँगा; और इस बात को मेरा पिता शाऊल भी जानता है।”
18 तब उन दोनों ने यहोवा की शपथ खाकर आपस में वाचा
बाँधी; तब दाऊद होरेश में रह गया, और योनातान अपने घर चला गया।
19 तब जीपी लोग गिबा में शाऊल के पास जाकर कहने लगे,
“दाऊद तो हमारे पास होरेश के गढ़ों में, अर्थात् उस हकीला नामक पहाड़ी पर छिपा रहता है, जो यशीमोन के दक्षिण की ओर है।

* **23:14** *[illegible]*: हेब्रोन और एन गेदी के मध्य † **23:16** *[illegible]*: मित्रों में अपनी निष्ठा का एक मार्ग स्पर्शी उदाहरण। योनातान की दीनता और निःस्वार्थ प्रेम स्पष्ट दिखाई देता है।

20 इसलिए अब, हे राजा, तेरी जो इच्छा आने की है, तो आ;
और उसको राजा के हाथ में पकड़वा देना हमारा काम होगा।”
21 शाऊल ने कहा, “यहोवा की आशीष तुम पर हो, क्योंकि
तुम ने मुझ पर दया की है।
22 तुम चलकर और भी निश्चय कर लो; और देख-भाल कर
जान लो, और उसके अड्डे का पता लगा लो, और पता लगाओ
कि उसको वहाँ किसने देखा है; क्योंकि किसी ने मुझसे कहा है,
कि वह बड़ी चतुराई से काम करता है।
23 इसलिए जहाँ कहीं वह छिपा करता है उन सब स्थानों को
देख देखकर पहचानो, तब निश्चय करके मेरे पास लौट आना।
और मैं तुम्हारे साथ चलूँगा, और यदि वह उस देश में कहीं भी हो,
तो मैं उसे यहूदा के हजारों में से ढूँढ़ निकालूँगा।”
24 तब वे चलकर शाऊल से पहले जीप को गए। परन्तु दाऊद
अपने जनों समेत माओन नामक जंगल में चला गया था, जो
अराबा में यशीमोन के दक्षिण की ओर है।
25 तब शाऊल अपने जनों को साथ लेकर उसकी खोज में गया।
इसका समाचार पाकर दाऊद पर्वत पर से उतर के माओन जंगल
में रहने लगा। यह सुन शाऊल ने माओन जंगल में दाऊद का
पीछा किया।
26 शाऊल तो पहाड़ की एक ओर, और दाऊद अपने जनों समेत
पहाड़ की दूसरी ओर जा रहा था; और दाऊद शाऊल के डर के
मारे जल्दी जा रहा था, और शाऊल अपने जनों समेत दाऊद
और उसके जनों को पकड़ने के लिये घेरा बनाना चाहता था,
27 कि एक दूत ने शाऊल के पास आकर कहा, “फुर्ती से चला
आ; क्योंकि पलिश्तियों ने देश पर चढ़ाई की है।”
28 यह सुन शाऊल दाऊद का पीछा छोड़कर पलिश्तियों का
सामना करने को चला; इस कारण उस स्थान का नाम सेलाहम्म-
हलकोत पड़ा।
29 वहाँ से दाऊद चढ़कर एनगदी के गढ़ों में रहने लगा।

24

[illegible]

1 जब शाऊल पलिश्तियों का पीछा करके लौटा, तब उसको
यह समाचार मिला, कि दाऊद एनगदी के जंगल में है।
2 तब शाऊल समस्त इस्राएलियों में से तीन हजार को छाँटकर
दाऊद और उसके जनों को 'जंगली बकरों की चट्टानों' पर खोजने
गया।
3 जब वह मार्ग पर के भेड़शालाओं के पास पहुँचा जहाँ एक
गुफा थी, तब शाऊल दिशा फिरने को उसके भीतर गया। और
उसी गुफा के कोनों में दाऊद और उसके जन बैठे हुए थे।
4 तब दाऊद के जनों ने उससे कहा, "सुन, आज वही दिन है
जिसके विषय यहोवा ने तुझ से कहा था, 'मैं तेरे शत्रु को तेरे हाथ
में सौंप दूँगा, कि तू उससे मनमाना बर्ताव कर ले।' " तब दाऊद
ने उठकर शाऊल के बागे की छोर को छिपकर काट लिया।
5 इसके बाद दाऊद शाऊल के बागे की छोर काटने से
पछताया।
6 वह अपने जनों से कहने लगा, "यहोवा न करे कि मैं अपने
प्रभु से जो यहोवा का अभिषिक्त है ऐसा काम करूँ, कि उस पर
हाथ उठाऊँ, क्योंकि वह यहोवा का अभिषिक्त है।"
7 ऐसी बातें कहकर दाऊद ने अपने जनों को समझाया और
उन्हें शाऊल पर आक्रमण करने को उठने न दिया। फिर शाऊल
उठकर गुफा से निकला और अपना मार्ग लिया।

8 उसके बाद दाऊद भी उठकर गुफा से निकला और शाऊल
को पीछे से पुकारके बोला, "हे मेरे प्रभु, हे राजा।" जब शाऊल
ने पीछे मुड़कर देखा, तब दाऊद ने भूमि की ओर सिर झुकाकर
दण्डवत् की।

9 और दाऊद ने शाऊल से कहा, “जो मनुष्य कहते हैं, कि
दाऊद तेरी हानि चाहता है *[illegible]*[*]?
10 देख, आज तूने अपनी आँखों से देखा है कि यहोवा ने आज
गुफा में तुझे मेरे हाथ सौंप दिया था; और किसी किसी ने तो
मुझसे तुझे मारने को कहा था, परन्तु मुझे तुझ पर तरस आया;
और मैंने कहा, ‘मैं अपने प्रभु पर हाथ न उठाऊँगा; क्योंकि वह
यहोवा का अभिषिक्त है।’
11 फिर, *[illegible]*[†], देख, अपने बागे की छोर मेरे हाथ
में देख; मैंने तेरे बागे की छोर तो काट ली, परन्तु तुझे घात न
किया; इससे निश्चय करके जान ले, कि मेरे मन में कोई बुराई
या अपराध का सोच नहीं है। मैंने तेरे विरुद्ध कोई अपराध नहीं
किया, परन्तु तू मेरे प्राण लेने को मानो उसका अहेर करता रहता
है।
12 यहोवा मेरा और तेरा न्याय करे, और यहोवा तुझ से मेरा
बदला ले; परन्तु मेरा हाथ तुझ पर न उठेगा।
13 प्राचीनों के नीतिवचन के अनुसार ‘दुष्टता दुष्टों से होती है;’
परन्तु मेरा हाथ तुझ पर न उठेगा।
14 इस्राएल का राजा किसका पीछा करने को निकला है? और
किसके पीछे पड़ा है? एक मरे कुत्ते के पीछे! एक पिस्सू के पीछे!
15 इसलिए यहोवा न्यायी होकर मेरा तेरा विचार करे, और
विचार करके मेरा मुकद्दमा लड़े, और न्याय करके मुझे तेरे हाथ
से बचाए।”
16 जब दाऊद शाऊल से ये बातें कह चुका, तब शाऊल ने
कहा, “हे मेरे बेटे दाऊद, क्या यह तेरा बोल है?” तब शाऊल
चिल्लाकर रोने लगा।

---

[*] **24:9** *[illegible]*: दाऊद भलीभांति जानता था कि शाऊल के दरबार में चाटुकार थे जो उस पर झूठा दोष लगाकर शाऊल के मन में लगातार ईर्ष्या उत्पन्न कर रहे थे। [†] **24:11** *[illegible]*: एक कनिष्ट एवं दीन व्यक्ति द्वारा सम्मान का संबोधन।

17 फिर उसने दाऊद से कहा, “तू मुझसे अधिक धर्मी है; तूने तो मेरे साथ भलाई की है, परन्तु मैंने तेरे साथ बुराई की।

18 और तूने आज यह प्रगट किया है, कि तूने मेरे साथ भलाई की है, कि जब यहोवा ने मुझे तेरे हाथ में कर दिया, तब तूने मुझे घात न किया।

19 भला! क्या कोई मनुष्य अपने शत्रु को पाकर कुशल से जाने देता है? इसलिए जो तूने आज मेरे साथ किया है, इसका अच्छा बदला यहोवा तुझे दे।

20 और अब, मुझे मालूम हुआ है कि तू निश्चय राजा हो जाएगा, और इस्राएल का राज्य तेरे हाथ में स्थिर होगा।

21 अब मुझसे यहोवा की शपथ खा, कि मैं तेरे वंश को तेरे बाद नष्ट न करूँगा, और तेरे पिता के घराने में से तेरा नाम मिटा न डालूँगा।”

22 तब दाऊद ने शाऊल से ऐसी ही शपथ खाई। तब शाऊल अपने घर चला गया; और दाऊद अपने जनों समेत गढ़ों में चला गया।

25

[illegible]

1 शमूएल की मृत्यु हो गई; और समस्त इस्राएलियों ने इकट्ठे होकर उसके लिये छाती पीटी, और उसके घर ही में जो रामाह में था उसको मिट्टी दी। तब दाऊद उठकर पारान जंगल को चला गया।

2 माओन में एक पुरुष रहता था जिसका व्यापार कर्मेल में था। और वह पुरुष बहुत धनी था, और उसकी तीन हजार भेड़ें, और एक हजार बकरियाँ थीं; और वह अपनी भेड़ों का ऊन कतर रहा था।

3 उस पुरुष का नाम नाबाल, और उसकी पत्नी का नाम अबीगैल था। स्त्री तो बुद्धिमान और रूपवती थी, परन्तु पुरुष कठोर, और बुरे-बुरे काम करनेवाला था; वह कालेबवंशी था।

4 जब दाऊद ने जंगल में समाचार पाया, कि नाबाल अपनी
भेड़ों का ऊन कतर रहा है;
5 तब दाऊद ने दस जवानों को वहाँ भेज दिया, और दाऊद ने
उन जवानों से कहा, "कर्मेल में नाबाल के पास जाकर मेरी ओर
से उसका कुशल क्षेम पूछो।
6 और उससे यह कहो, 'तू चिरंजीव रहे, तेरा कल्याण हो, और
तेरा घराना कल्याण से रहे, और जो कुछ तेरा है वह कल्याण से
रहे।
7 मैंने सुना है, कि जो तू ऊन कतर रहा है; तेरे चरवाहे हम
लोगों के पास रहे, और न तो हमने उनकी कुछ हानि की, और न
उनका कुछ खोया गया।
8 अपने जवानों से यह बात पूछ ले, और वे तुझको बताएँगे।
अतः इन जवानों पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो; हम तो आनन्द के
समय में आए हैं, इसलिए जो कुछ तेरे हाथ लगे वह अपने दासों
और अपने बेटे दाऊद को दे।' "
9 दाऊद के जवान जाकर ऐसी बातें उसके नाम से नाबाल को
सुनाकर चुप रहे।
10 नाबाल ने दाऊद के जनों को उत्तर देकर उनसे कहा, "दाऊद
कौन है? यिशै का पुत्र कौन है? आजकल बहुत से दास अपने-
अपने स्वामी के पास से भाग जाते हैं।
11 क्या मैं अपनी रोटी-पानी और जो पशु मैंने अपने
कतरनेवालों के लिये मारे हैं लेकर ऐसे लोगों को दे दूँ, जिनको
मैं नहीं जानता कि कहाँ के हैं?"
12 तब दाऊद के जवानों ने लौटकर अपना मार्ग लिया, और
लौटकर उसको ये सब बातें ज्यों की त्यों सुना दीं।
13 तब दाऊद ने अपने जनों से कहा, "अपनी-अपनी तलवार
बाँध लो।" तब उन्होंने अपनी-अपनी तलवार बाँध ली; और
दाऊद ने भी अपनी तलवार बाँध ली; और कोई चार सौ पुरुष
दाऊद के पीछे-पीछे चले, और दो सौ सामान के पास रह गए।

14 परन्तु एक सेवक ने नाबाल की पत्नी अबीगैल को बताया,
“दाऊद ने जंगल से हमारे स्वामी को आशीर्वाद देने के लिये दूत
भेजे थे; और उसने उन्हें ललकार दिया।
15 परन्तु वे मनुष्य हम से बहुत अच्छा बर्ताव रखते थे, और
जब तक हम मैदान में रहते हुए उनके पास आया-जाया करते थे,
तब तक न तो हमारी कुछ हानि हुई, और न हमारा कुछ खोया;
16 जब तक हम उनके साथ भेड़-बकरियाँ चराते रहे, तब तक वे
रात दिन हमारी आड़ बने रहे।
17 इसलिए अब सोच विचार कर कि क्या करना चाहिए;
क्योंकि उन्होंने हमारे स्वामी की और उसके समस्त घराने की हानि
करना ठान लिया होगा, वह तो ऐसा दुष्ट है कि उससे कोई बोल
भी नहीं सकता।”

18 तब अबीगैल ने फुर्ती से दो सौ रोटी, और दो कुप्पी दाखमधु,
और पाँच भेड़ों का माँस, और पाँच सआ भूना हुआ अनाज, और
एक सौ गुच्छे किशमिश, और अंजीरों की दो सौ टिकियाँ लेकर
गदहों पर लदवाई।
19 और उसने अपने जवानों से कहा, “तुम मेरे आगे-आगे चलो,
मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आती हूँ;” परन्तु उसने अपने पति नाबाल
से कुछ न कहा।
20 वह गदहे पर चढ़ी हुई पहाड़ की आड़ में उतरी जाती थी,
और दाऊद अपने जनों समेत उसके सामने उतरा आता था; और
वह उनको मिली।
21 दाऊद ने तो सोचा था, “मैंने जो जंगल में उसके सब माल
की ऐसी रक्षा की कि उसका कुछ भी न खोया, यह निःसन्देह व्यर्थ
हुआ; क्योंकि उसने भलाई के बदले मुझसे बुराई ही की है।
22 यदि सवेरे को उजियाला होने तक उस जन के समस्त लोगों
में से एक लड़के को भी मैं जीवित छोड़ूं, तो [illegible]

[illegible][*], वरन् इससे भी अधिक करे।”

23 दाऊद को देख अबीगैल फुर्ती करके गदहे पर से उतर पड़ी,
और दाऊद के सम्मुख मुँह के बल भूमि पर गिरकर दण्डवत् की।

24 फिर वह उसके पाँव पर गिरकर कहने लगी, “हे मेरे प्रभु, यह
अपराध मेरे ही सिर पर हो; तेरी दासी तुझ से कुछ कहना चाहती
है, और तू अपनी दासी की बातों को सुन ले।

25 मेरा प्रभु उस दुष्ट नाबाल पर चित्त न लगाए; क्योंकि जैसा
उसका नाम है वैसा ही वह आप है; उसका नाम तो नाबाल है,
और सचमुच उसमें मूर्खता पाई जाती है; परन्तु मुझ तेरी दासी ने
अपने प्रभु के जवानों को जिन्हें तूने भेजा था न देखा था।

26 और अब, हे मेरे प्रभु, यहोवा के जीवन की शपथ और तेरे
जीवन की शपथ, कि यहोवा ने जो तुझे खून से और अपने हाथ
के द्वारा अपना बदला लेने से रोक रखा है, इसलिए अब तेरे शत्रु
और मेरे प्रभु की हानि के चाहनेवाले नाबाल ही के समान ठहरें।

27 और अब यह भेंट जो तेरी दासी अपने प्रभु के पास लाई है,
उन जवानों को दी जाए जो मेरे प्रभु के साथ चलते हैं।

28 अपनी दासी का अपराध क्षमा कर; क्योंकि यहोवा निश्चय
मेरे प्रभु का घर बसाएगा और स्थिर करेगा, इसलिए कि मेरा प्रभु
यहोवा की ओर से लड़ता है; और जन्म भर तुझ में कोई बुराई
नहीं पाई जाएगी।

29 और यद्यपि एक मनुष्य तेरा पीछा करने और तेरे प्राण का
ग्राहक होने को उठा है, तो भी मेरे प्रभु का प्राण तेरे परमेश्वर
यहोवा की जीवनरूपी गठरी में बँधा रहेगा, और तेरे शत्रुओं के
प्राणों को वह मानो गोफन में रखकर फेंक देगा।

30 इसलिए जब यहोवा मेरे प्रभु के लिये यह समस्त भलाई
करेगा जो उसने तेरे विषय में कही है, और तुझे इस्राएल पर प्रधान

---

[*] **25:22** *[illegible]:* समापन वाक्यांश परिवार के सर्वनाश का भाव व्यक्त करता है। एक लड़के का अर्थ सम्भवत है कि तुच्छ से तुच्छ कहा था।

करके ठहराएगा,
31 तब तुझे इस कारण पछताना न होगा, या मेरे प्रभु का हृदय
पीड़ित न होगा कि तूने अकारण खून किया, और मेरे प्रभु ने अपना
बदला आप लिया है। फिर जब यहोवा मेरे प्रभु से भलाई करे तब
अपनी दासी को स्मरण करना।”
32 दाऊद ने अबीगैल से कहा, “इस्राएल का परमेश्वर यहोवा
धन्य है, जिसने आज के दिन मुझसे भेंट करने के लिये तुझे भेजा
है।
33 और तेरा विवेक धन्य है, और तू आप भी धन्य है, कि तूने
मुझे आज के दिन खून करने और अपना बदला आप लेने से रोक
लिया है।
34 क्योंकि सचमुच इस्राएल का परमेश्वर यहोवा, जिसने मुझे
तेरी हानि करने से रोका है, उसके जीवन की शपथ, यदि तू
फुर्ती करके मुझसे भेंट करने को न आती, तो निःसन्देह सवेरे को
उजियाला होने तक नाबाल का कोई लड़का भी न बचता।”
35 तब दाऊद ने उसे ग्रहण किया जो वह उसके लिये लाई थी;
फिर उससे उसने कहा, “अपने घर कुशल से जा; सुन, मैंने तेरी
बात मानी है और तेरी विनती ग्रहण कर ली है।”
36 तब अबीगैल नाबाल के पास लौट गई; और क्या देखती है,
कि वह घर में राजा का सा भोज कर रहा है। और नाबाल का मन
मगन है, और वह नशे में अति चूर हो गया है; इसलिए उसने भोर
का उजियाला होने से पहले उससे कुछ भी न कहा।
37 सवेरे को जब नाबाल का नशा उतर गया, तब उसकी पत्नी
ने उसे सारा हाल कह सुनाया, तब उसके मन का हियाव जाता
रहा, और *[illegible]*[†]।

[†] **25:37** *[illegible]*: सम्भवत: सुनकर उसके आक्रोश के कारण उसे लकवा मार गया जिसका कारण था पिछली रात उसका पीना-खाना। दस दिन निश्चेष्ट पड़ा रहा फिर मर गया।

38 और दस दिन के पश्चात् यहोवा ने नाबाल को ऐसा मारा,
कि वह मर गया।
39 नाबाल के मरने का हाल सुनकर दाऊद ने कहा, “धन्य
है यहोवा जिसने नाबाल के साथ मेरी नामधराई का मुकद्दमा
लड़कर अपने दास को बुराई से रोक रखा; और यहोवा ने नाबाल
की बुराई को उसी के सिर पर लाद दिया है।” तब दाऊद ने लोगों
को अबीगैल के पास इसलिए भेजा कि वे उससे उसकी पत्नी होने
की बातचीत करें।
40 तो जब दाऊद के सेवक कर्मेल को अबीगैल के पास पहुँचे,
तब उससे कहने लगे, “दाऊद ने हमें तेरे पास इसलिए भेजा है कि
तू उसकी पत्नी बने।”
41 तब वह उठी, और मुँह के बल भूमि पर गिर दण्डवत् करके
कहा, “तेरी दासी अपने प्रभु के सेवकों के चरण धोने के लिये दासी
बने।”
42 तब अबीगैल फुर्ती से उठी, और गदहे पर चढ़ी, और उसकी
पाँच सहेलियाँ उसके पीछे-पीछे हो लीं; और वह दाऊद के दूतों
के पीछे-पीछे गई; और उसकी पत्नी हो गई।
43 और दाऊद ने यिज्रेल नगर की अहीनोअम से भी विवाह
कर लिया, तो वे दोनों उसकी पत्नियाँ हुईं।
44 परन्तु शाऊल ने अपनी बेटी दाऊद की पत्नी मीकल को
लैश के पुत्र गल्लीमवासी पलती को दे दिया था।

26

[illegible]

1 फिर जीपी लोग गिबा में शाऊल के पास जाकर कहने लगे,
“क्या दाऊद उस हकीला नामक पहाड़ी पर जो यशीमोन के सामने
है छिपा नहीं रहता?”
2 तब शाऊल उठकर इस्राएल के तीन हजार छाँटे हुए योद्धा
संग लिए हुए गया कि दाऊद को जीप के जंगल में खोजे।

3 और शाऊल ने अपनी छावनी मार्ग के पास हकीला नामक पहाड़ी पर जो यशीमोन के सामने है डाली। परन्तु दाऊद जंगल में रहा; और उसने जान लिया, कि शाऊल मेरा पीछा करने को जंगल में आया है;

4 तब दाऊद ने भेदियों को भेजकर निश्चय कर लिया कि शाऊल सचमुच आ गया है।

5 तब दाऊद उठकर उस स्थान पर गया जहाँ शाऊल पड़ा था; और दाऊद ने उस स्थान को देखा जहाँ शाऊल अपने सेनापति नेर के पुत्र अब्नेर समेत पड़ा था, शाऊल तो गाड़ियों की आड़ में पड़ा था और उसके लोग उसके चारों ओर डेरे डाले हुए थे।

6 तब दाऊद ने हित्ती अहीमेलेक और सरूयाह के पुत्र योआब के भाई अबीशै से कहा, "मेरे साथ उस छावनी में शाऊल के पास कौन चलेगा?" ⍰⍰⍰⍰⍰⍰* ने कहा, "तेरे साथ मैं चलूँगा।"

7 अतः दाऊद और अबीशै रातों-रात उन लोगों के पास गए, और क्या देखते हैं, कि शाऊल गाड़ियों की आड़ में पड़ा सो रहा है, और उसका भाला उसके सिरहाने भूमि में गड़ा है; और अब्नेर और योद्धा लोग उसके चारों ओर पड़े हुए हैं।

8 तब अबीशै ने दाऊद से कहा, "परमेश्वर ने आज तेरे शत्रु को तेरे हाथ में कर दिया है; इसलिए अब मैं उसको एक बार ऐसा मारूँ कि भाला उसे बेधता हुआ भूमि में धँस जाए, और मुझ को उसे दूसरी बार मारना न पड़ेगा।"

9 दाऊद ने अबीशै से कहा, "उसे नष्ट न कर; क्योंकि यहोवा के अभिषिक्त पर हाथ चलाकर कौन निर्दोष ठहर सकता है।"

10 फिर दाऊद ने कहा, "यहोवा के जीवन की शपथ यहोवा ही उसको मारेगा; या वह अपनी मृत्यु से मरेगा; या वह लड़ाई में जाकर मर जाएगा।

11 यहोवा न करे कि मैं अपना हाथ यहोवा के अभिषिक्त पर

* **26:6** ⍰⍰⍰⍰⍰⍰: वह दाऊद की बहन सरूयाह का पुत्र था और दाऊद का हमउम्र था। वह एक प्रसिद्ध योद्धा था।

उठाऊँ; अब उसके सिरहाने से भाला और पानी की सुराही उठा
ले, और हम यहाँ से चले जाएँ।”
12 तब दाऊद ने भाले और पानी की सुराही को शाऊल के
सिरहाने से उठा लिया; और वे चले गए। और किसी ने इसे न
देखा, और न जाना, और न कोई जागा; क्योंकि वे सब इस कारण
सोए हुए थे, कि यहोवा की ओर से उनमें भारी नींद समा गई थी।

13 तब दाऊद दूसरी ओर जाकर दूर के पहाड़ की चोटी पर खड़ा
हुआ, और दोनों के बीच बड़ा अन्तर था;
14 और दाऊद ने उन लोगों को, और नेर के पुत्र अब्नेर को
पुकारके कहा, “हे अब्नेर क्या तू नहीं सुनता?” अब्नेर ने उत्तर
देकर कहा, “तू कौन है जो राजा को पुकारता है?”
15 दाऊद ने अब्नेर से कहा, “क्या तू पुरुष नहीं है? इस्राएल में
तेरे तुल्य कौन है? तूने अपने स्वामी राजा की चौकसी क्यों नहीं
की? एक जन तो तेरे स्वामी राजा को नष्ट करने घुसा था।
16 जो काम तूने किया है वह अच्छा नहीं। यहोवा के जीवन
की शपथ तुम लोग मारे जाने के योग्य हो, क्योंकि तुम ने अपने
स्वामी, यहोवा के अभिषिक्त की चौकसी नहीं की। और अब देख,
राजा का भाला और पानी की सुराही जो उसके सिरहाने थी वे कहाँ
हैं?”

17 तब शाऊल ने दाऊद का बोल पहचानकर कहा, “हे मेरे बेटे
दाऊद, क्या यह तेरा बोल है?” दाऊद ने कहा, “हाँ, मेरे प्रभु
राजा, मेरा ही बोल है।”
18 फिर उसने कहा, “मेरा प्रभु अपने दास का पीछा क्यों करता
है? मैंने क्या किया है? और मुझसे कौन सी बुराई हुई है?

19 अब मेरा प्रभु राजा, अपने दास की बातें सुन ले।

[illegible]†, तब तो
वह भेंट ग्रहण करे; परन्तु यदि आदमियों ने ऐसा किया हो, तो वे
यहोवा की ओर से श्रापित हों, क्योंकि उन्होंने अब मुझे निकाल
दिया कि मैं यहोवा के निज भाग में न रहूँ, और उन्होंने कहा है,
'जा पराए देवताओं की उपासना कर।'
20 इसलिए अब मेरा लहू यहोवा की आँखों की ओट में भूमि
पर न बहने पाए; इस्राएल का राजा तो एक पिस्सू ढूँढ़ने आया है,
जैसा कि कोई पहाड़ों पर तीतर का अहेर करे।"
21 शाऊल ने कहा, "मैंने पाप किया है, हे मेरे बेटे दाऊद लौट
आ; मेरा प्राण आज के दिन तेरी दृष्टि में अनमोल ठहरा, इस
कारण मैं फिर तेरी कुछ हानि न करूँगा; सुन, मैंने मूर्खता की,
और मुझसे बड़ी भूल हुई है।"
22 दाऊद ने उत्तर देकर कहा, "हे राजा, भाले को देख, कोई
जवान इधर आकर इसे ले जाए।
23 यहोवा एक-एक को अपने-अपने धार्मिकता और सच्चाई का
फल देगा; देख, आज यहोवा ने तुझको मेरे हाथ में कर दिया था,
परन्तु मैंने यहोवा के अभिषिक्त पर अपना हाथ उठाना उचित न
समझा।
24 इसलिए जैसे तेरे प्राण आज मेरी दृष्टि में प्रिय ठहरे, वैसे ही
मेरे प्राण भी यहोवा की दृष्टि में प्रिय ठहरे, और वह मुझे समस्त
विपत्तियों से छुड़ाए।"
25 शाऊल ने दाऊद से कहा, "हे मेरे बेटे दाऊद तू धन्य है! तू
बड़े-बड़े काम करेगा और तेरे काम सफल होंगे।" तब दाऊद ने
अपना मार्ग लिया, और शाऊल भी अपने स्थान को लौट गया।

27

† **26:19** *[illegible]:* पूर्वगामी इतिहास से इसका अर्थ स्पष्ट है। परमेश्वर की ओर से एक बुरी आत्मा उसे सताने लगी: वह बुरी आत्मा शाऊल के पाप का दण्ड देने के लिये भेजी गई थी।

[illegible]

1 तब दाऊद सोचने लगा, “अब मैं किसी न किसी दिन शाऊल के हाथ से नष्ट हो जाऊँगा; अब मेरे लिये उत्तम यह है कि मैं पलिश्तियों के देश में भाग जाऊँ; तब शाऊल मेरे विषय निराश होगा, और मुझे इस्राएल के देश के किसी भाग में फिर न ढूँढ़ेगा, तब मैं उसके हाथ से बच निकलूँगा।”

2 तब दाऊद अपने छः सौ संगी पुरुषों को लेकर चला गया, और गत के राजा माओक के पुत्र आकीश के पास गया।

3 और दाऊद और उसके जन अपने-अपने परिवार समेत गत में आकीश के पास रहने लगे। दाऊद तो अपनी दो स्त्रियों के साथ, अर्थात् यिज्रेली अहीनोअम, और नाबाल की स्त्री कर्मेली अबीगैल के साथ रहा।

4 जब शाऊल को यह समाचार मिला कि दाऊद गत को भाग गया है, तब उसने उसे फिर कभी न ढूँढ़ा।

5 दाऊद ने आकीश से कहा, “यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो, तो देश की किसी बस्ती में मुझे स्थान दिला दे जहाँ मैं रहूँ; तेरा दास तेरे साथ राजधानी में क्यों रहे?”

6 तब आकीश ने उसे उसी दिन सिकलग बस्ती दी; इस कारण से [illegible]* आज के दिन तक यहूदा के राजाओं का बना है।

7 पलिश्तियों के देश में रहते-रहते दाऊद को एक वर्ष चार महीने बीत गए।

8 और दाऊद ने अपने जनों समेत जाकर गशूरियों, गिर्जियों, और अमालेकियों पर चढ़ाई की; ये जातियाँ तो प्राचीनकाल से उस देश में रहती थीं जो शूर के मार्ग में मिस्र देश तक है।

9 दाऊद ने उस देश को नष्ट किया, और स्त्री पुरुष किसी को जीवित न छोड़ा, और भेड़-बकरी, गाय-बैल, गदहे, ऊँट, और वस्त्र लेकर लौटा, और आकीश के पास गया।

---

* **27:6** [illegible]: यहूदा के गोत्र में सम्भवतः शमौन के नगरों में से एक (पार्श्व टिप्पणी देखें) परन्तु पलिश्तियों ने उसे अपने अधिकार में ले लिया था।

10 आकीश ने पूछा, “आज तुम ने चढ़ाई तो नहीं की?” दाऊद
ने कहा, “हाँ, यहूदा [illegible]† और केनियों की दक्षिण
दिशा में।”
11 दाऊद ने स्त्री पुरुष किसी को जीवित न छोड़ा कि उन्हें
गत में पहुँचाए; उसने सोचा था, “ऐसा न हो कि वे हमारा काम
बताकर यह कहें, कि दाऊद ने ऐसा-ऐसा किया है। वरन् जब से
वह पलिश्तियों के देश में रहता है, तब से उसका काम ऐसा ही
है।”
12 तब आकीश ने दाऊद की बात सच मानकर कहा, “यह अपने
इस्राएली लोगों की दृष्टि में अति घृणित हुआ है; इसलिए यह
सदा के लिये मेरा दास बना रहेगा।”

28

1 उन दिनों में पलिश्तियों ने इस्राएल से लड़ने के लिये अपनी
सेना इकट्ठी की तब आकीश ने दाऊद से कहा, “निश्चय जान कि
तुझे अपने जवानों समेत मेरे साथ सेना में जाना होगा।”
2 दाऊद ने आकीश से कहा, “इस कारण तू जान लेगा कि तेरा
दास क्या करेगा।” आकीश ने दाऊद से कहा, “इस कारण मैं तुझे
अपने सिर का रक्षक सदा के लिये ठहराऊँगा।”

[illegible]

3 शमूएल तो मर गया था, और समस्त इस्राएलियों ने उसके
विषय छाती पीटी, और उसको उसके नगर रामाह में मिट्टी दी
थी। और शाऊल ने ओझों और भूत-सिद्धि करनेवालों को देश से
निकाल दिया था।
4 जब पलिश्ती इकट्ठे हुए और शूनेम में छावनी डाली, तो
शाऊल ने सब इस्राएलियों को इकट्ठा किया, और उन्होंने गिलबो
में छावनी डाली।

† **27:10** [illegible]: हेस्रोन पुत्र यरहमेल के वंशज। यहूदा का पुत्र पेरेस, पेरेस का पुत्र हेस्रोन। अतः यहूदा के दक्षिण का भाग:

5 पलिश्तियों की सेना को देखकर शाऊल डर गया, और उसका
मन अत्यन्त भयभीत हो काँप उठा।
6 और जब *□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□**, तब यहोवा ने न
तो स्वप्न के द्वारा उसे उत्तर दिया, और न ऊरीम के द्वारा, और न
भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा।
7 तब शाऊल ने अपने कर्मचारियों से कहा, "मेरे लिये किसी
भूत-सिद्धि करनेवाली को ढूँढ़ो, कि मैं उसके पास जाकर उससे
पूछूँ।" उसके कर्मचारियों ने उससे कहा, "एनदोर में एक भूत-
सिद्धि करनेवाली रहती है।"
8 तब शाऊल ने अपना भेष बदला, और दूसरे कपड़े पहनकर,
दो मनुष्य संग लेकर, रातों-रात चलकर उस स्त्री के पास गया;
और कहा, "अपने सिद्धि भूत से मेरे लिये भावी कहलवा, और
जिसका नाम मैं लूँगा उसे बुलवा दे।"
9 स्त्री ने उससे कहा, "तू जानता है कि शाऊल ने क्या किया है,
कि उसने ओझों और भूत-सिद्धि करनेवालों का देश से नाश किया
है। फिर तू मेरे प्राण के लिये क्यों फंदा लगाता है कि मुझे मरवा
डाले।"
10 शाऊल ने यहोवा की शपथ खाकर उससे कहा, "यहोवा के
जीवन की शपथ, इस बात के कारण तुझे दण्ड न मिलेगा।"
11 तब स्त्री ने पूछा, "मैं तेरे लिये किसको बुलाऊँ?" उसने
कहा, "शमूएल को मेरे लिये बुला।"
12 जब स्त्री ने शमूएल को देखा, तब ऊँचे शब्द से चिल्लाई;
और शाऊल से कहा, "तूने मुझे क्यों धोखा दिया? तू तो शाऊल
है।"
13 राजा ने उससे कहा, "मत डर; तुझे क्या देख पड़ता है?"
स्त्री ने शाऊल से कहा, "मुझे एक देवता पृथ्वी में से चढ़ता हुआ

* **28:6** *□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□*: स्वप्न द्वारा शाऊल को यहोवा ने कोई उत्तर नहीं दिया जो उसके लिये तात्कालिक प्रका. था- एपोद पहने हुए प्रधान पुरोहित का उत्तर या भविष्यद्वक्ता का उत्तर।

दिखाई पड़ता है।”
14 उसने उससे पूछा, “उसका कैसा रूप है?” उसने कहा, “एक
बूढ़ा पुरुष बागा ओढ़े हुए चढ़ा आता है।” तब शाऊल ने निश्चय
जानकर कि वह शमूएल है, औंधे मुँह भूमि पर गिरकर दण्डवत्
किया।
15 शमूएल ने शाऊल से पूछा, “तूने मुझे ऊपर बुलवाकर क्यों
सताया है?” शाऊल ने कहा, “मैं बड़े संकट में पड़ा हूँ; क्योंकि
पलिश्ती मेरे साथ लड़ रहे हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया,
और अब मुझे न तो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उत्तर देता है, और
न स्वप्नों के; इसलिए मैंने तुझे बुलाया कि तू मुझे जता दे कि मैं
क्या करूँ।”
16 शमूएल ने कहा, “जब यहोवा तुझे छोड़कर तेरा शत्रु बन
गया, तब तू मुझसे क्यों पूछता है?
17 यहोवा ने तो जैसे मुझसे कहलवाया था वैसा ही उसने
व्यवहार किया है; अर्थात् उसने तेरे हाथ से राज्य छीनकर तेरे
पड़ोसी दाऊद को दे दिया है।
18 तूने जो यहोवा की बात न मानी, और न अमालेकियों को
उसके भड़के हुए कोप के अनुसार दण्ड दिया था, इस कारण यहोवा
ने तुझ से आज ऐसा बर्ताव किया।
19 फिर [illegible]
[illegible]†; और तू अपने
बेटों समेत कल मेरे साथ होगा; और इस्राएली सेना को भी
यहोवा पलिश्तियों के हाथ में कर देगा।”
20 तब शाऊल तुरन्त मुँह के बल भूमि पर गिर पड़ा, और
शमूएल की बातों के कारण अत्यन्त डर गया; उसने पूरे दिन और

† **28:19** [illegible]: शाऊल अपने घराने का ही नहीं सम्पूर्ण इस्राएल का विनाश लाया था। शाऊल और योनातान की मृत्यु के बाद उनका शिविर विजेताओं द्वारा लूटा जाएगा।

रात भोजन न किया था, इससे उसमें बल कुछ भी न रहा।
21 तब वह स्त्री शाऊल के पास गई, और उसको अति व्याकुल
देखकर उससे कहा, “सुन, तेरी दासी ने तो तेरी बात मानी; और
मैंने अपने प्राण पर खेलकर तेरे वचनों को सुन लिया जो तूने
मुझसे कहा।
22 तो अब तू भी अपनी दासी की बात मान; और मैं तेरे सामने
एक टुकड़ा रोटी रखूँ; तू उसे खा, कि जब तू अपना मार्ग ले तब
तुझे बल आ जाए।”
23 उसने इन्कार करके कहा, “मैं न खाऊँगा।” परन्तु उसके
सेवकों और स्त्री ने मिलकर यहाँ तक उसे दबाया कि वह उनकी
बात मानकर, भूमि पर से उठकर खाट पर बैठ गया।
24 स्त्री के घर में तो एक तैयार किया हुआ बछड़ा था, उसने
फुर्ती करके उसे मारा, फिर आटा लेकर गूँधा, और अख़मीरी रोटी
बनाकर
25 शाऊल और उसके सेवकों के आगे लाई; और उन्होंने खाया।
तब वे उठकर उसी रात चले गए।

29

[illegible]

1 पलिश्तियों ने अपनी समस्त सेना को अपेक में इकट्ठा किया;
और इस्राएली *[illegible]*[*] के पास डेरे
डाले हुए थे।
2 तब पलिश्तियों के सरदार अपने-अपने सैंकड़ों और हजारों
समेत आगे बढ़ गए, और सेना के पीछे-पीछे आकीश के साथ
दाऊद भी अपने जनों समेत बढ़ गया।
3 तब पलिश्ती हाकिमों ने पूछा, “इन इब्रियों का यहाँ क्या
काम है?” आकीश ने पलिश्ती सरदारों से कहा, “क्या वह

[*] **29:1** *[illegible]:* इस्राएल और पलिश्तियों में युद्ध का कारण व्यक्त करना असंभव है। पलिश्तियों ने यिज्रेल के मैदान तक इस्राएल को जीत लिया था।

इस्राएल के राजा शाऊल का कर्मचारी दाऊद नहीं है, जो क्या
जाने कितने दिनों से वरन् वर्षों से मेरे साथ रहता है, और जब से
वह भाग आया, तब से आज तक मैंने उसमें कोई दोष नहीं पाया।”
4 तब पलिश्ती हाकिम उससे क्रोधित हुए; और उससे कहा,
“उस पुरुष को लौटा दे, कि वह उस स्थान पर जाए जो तूने उसके
लिये ठहराया है; वह हमारे संग लड़ाई में न आने पाएगा, कहीं
ऐसा न हो कि वह लड़ाई में हमारा विरोधी बन जाए। फिर वह
अपने स्वामी से किस रीति से मेल करे? क्या लोगों के सिर
कटवाकर न करेगा?
5 क्या यह वही दाऊद नहीं है, जिसके विषय में लोग नाचते
और गाते हुए एक दूसरे से कहते थे,

‘शाऊल ने हजारों को,

पर दाऊद ने लाखों को मारा है?’ ”

6 तब आकीश ने दाऊद को बुलाकर उससे कहा, “यहोवा के
जीवन की शपथ तू तो सीधा है, और सेना में तेरा मेरे संग आना-
जाना भी मुझे भावता है; क्योंकि जब से तू मेरे पास आया तब
से लेकर आज तक मैंने तो तुझ में कोई बुराई नहीं पाई। तो भी
सरदार लोग तुझे नहीं चाहते।
7 इसलिए अब तू कुशल से लौट जा; ऐसा न हो कि पलिश्ती
सरदार तुझ से अप्रसन्न हों।”
8 दाऊद ने आकीश से कहा, “मैंने क्या किया है? और जब से
मैं तेरे सामने आया तब से आज तक तूने अपने दास में क्या पाया
है कि मैं अपने प्रभु राजा के शत्रुओं से लड़ने न पाऊँ?”
9 आकीश ने दाऊद को उत्तर देकर कहा, “हाँ, यह मुझे मालूम
है, तू मेरी दृष्टि में तो परमेश्वर के दूत के समान अच्छा लगता
है; तो भी पलिश्ती हाकिमों ने कहा है, ‘वह हमारे संग लड़ाई में
न जाने पाएगा।’
10 इसलिए अब तू अपने प्रभु के सेवकों को लेकर जो तेरे साथ

आए हैं सवेरे को तड़के उठना; और तुम तड़के उठकर उजियाला
होते ही चले जाना।”
11 इसलिए दाऊद अपने जनों समेत तड़के उठकर पलिश्तियों
के देश को लौट गया। और पलिश्ती यिज्रेल को चढ़ गए।

30

[illegible]

1 तीसरे दिन जब दाऊद अपने जनों समेत सिकलग पहुँचा, तब
उन्होंने क्या देखा, कि अमालेकियों ने दक्षिण देश और सिकलग
पर चढ़ाई की। और सिकलग को मार के फूँक दिया,
2 और उसमें की स्त्री आदि छोटे बड़े जितने थे, सब को बन्दी
बनाकर ले गए; उन्होंने किसी को मार तो नहीं डाला, परन्तु सभी
को लेकर अपना मार्ग लिया।
3 इसलिए जब दाऊद अपने जनों समेत उस नगर में पहुँचा,
तब नगर तो जला पड़ा था, और स्त्रियाँ और बेटे-बेटियाँ बँधुआई
में चली गई थीं।
4 तब दाऊद और वे लोग जो उसके साथ थे चिल्लाकर इतना
रोए, कि फिर उनमें रोने की शक्ति न रही।
5 दाऊद की दोनों स्त्रियाँ, यिज्रेली अहीनोअम, और कर्मेली
नाबाल की स्त्री अबीगैल, बन्दी बना ली गई थीं।
6 और दाऊद बड़े संकट में पड़ा; क्योंकि लोग अपने बेटे-बेटियों
के कारण बहुत शोकित होकर उस पर पथरवाह करने की चर्चा कर
रहे थे। परन्तु दाऊद ने अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण करके
हियाव बाँधा।
7 तब दाऊद ने अहीमेलेक के पुत्र *[illegible]** याजक से
कहा, “एपोद को मेरे पास ला।” तब एब्यातार एपोद को दाऊद
के पास ले आया।

* **30:7** *[illegible]*: एब्यातार दाऊद के साथ बना रहा। जब से उसने कीला में दाऊद का साथ पकड़ा था। (1शमू. 23:6) एपोद द्वारा यहोवा से पूछना

8 और दाऊद ने यहोवा से पूछा, “क्या मैं इस दल का पीछा
करूँ? क्या उसको जा पकड़ूँगा?” उसने उससे कहा, “पीछा कर;
क्योंकि तू निश्चय उसको पकड़ेगा, और निःसन्देह सब कुछ छुड़ा
लाएगा;”
9 तब दाऊद अपने छः सौ साथी जनों को लेकर बसोर नामक
नदी तक पहुँचा; वहाँ कुछ लोग छोड़े जाकर रह गए।
10 दाऊद तो चार सौ पुरुषों समेत पीछा किए चला गया; परन्तु
दो सौ जो ऐसे थक गए थे, कि बसोर नदी के पार न जा सके वहीं
रहे।
11 उनको एक मिस्री पुरुष मैदान में मिला, उन्होंने उसे दाऊद
के पास ले जाकर रोटी दी; और उसने उसे खाया, तब उसे पानी
पिलाया,
12 फिर उन्होंने उसको अंजीर की टिकिया का एक टुकड़ा और
दो गुच्छे किशमिश दिए। और जब उसने खाया, तब उसके जी में
जी आया; उसने तीन दिन और तीन रात से न तो रोटी खाई थी
और न पानी पिया था।
13 तब दाऊद ने उससे पूछा, “तू किसका जन है? और कहाँ का
है?” उसने कहा, “मैं तो मिस्री जवान और एक अमालेकी मनुष्य
का दास हूँ; और तीन दिन हुए कि मैं बीमार पड़ा, और मेरा स्वामी
मुझे छोड़ गया।
14 हम लोगों ने करेतियों की दक्षिण दिशा में, और यहूदा के
देश में, और कालेब की दक्षिण दिशा में चढ़ाई की; और सिकलग
को आग लगाकर फूँक दिया था।”
15 दाऊद ने उससे पूछा, “क्या तू मुझे उस दल के पास पहुँचा
देगा?” उसने कहा, “मुझसे परमेश्वर की यह शपथ खा, कि तू
मुझे न तो प्राण से मारेगा, और न मेरे स्वामी के हाथ कर देगा,
तब मैं तुझे उस दल के पास पहुँचा दूँगा।”
16 जब उसने उसे पहुँचाया, तब देखने में आया कि वे सब भूमि

पर छिटके हुए खाते पीते, और उस बड़ी लूट के कारण, जो वे
पलिश्तियों के देश और यहूदा देश से लाए थे, नाच रहे हैं।
17 इसलिए दाऊद उन्हें रात के पहले पहर से लेकर दूसरे दिन
की साँझ तक मारता रहा; यहाँ तक कि चार सौ जवानों को छोड़,
जो ऊँटों पर चढ़कर भाग गए, उनमें से एक भी मनुष्य न बचा।
18 और जो कुछ अमालेकी ले गए थे वह सब दाऊद ने छुड़ाया;
और दाऊद ने अपनी दोनों स्त्रियों को भी छुड़ा लिया।
19 वरन् उनके क्या छोटे, क्या बड़े, क्या बेटे, क्या बेटियाँ, क्या
लूट का माल, सब कुछ जो अमालेकी ले गए थे, उसमें से कोई
वस्तु न रही जो उनको न मिली हो; क्योंकि दाऊद सब का सब
लौटा लाया।
20 और दाऊद ने सब भेड़-बकरियाँ, और गाय-बैल भी लूट
लिए; और इन्हें लोग यह कहते हुए अपने जानवरों के आगे हाँकते
गए, कि यह दाऊद की लूट है।
21 तब दाऊद उन दो सौ पुरुषों के पास आया, जो ऐसे थक गए
थे कि दाऊद के पीछे-पीछे न जा सके थे, और बसोर नाले के पास
छोड़ दिए गए थे; और वे दाऊद से और उसके संग के लोगों से
मिलने को चले; और दाऊद ने उनके पास पहुँचकर उनका कुशल
क्षेम पूछा।
22 तब उन लोगों में से जो दाऊद के संग गए थे सब दुष्ट और
ओछे लोगों ने कहा, "ये लोग हमारे साथ नहीं चले थे, इस कारण
हम उन्हें अपने छुड़ाए हुए लूट के माल में से कुछ न देंगे, केवल
एक-एक मनुष्य को उसकी स्त्री और बाल-बच्चे देंगे, कि वे उन्हें
लेकर चले जाएँ।"
23 परन्तु दाऊद ने कहा, "हे मेरे भाइयों, तुम उस माल के साथ
ऐसा न करने पाओगे जिसे यहोवा ने हमें दिया है; और उसने
हमारी रक्षा की, और उस दल को जिसने हमारे ऊपर चढ़ाई की
थी हमारे हाथ में कर दिया है।

24 और इस विषय में तुम्हारी कौन सुनेगा? लड़ाई में जानेवाले
का जैसा भाग हो, सामान के पास बैठे हुए का भी वैसा ही भाग
होगा; दोनों एक ही समान भाग पाएँगे।”
25 और दाऊद ने इस्राएलियों के लिये ऐसी ही विधि और नियम
ठहराया, और वह उस दिन से लेकर आगे को वरन् आज लों बना
है।
26 सिकलग में पहुँचकर दाऊद ने यहूदी पुरनियों के पास जो
उसके मित्र थे लूट के माल में से कुछ कुछ भेजा, और यह सन्देश
भेजा, “यहोवा के शत्रुओं से ली हुई लूट में से तुम्हारे लिये यह
भेंट है।”
27 अर्थात् बेतेल के दक्षिण देश के रामोत, यत्तीर,
28 अरोएर, सिपमोत, एश्तमो,
29 राकाल, यरहमेलियों के नगरों, केनियों के नगरों,
30 होर्मा, कोराशान, अताक,
31 [illegible]† आदि जितने स्थानों में दाऊद अपने जनों
समेत फिरा करता था, उन सब के पुरनियों के पास उसने कुछ
कुछ भेजा।

31

[illegible]

1 पलिश्ती तो इस्राएलियों से लड़े; और इस्राएली पुरुष
पलिश्तियों के सामने से भागे, और गिलबो नाम पहाड़ पर मारे
गए।
2 और पलिश्ती शाऊल और उसके पुत्रों के पीछे लगे रहे;
और पलिश्तियों ने शाऊल के पुत्र योनातान, अबीनादाब, और
मल्कीशूअ को मार डाला।

† **30:31** [illegible]: हेब्रोन शरणनगर था (यहो.20:7) और कहातियों का एक नगर था (यहो.21:11) वह नगर यरूशलेम के दक्षिण में 20 मील की दूरी पर था।

3 शाऊल के साथ घमासान युद्ध हो रहा था, और धनुर्धारियों
ने उसे पा लिया, और वह उनके कारण अत्यन्त व्याकुल हो गया।
4 तब शाऊल ने अपने हथियार ढोनेवाले से कहा, "अपनी
तलवार खींचकर मुझे भोंक दे, ऐसा न हो कि वे खतनारहित लोग
आकर मुझे भोंक दें, और मेरा ठट्ठा करें।" परन्तु उसके हथियार
ढोनेवाले ने अत्यन्त भय खाकर ऐसा करने से इन्कार किया। तब
शाऊल अपनी तलवार खड़ी करके उस पर गिर पड़ा।
5 यह देखकर कि शाऊल मर गया, उसका हथियार ढोनेवाला
भी अपनी तलवार पर आप गिरकर उसके साथ मर गया।
6 अतः शाऊल, और उसके तीनों पुत्र, और उसका हथियार
ढोनेवाला, और उसके समस्त जन उसी दिन एक संग मर गए।
7 यह देखकर कि इस्राएली पुरुष भाग गए, और शाऊल और
उसके पुत्र मर गए, उस तराई की दूसरी ओर वाले और यरदन
के पार रहनेवाले भी इस्राएली मनुष्य अपने-अपने नगरों को
छोड़कर भाग गए; और पलिश्ती आकर उनमें रहने लगे।

8 दूसरे दिन जब पलिश्ती मारे हुओं के माल को लूटने आए,
तब उनको शाऊल और उसके तीनों पुत्र गिलबो पहाड़ पर पड़े हुए
मिले।
9 तब उन्होंने शाऊल का सिर काटा, और हथियार लूट लिए,
और पलिश्तियों के देश के सब स्थानों में दूतों को इसलिए भेजा,
कि उनके देवालयों और साधारण लोगों में यह शुभ समाचार देते
जाएँ।
10 तब उन्होंने उसके हथियार तो अश्तोरेत नामक देवियों के
मन्दिर में रखे, और उसके शव को बेतशान की शहरपनाह में जड़
दिया।
11 जब गिलादवाले याबेश के निवासियों ने सुना कि
पलिश्तियों ने शाऊल से क्या-क्या किया है,
12 तब सब शूरवीर चले, और रातों-रात जाकर शाऊल और
उसके पुत्रों के शव बेतशान की शहरपनाह पर से याबेश में ले

आए, और वहीं *[illegible]*[*]
13 तब उन्होंने उनकी हड्डियाँ लेकर याबेश के झाऊ के पेड़ के
नीचे गाड़ दीं, और *[illegible]*[†]।

---

* **31:12** *[illegible]*: इब्रानियों में शव को जलाना अन्तिम संस्कार विधि नहीं थी परन्तु उन सिर कटे शवों को छिपाने और अतिरिक्त भावी अपमान से बचाने की पवित्र इच्छा से याबेश के पुरुषों ने उनके शव जला दिए। † **31:13** *[illegible]*: शाऊल यद्यपि एक पतित मनुष्य था, उन्होंने उसे पूर्ण सम्मान प्रदान किया।

इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) हिंदी - 2019
The Indian Revised Version Holy Bible in the Hindi language of India

copyright © 2017, 2018, 2019 Bridge Connectivity Solutions

Language: मानक हिन्दी (Hindi)

Translation by: Bridge Connectivity Solutions

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.

You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

- You include the above copyright and source information.
- If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.
- If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-04-11

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 11 Apr 2023

38a51cad-1000-51f5-b603-a89990bf4b77